जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

बीकानेर

Rashtradoot

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 45 संख्याः 284 प्रभात बीकानेर, सोमवार 6 मई, 2024 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

सैंट्रल सिंगापुर के हिंडहो नेचर पार्क की सुबह चिड़ियों के चहचहाने से गुंजायमान रहती है। लेकिन एक स्वर, स्पष्ट रुप से अलग सुनाई देता है, स्ट्रॉहैडेड बुलबुल की लम्बी, गड़गड़ाहट भरी ''कॉल''। सिंगापुर में इस प्रजाति का अध्ययन करने वाले दो लोगों में से एक, संरक्षणविद्, हो हुआ चिऊ कहते हैं, ''जब भी मैं इसका गूंजने वाला चहचहाता हुआ गाना सुनता हूँ तो लगता है कि, वन जीवन्त हो उठा है।'' इस चिड़िया की मधुर आवाज़ ही इसकी हानि का कारण बन गयी है। एशिया के साँग बर्ड्स के व्यापार में, इस प्रजाति की सबसे अधिक मांग है। हर वर्ष, मनभावन स्वर वाली हजारों चिड़ियाँ दक्षिण -पूर्वी एशिया के जंगलों से पकड़ी जाती हैं, मनोरंजन के लिए घर में रखने और प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए। इस कारण जंगलों में इनकी आबादी तेजी से कम होती जा रही है। साँग बर्ड ट्रेड के कारण 40 से ज्यादा प्रजातियाँ भारी खतरे में हैं। बाज़ार में चिड़ियों की मांग को पूरा करने के लिए साउथ ईस्ट एशिया में स्ट्रॉ हैडेड बुलबुल की आबादी नष्ट हो गई है। इन्टरनेशनल यूनियन फॉर कंज़रवेशन ऑफ नेचर (आई.यू.सी.एन.) ने वर्तमान में इसे गंभीर रुप से संकटग्रस्त श्रेणी में रखा है। ऐसा मानना है कि, यह प्रजाति थाइलैंड में और संभवतया म्यांमार व इंडोनेशिया के जावा और सुमात्रा द्वीपों में पहले से ही विलुप्त हो चुकी है। मलेशिया प्रायद्वीप और इंडोनेशिया के बोरनिओ में भी इनकी आबादी तेजी से घट रही है। सिंगापुर ही एकमात्र शहर-देश है जिसने इस गिरावट के दौर को रोका है। यह अत्यधिक शहरीकृत द्वीप -राष्ट्र, इस प्रजाति के लिए अप्रत्याशित आश्रय के रुप में उभर कर आया है, जहां तीन दशकों के संरक्षण कार्यों के कारण, इस चिड़िया की आबादी धीरे-धीरे ही लेकन, लगातार बढ़ रही है। वर्ष 2020 में प्रकाशित एक न्यूनतम अनुमान के अनुसार, सिंगापुर में लगभग 600 स्ट्रॉ हैडेड बुलबुल हैं। स्ट्रॉ हैडेड बुलबुल को बचाने का प्रयास, 30 वर्षों से पहले शुरु हुआ था। नॉन प्राफिट संगठन, ''नेचर सोसायटी सिंगापुर'' के बर्ड ग्रुप ने पूलाउ ऊबिन क्षेत्र और मुख्य द्वीप पर कुछ क्षेत्रों में इस प्रजाति को बचाने के अभियान का नेतृत्व किया था। चिड़ियों में रुचि रखने वाली, नेचर सोसायटी सिंगापुर की एक वालंटियर बैटी शॉ कहती हैं, ''पहले हम स्ट्रॉ हैडेड बुलबुल को केवल पूलाउ ऊबिन में या सिंगापुर के सैन्ट्रल कैचमैन्ट एरिया जैसे कुछ ही क्षेत्रों में देख सकते थे लेकिन अब हमें इनकी मधुर आवाज़ वहां भी सुनाई देती है जहाँ पहले आशा नहीं करते थे।

अयोध्या में प्रधानमंत्री मोदी का मेगा रोड शो, जमकर भीड़ उमड़ी

अयोध्या पहुंचकर प्रधानमंत्री मोदी ने राम मंदिर में भगवान श्री रामलला का दर्शन एवं पूजन किया और दण्डवत प्रणाम कर आशीर्वाद मांगा

- **रोड शो के लिए प्र.मंत्री मोदी का रथ जैसे ही आगे बढ़ा नारों से वातावरण गूंज उठा। जय श्री राम, हर हर मोदी-घर घर मोदी, फिर से मोदी सरकार-अबकी चार सौ पार जैसे नारों के बीच उमड़ी भीड़ ने मोदी पर फूलों की बारिश कर दी।**
- **प्रधानमंत्री मोदी ने अयोध्या में 2 किलोमीटर लम्बा रोड शो किया। मोदी के रथ पर यू.पी. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी मौजूद थे।**

अयोध्या, 5 मई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अयोध्या में भगवान श्री रामलला का दर्शन पूजन करने के बाद सुग्रीव किला से रोड शो की शुरुआत की। प्रधानमंत्री मोदी उत्तर प्रदेश में इटावा और धौरहरा की चुनावी जनसभाओं को संबोधित करने के बाद शाम को अयोध्या हवाई अड्डे पहुंचे जहां से सड़क मार्ग से भगवान श्रीराम के मंदिर पहुंचे।

मोदी ने अयोध्या से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार व सांसद लल्लू सिंह के समर्थन में फूलों और बैनर से सजे एक खुले वाहन (रथ) पर सवार होकर रोड शो शुरू किया और वाहन पर उनके साथ प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और लल्लू सिंह मौजूद थे। प्रधानमंत्री मोदी के रोड शो के दौरान भारी संख्या में लोगों का जमावड़ा देखा गया। इस दौरान लगातार 400 पार के नारे लग रहे थे।

प्रधानमंत्री मोदी राम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य द्वार के पास सुग्रीव किला से रथ पर सवार हुए। प्रधानमंत्री के अभिनंदन व स्वागत के लिए राम पथ के दोनों तरफ जनता काफी पहले से उनका इंतजार कर रही थी। इस दौरान उनकी सुरक्षा को लेकर व्यापक इंतजाम किये गये थे। भाजपा के एक नेता ने बताया कि, सुग्रीव किला से लता मंगेशकर चौक तक करीब दो किलोमीटर की दूरी के बीच मोदी के रोड शो के लिए 75 ब्लॉक बनाये गये हैं, जहां हर वर्ग के लोग प्रधानमंत्री के स्वागत के लिए मौजूद हैं।

इसके पहले मोदी ने राम मंदिर में भगवान श्री रामलला का दर्शन पूजन किया और पूरी तरह लेटकर आशीर्वाद मांगा। मोदी मंदिर में करीब 15 मिनट रहे और इस दौरान मंत्रोच्चार के बीच उन्होंने पूजन और आरती भी की। रोड शो के लिए मोदी का रथ जैसे ही आगे बढ़ा नारों से वातावरण गूंज उठा। जय श्री राम, हर हर मोदी-घर घर मोदी, फिर से मोदी सरकार-अबकी बार चार सौ पार जैसे नारों के बीच उमड़ी भीड़ ने मोदी पर फूलों की बारिश कर दी।

प्रधानमंत्री के स्वागत में जगह जगह सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये थे। बाल कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी। साधु संत भी सड़क के किनारे खड़े होकर मोदी के स्वागत में उत्साहित दिखे। मोदी के स्वागत में बच्चे, बड़े और महिलाएं भी मौजूद रहीं। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में इस वर्ष 22 जनवरी को अयोध्या में भगवान श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की गयी।

तीसरे चरण का प्रचार खत्म

नयी दिल्ली, 5 मई (वार्ता)। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के मतदान के लिए चुनाव प्रचार का शोर रविवार की शाम पांच बजे थम गया।

चुनाव आयोग तीसरे चरण की वोटिंग को लेकर तैयारियों को अंतिम रूप दे रहा है। चुनाव के वोटों की गिनती चार जून को की जाएगी।

तीसरे चरण के चुनाव में गृह मंत्री अमित शाह, ज्योतिरादित्य सिंधिया,

- **तीसरे चरण के चुनाव में गृह मंत्री अमित शाह, ज्योतिरादित्य सिंधिया, शिवराज सिंह चौहान, दिग्विजय सिंह, डिंपल यादव व सुप्रिया सुले समेत कई दिग्गजों की साख दांव पर होगी।**

शिवराज सिंह चौहान, दिग्विजय सिंह, डिंपल यादव, सुप्रिया सुले समेत कई दिग्गजों का फैसला होगा।

अब तक देश में लोकसभा के पहले चरण में 19 अप्रैल को 21 राज्यों की 102 सीटों पर मतदान हुआ। फिर 26 अप्रैल को दूसरे चरण में 88 सीटों पर मतदान हुआ। जिसके बाद अब सात मई को तीसरे चरण के मतदान होंगे। जिसके बाद 13 मई को चौथे, 20 मई को पांचवें, 25 मई को छठे, एक जून को सातवें चरण के मतदान होंगे। चार जून को वोटों की गिनती की जाएगी।

तीसरे चरण के लिए सभी प्रत्याशियों और राजनीतिक दलों ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अखिलेश के रोड शो में अभद्र नारे लगे, महराणा प्रताप की मूर्ति पर चढ़े कार्यकर्ता

महाराणा प्रताप की मूर्ति पर चढ़ने को लेकर पुलिस ने सपा समर्थकों और नेताओं पर एफ.आई.आर. दर्ज की

- **गौरतलब है कि, इस मामले का एक वीडियो भी सामने आया है जिसमें कुछ लोग अभद्र नारे लगाते और गालियां देते दिख रहे हैं। इस वीडियो में सपा समर्थकों के हाथ में समाजवादी पार्टी का झण्डा भी दिख रहा है, जो महाराणा प्रताप की मूर्ति के ऊपर चढ़े हुए हैं।**

मैनपुरी, 5 मई। लोकसभा चुनाव 2024 के मद्देनज़र दो चरणों का मतदान समाप्त हो चुका है। तीसरे चरण के लिए 7 मई को मतदान कराया जाएगा। वहीं 5 जून को चुनाव प्रचार थम जाएगा। इसी कड़ी में समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव चुनाव प्रचार करने के लिए मैनपुरी पहुंचे। यहां उन्होंने रोड शो किया। अखिलेश यादव के रोड शो में शामिल समाजवादी पार्टी के समर्थकों और नेताओं ने इस दौरान अभद्र नारे लगाए और महाराणा प्रताप की मूर्ति पर चढ़ गए। महाराणा प्रताप की मूर्ति पर चढ़ने को लेकर पुलिस ने सपा समर्थकों और नेताओं पर एफ.आई.आर. दर्ज की है।

बता दें कि बीते दिनों उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी मैनपुरी पहुंचे थे। यहां उन्होंने रोड शो किया और इसकी समाप्ति के बाद वह महाराणा प्रताप की मूर्ति के पास पहुंचे और उन्होंने महाराणा प्रताप को पुष्पांजलि अर्पित की थी। इसके दो दिन बाद ही मैनपुरी में इस तरह की घटना देखने को मिली है। बता दें कि, इसका वीडियो भी सामने आया है जिसमें कुछ लोग अभद्र नारे लगाते और गालिया देते दिख रहे हैं। बता दें कि इस वीडियो में सपा समर्थकों के हाथ में समाजवादी पार्टी का झंडा भी दिख रहा है, जो महाराणा प्रताप की मूर्ति के ऊपर चढ़े हुए हैं।

बता दें कि महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर समाजवादी पार्टी के समर्थकों द्वारा चढ़े जाने के बाद सूबे में राजनीति तेज हो गई है। मैनपुरी में महाराणा प्रताप की प्रतिमा को क्षति पहुंचाये जाने के विरोध में आक्रोशित जनता सड़क पर उतर आई। कायस्थ समाज, वैश्य समाज, सविता समाज, सर्व समाज, लोधी समाज, शाक्य समाज, क्षत्रिय समाज के साथ अन्य सामाजिक संगठन के हजारों लोग शनिवार रात से ही प्रताप चौक पर धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। बता दें कि, सपा समर्थक द्वारा की गई हरकत के बाद पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है।

बता दें कि दो दिन पहले ही मुलायम सिंह यादव के गढ़ मैनपुरी में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चुनावी रैली की थी। भाजपा ने लोकसभा चुनाव के मद्देनजर यहां से जसवीर सिंह को अपना उम्मीदवार बनाया है। इस दौरान मुख्यमंत्री योगी ने लोगों से अपील की कि, वे जसवीर सिंह को वोट देकर जिताने का काम करें। बता दें कि, मैनपुरी में योगी आदित्यनाथ के स्वागत और रोड शो के दौरान कई बुलडोज़र एक साथ देखे गए, जिनकी रैली निकाली गई। इसका वीडियो जब सोशल मीडिया पर आया तो इसे देखकर हर कोई हैरान था। बता दें कि, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बुलडोज़र बाबा के नाम से भी जाना जाता है।

भाजपा ने महाराणा प्रताप के अपमान का आरोप लगाते हुए सपा को आड़े हाथ लिया, तो सपा ने इसके लिए भाजपा की जवाबदेह ठहरा दिया। पूरे मामले में पुलिस की सक्रियता के चलते दो एफ.आई.आर. भी सौ से अधिक अज्ञात लोगों पर दर्ज कर ली गईं। उधर देर रात दन्नाहार के गांव जसवंतपुर से पुलिस ने तीन युवकों को इस मामले में गिरफ्तार करके जेल भेज दिया है।

शनिवार की देर रात सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने प्रत्याशी डिंपल यादव के साथ करहल चौराहे पर रोड शो खत्म किया और सैफई के लिए रवाना हो गए। रात करीब साढ़े 11 बजे एक वीडियो वायरल हुआ जिसमें कुछ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पाली से तीसरी बार चुनाव जीत सकते हैं भाजपा के पी.पी. चौधरी

गौरतलब है कि पाली से आज तक कोई भी सांसद तीन बार नहीं जीता है

- **पी.पी. चौधरी को प्रधानमंत्री मोदी की नज़दीकी के कारण तीसरी बार फिर पाली से टिकट मिला है। वे पाली में इतिहास रचने के करीब हैं।**
- **कांग्रेस ने यहां से महिला बाल विकास आयोग की अध्यक्ष रही संगीता बेनीवाल को टिकट दिया है उन्हें गहलोत का करीबी माना जाता है।**
- **संगीता बेनीवाल के प्रचार में कांग्रेस का कोई बड़ा नेता नहीं आया, यही नहीं टिकट घोषणा में देरी होने के कारण संगीता खुद भी सब जगह नहीं जा पाईं।**

पाली, 5 मई (नि.सं.)। पाली लोकसभा क्षेत्र में मतदान के दिन से ही संभावित नतीजों के बारे में चर्चा का बाजार गर्म है , हालांकि इस बार जिले में कोई लहर नहीं दिखी, चुनाव प्रचार, होर्डिंग बाजी, भोंपू प्रचार, झंडिया लगाना और आम सभा जैसा कुछ भी नहीं रहा। लोकसभा चुनाव का कोई खास माहौल नहीं दिखा।

भाजपा के प्रत्याशी पी.पी. चौधरी की नामांकन सभा में गजेंद्र सिंह शेखावत, राज्यवर्धन सिंह राठौड़, सतीश पूनिया मौजूद रहे तो कांग्रेस की प्रत्याशी संगीता बेनीवाल की नामांकन रैली में अशोक गहलोत, गोविंद सिंह डोटासरा मौजूद रहे। इसके बाद पाली शहर में कोई बड़ी मीटिंग नहीं हुई, पूरा चुनाव भोपालगढ़, ओसियां पर फोकस रहा। जहां भाजपा से अमित शाह, मुख्यमंत्री भजनलाल सहित कई नेता पहुंचे। वहीं कांग्रेस के अशोक गहलोत ने भोपालगढ़ और बाली में मीटिंग ली।

भाजपा से पी.पी. चौधरी को प्रधानमंत्री मोदी के नजदीक होने के कारण तीसरी बार टिकट मिला। उन्होंने 2014 में कांग्रेस की मुन्नी देवी गोदारा को साढ़े तीन लाख वोट से और 2019 में कांग्रेस के बद्री जाखड़ को 4.50 लाख वोट से हराया था। जहां भाजपा को राम मंदिर, मोदी की गारंटी, राजस्थान सरकार की योजना का लाभ मिलने की उम्मीद है भाजपा को परंपरागत हर जाति के वोट मिले, वहीं कांग्रेस को अल्पसंख्यक और परंपरागत वोट मिले। कांग्रेस नेताओं का भी मानना है कि पार्टी अच्छी टक्कर देगी।

पाली जिले में आठ विधानसभा क्षेत्र पाली, बाली, सोजत, सुमेरपुर, भोपालगढ़, ओसिया, बिलाड़ा हैं। यहां कांग्रेस से संगीता बेनीवाल मैदान में हैं जिन्हें महिला बाल आयोग अध्यक्ष होने और अशोक गहलोत के नजदीक होने के कारण टिकट मिला। टिकट की देरी से घोषणा होने के कारण वे पूरे क्षेत्र में नहीं घूम सकी। कोई बड़ा नेता उनके साथ चुनाव प्रचार में भी नहीं रहा। पाली क्षेत्र नया था, जबकि भाजपा के प्रत्याशी को तीसरी बार टिकट मिलने के कारण लोकसभा क्षेत्र में कोई दिक्कत नहीं आई। यहां से सात सीटों पर भाजपा विधायक हैं जो कमान संभाले हुए थे, भाजपा का आई.टी. सेल मीडिया भी प्रभावी ढंग से काम कर रहा था।

कांग्रेस का कोई बड़ा कार्यक्रम नहीं हुआ। चुनाव के तीन दिन पहले भाजपा ने हिमाचल प्रदेश के मंडी की भाजपा प्रत्याशी फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत का रोड शो करवाया, जो काफी सफल रहा। मतदान के दिन अवश्य चुनावी माहौल देखा गया पर संतुलन भाजपा के पक्ष में दिखा सभी बूथ पर भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे, वहीं कुछ वॉर्ड को छोड़ कांग्रेस कार्यकर्ता नदारद रहे। इस प्रकार पाली लोकसभा क्षेत्र में भाजपा के प्रत्याशी चौधरी तीसरी बार जीत हासिल करेंगे, तो यह रिकॉर्ड बनेगा, पाली से लगातार कोई भी सांसद तीन बार नहीं जीता।

टिकट लौटाने के बाद कांग्रेस ने पुरी सीट पर उम्मीदवार बदला

नयी दिल्ली, 5 मई (वार्ता)। कांग्रेस ने ओडिशा की पुरी लोकसभा सीट की प्रत्याशी सुचित्रा मोहंती के टिकट वापस करने के बाद श्री जय नारायण पटनायक को नया उम्मीदवार बनाया है।

- **कांग्रेस ने ओडिशा की पुरी लोकसभा सीट की प्रत्याशी सुचित्रा मोहंती के टिकट वापस करने के बाद जय नारायण पटनायक को नया उम्मीदवार बनाया है।**

कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने यह जानकारी देते हुए बताया कि, पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सुश्री मोहंती की जगह पटनायक को इस सीट पर नया उम्मीदवार बनाया है। गौरतलब है कि, सुचित्रा मोहंती ने यह कहते हुए टिकट

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

करौली-धौलपुर लोकसभा सीट में कम मतदान के बावजूद भाजपा का पलड़ा भारी

बसपा के प्रत्याशी की मौजूदगी से भी कांग्रेस के वोट कटेंगे

- **कांग्रेस ने यहां से भजनलाल जाटव और भाजपा ने इंदू देवी जाटव को टिकट दिया है। हालांकि एस.सी. वर्ग कांग्रेस का वोट बैंक माना जाता है पर भाजपा व कांग्रेस दोनों दलों के प्रत्याशियों के एक ही वर्ग से होने के कारण एस.सी. वोट बंट गए जिससे कांग्रेस नुकसान में रहेगी।**
- **मतदान से तीन दिन पूर्व धौलपुर की कांग्रेस विधायक शोभारानी कुशवाहा के करीबी रिश्तदार भाजपा में शामिल हो गए इससे भी कांग्रेस को नुकसान होगा।**
- **बाड़ी के बसपा विधायक जसवंत गुर्जर, जो विधानसभा चुनाव से पूर्व भाजपा छोड़ बसपा में आए थे, ने भी मुख्यमंत्री भजनलाल की सभा में भाजपा को समर्थन दिया, इससे गुर्जर वोटों का रुझान भी भाजपा की तरफ हो गया।**

करौली/धौलपुर, 5 मई (नि.स.) करौली -धौलपुर लोकसभा सीट, जहां की आठ विधानसभा क्षेत्र करौली, हिंडौन, टोडाभीम, सपोटरा और धौलपुर, राजाखेड़ा, बाड़ी, बसेड़ी हैं, में इस बार 49.29 प्रतिशत मतदान हुआ है जो पिछले 2019 के चुनाव में हुए मतदान से करीब 5.13 प्रतिशत है। आम धारणा है कि कम मतदान से नतीजों में कांग्रेस को लाभ होता है लेकिन इस बार कुछ उल्टा होता देखा जा रहा है कि कम मतदान और कांग्रेस की कड़ी चुनौती के बाद भी करौली-धौलपुर सीट भाजपा के पक्ष में जाने के संकेत मिल रहे हैं।

इस सीट पर वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में 54.62 एवं वर्ष 2019 में 54.42 और इस बार 49.29 प्रतिशत मतदान रहा है जो पिछले दो बार के मतदान से कम रहा है। वर्ष 2014 एवं 2019 के मतदान में मोदी लहर का असर रहा। इस बार भी मोदी लहर का असर तो रहा, लेकिन 19 अप्रेल जिस दिन मतदान था, उस दिन बड़ा सावा होने के कारण मतदान प्रतिशत कम रहा। यहां भाजपा और कांग्रेस के बीच कड़ी टक्कर देखी गई।

इस बार करौली- धौलपुर लोकसभा सीट पर भाजपा और कांग्रेस दोनों ने ही एक ही जाति विशेष एस.सी. वर्ग के प्रत्याशी को टिकट दिया है। भाजपा ने इंदू देवी जाटव तो कांग्रेस ने संजय जाटव को मैदान में उतारा। यही वजह है कि दोनों पार्टियों में कांटे की टक्कर रही और अब जीत का अंतर बहुत कम रहने की उम्मीद भी है। महत्वपूर्ण बात यह है कि कम मतदान के बीच भी भाजपा की जीत के आसार है।

भाजपा और कांग्रेस प्रत्याशी एक ही जाति के हैं इसलिए एस.सी. वोट जिसे कांग्रेस का वोट बैंक माना जाता है, बंट गए इससे भाजपा को लाभ होने की संभावना है। इसके अलावा माली, कुशवाहा वोटर भी कांग्रेस के माने जाते हैं। लेकिन इस बार इस वर्ग के वोटर ने भी कांग्रेस से टूट कर भाजपा का रुख किया है। क्योंकि धौलपुर की विधायक शोभा रानी कुशवाहा के रिश्तेदारों ने मतदान से तीन दिन पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की चुनावी सभा में कांग्रेस छोड़ भाजपा की सदस्यता ले ली, जिसका भी भाजपा को फायदा मिलने की संभावना है।

इसके अलावा एक और कारण निकलकर सामने आया है कि बाड़ी विधानसभा क्षेत्र से बसपा विधायक व सपा के जसवंत गुर्जर भी धौलपुर में मतदान से पूर्व मुख्यमंत्री की चुनावी सभा में भाजपा के पक्ष में खुलकर सामने आ गए। जसवंत गुर्जर विधानसभा चुनाव से पूर्व भाजपा छोड़कर बसपा में गए थे। इससे गुर्जर मतदाताओं के भी भाजपा के पक्ष में मतदान करने की चर्चा रही। करौली जिले कि टोडाभीम और सपोटरा विधानसभा क्षेत्र मीणा बहुल क्षेत्र हैं और जिनको कांग्रेस का वोटर माना जाता है। लेकिन इस बार मतदान दिवस के अवसर पर बड़ा सावा होने के कारण मीणा वोटर का मतदान के प्रति कम रूझान देखा गया और इसीलिए सपोटरा और टोडाभीम का मतदान प्रतिशत कम रहा। फिर भी टोडाभीम और सपोटरा से कांग्रेस को कुछ बढ़त मिल सकती है।

करौली-धौलपुर सीट पर बसपा प्रत्याशी भी मैदान में है, इससे कांग्रेस को सीधे तौर पर नुकसान पहुंचा है। वर्ष 2014 व 2019 में लगातार दो बार यहां से भाजपा के डॉ. मनोज राजौरिया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

किसानों ने दिल्ली-कटरा रेलमार्ग जाम किया

जम्मू, 5 मई (वार्ता)। पंजाब में शंभू सीमा पर चल रहे किसान आंदोलन के मद्देनज़र दिल्ली और कटरा के बीच चार ट्रेनें सात मई तक रद्द कर दी गयी हैं और कई अन्य ट्रेनों के आगमन

- **पंजाब में शंभू सीमा पर चल रहे किसान आंदोलन के मद्देनजर दिल्ली और कटरा के बीच चार ट्रेनें सात मई तक रद्द कर दी गयी हैं और कई अन्य ट्रेनों की भी समय सारणी पूरी तरह से गड़बड़ा गई है।**

निर्धारित समय से कुछ घंटों की देरी से हो रहा है।

एक अधिकारी ने बताया कि, पंजाब में किसानों के विरोध-प्रदर्शन के कारण दिल्ली-कटरा खंड के बीच चलने वाली ट्रेनों की समय सारिणी पूरी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

जिसमे आत्मविश्वास नहीं, उसमे अन्य चीजों के प्रति विश्वास कैसे उत्पन्न हो सकता है। –विवेकानंद

बस! इतनी-सी आकांक्षा है

जब पूरा देश लोकतंत्र का महापर्व मना रहा है, इस बात की तरफ ध्यान जाना भी स्वाभाविक है कि आखिर लोकतंत्र है क्या! सामान्यतः हम लोकतंत्र को एक शासन पद्धति के रूप में जानते-मानते हैं। अब्राहमलिंकन के नाम से जिस कथन को बहुधा उद्धृत किया जाता है उसके अनुसार लोकतंत्र ''लोगों की, लोगों द्वारा और लोगों के लिए'' सरकार है। इस कथन में भी सारा बल सरकार पर है। माना जाता है कि लोकतंत्र शब्द ठीक शब्द 'डेमोस' से आया है, जिसका अर्थ है लोग, और 'क्रेटोस' जिसका अर्थ है शक्ति। इस तरह लोकतंत्र को 'लोगों की शक्ति' के रूप में समझा जा सकता है। कह सकते हैं कि लोकतंत्र शासन करने का ऐसा एक तरीका है जो लोगों की इच्छा पर निर्भर करता है। हम बचपन से ही यह पढ़ते आए हैं कि लोकतंत्र की पांच प्राथमिक विशेषताएं हैं: स्वतंत्र न्यायपालिका, निर्वाचित प्रतिनिधि, नागरिक स्वतंत्रता, संगठित विपक्षी दल, और कानून का शासन। इन पांच प्रमुख विशेषताओं के अलावा भी लोकतंत्र की अन्य अनेक विशेषताएं हैं, जैसे इसका आधार समानता का सिद्धांत है, यह आम लोगों की भलाई के लिए काम करता है, इसके द्वारा निर्वाचित सरकार ज़िम्मेदार और जनता के प्रति जवाबदेह होती है, सभा संघ और भाषण की आज़ादी होती है, नागरिकों के अधिकार और स्वतंत्रता सुरक्षित रहते हैं, प्रत्येक नागरिक के लिए समानता और स्वतंत्रता की गारंटी होती है, सबको समान अधिकार प्राप्त होते हैं, जाति, संपत्ति, धर्म या रंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है, हर नागरिक को मतदान का अधिकार होता है और चुनाव निष्पक्ष होते हैं, शासकों को जनता का समर्थन प्राप्त होता है, आदि।

इन सब बातों के साथ-साथ मुझे लगता है कि लोकतंत्र केवल शासन चलाने और चुनाव करने तक सीमित व्यवस्था न होकर एक सोच है, एक मानसिकता है। जब हम बोलचाल की भाषा में भी यह कहते हैं कि अमुक व्यक्ति स्वभाव से लोकतांत्रिक है तो हम उसके शासन करने की योग्यता की बात न करके उसकी मानसिकता की बात कर रहे होते हैं। जो हरेक को अपने जैसा समझे, और जो दूसरों के अधिकारों की भी रक्षा करने को तैयार रहे, उसे हम लोकतांत्रिक कहते हैं। यहां अनायास ही अठारहवीं सदी के फ्रांसीसी चिंतक और दार्शनिक वॉल्तेयर का यह लोकप्रिय कथन याद आ जाता है कि ''हो सकता है कि मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊँ, परन्तु विचार प्रकट करने के आपके अधिकार की रक्षा करूँगा।'' यही मानसिकता आपको सच्चा लोकतांत्रिक बनाती है।

लेकिन मौसम क्योंकि चुनाव का चल रहा है, हम फिर से उसी पर लौटते हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था एक आम नागरिक को चयन-सक्षम बनाती है, उसे चुनने का अधिकार देती है। यह बहुत बड़ी बात है और हम स्वाभाविक रूप से इस बात पर गर्व कर सकते हैं कि जहां अन्य कई देशों के नागरिकों को यह अधिकार लम्बी लड़ाई के बाद मिला, हमें अपने संविधान के लागू होने के पहले ही दिन से यह अधिकार मिल गया। चुनाव में बहुत सारे लोग अपनी-अपनी योजनाओं को बताते हुए हमारे सामने होते हैं और हम उनमें से किसी के पक्ष में अपना मतदान करते हैं। कालांतर में इसमें एक और विकल्प जुड़ गया – नोटा का विकल्प। अर्थात हम चाहें तो यह कह सकते हैं कि जो नाम हमारे सामने हैं उनमें से कोई भी हमें पसंद नहीं है। लेकिन, बहुत खास बात यह कि लोकतंत्र में चुनाव हमें चयन का अधिकार देता है।

यह बहुत अस्वाभाविक बात नहीं है कि हर व्यवस्था की तरह इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी कुछ विकृतियां घुस आई हैं। लोग, और दल, झूठे वादे करने लगे हैं, अपने किए हुए वादों से मुकरने लगे हैं, बजाय ख़ुद अपनी योजनाएं या अपने किए हुए काम बताने के, यह बताने में सारी ऊर्जा खपाने में लगे हैं कि उनके प्रतिपक्षी में क्या-क्या कमियां हैं, और ऐसा करते हुए वे शालीनता की धज्जियां भी उड़ाने लगे हैं। अब बहुत बार लगता है चुनाव कोई अभिजात, इज़्ज़तदार लोग न लड़कर मुहल्ले के गुंडे लड़ रहे हैं। उनकी भाषा, देह भाषा और समूचा व्यवहार सभी कुछ लज्जित करने वाले होने लगे हैं। बहुत लोग अब भी गरिमापूर्वक चुनाव लड़ते हैं। लेकिन जो ऐसा नहीं करते हैं उनकी संख्या तेज़ी से बढ़ती जा रही है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

यह बहुत अस्वाभाविक बात नहीं है कि हर व्यवस्था की तरह इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी कुछ विकृतियां घुस आई हैं। लोग, और दल, झूठे वादे करने लगे हैं, अपने किए हुए वादों से मुकरने लगे हैं, बजाय ख़ुद अपनी योजनाएं या अपने किए हुए काम बताने के, यह बताने में सारी ऊर्जा खपाने में लगे हैं कि उनके प्रतिपक्षी में क्या-क्या कमियां हैं, और ऐसा करते हुए वे शालीनता की धज्जियां भी उड़ाने लगे हैं।

और बात केवल यहीं तक सीमित नहीं है। चुनाव में धन और बल का उपयोग बढ़ता जा रहा है। मीडिया तो कह ही रहा है कि देश में इस साल जो चुनाव हो रहे हैं वे दुनिया के सबसे महंगे चुनाव होने जा रहे हैं। प्रत्याशी निर्वाचन आयोग को अपने चुनावी खर्चे का जो विवरण प्रस्तुत करते हैं, वह अविश्वसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती जा रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन से ही होता है। प्रतिपक्षी प्रत्याशियों को डराना-धमकाना अब अपवाद नहीं रह गया है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के दुरुपयोग की चर्चाएं भी आए दिन सुनने को मिलती हैं। अब यह और होने लगा है कि शक्तिशाली प्रत्याशी लोकप्रिय होकर चुनाव जीतने से आगे बढ़कर निर्विरोध चुनाव जीतने को तवज्जोह देने लगे हैं। ऐसा करने में सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग की आशंकाओं को भी नकारा नहीं जा सकता है।

इस बार के चुनाव में सूरत, इंदौर, चण्डीगढ़ और खजुराहो में जो हुआ है उसने समझदार लोगों को चिंतित किया है। भले ही इन जगहों पर जो हुआ वह बगैर किसी बेईमानी के हुआ हो, उसे शुभ नहीं कहा जा सकता। इसलिए शुभ नहीं कहा जा सकता कि अगर किसी निर्वाचन क्षेत्र के मतदाताओं से उनका मताधिकार छीना जाता है तो यह उनके प्रति अन्याय होता है। और याद रखें, मताधिकार में किसी को वोट देने के अधिकार के साथ-साथ नोटा के उपयोग का अधिकार भी शामिल है। मान लीजिए किसी एक निर्वाचन क्षेत्र में एक को छोड़कर शेष सारे प्रत्याशियों के नामांकन पत्र रद्द हो जाते हैं, या कुछ के रद्द हो जाते हैं और कुछ नाम वापस ले लेते हैं तो वहां एक ही प्रत्याशी बचता है जिसे निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया जाता है। अब कल्पना कीजिए कि मैं उसी निर्वाचन क्षेत्र का एक मतदाता हूं और मैं उस निर्विरोध निर्वाचित प्रत्याशी सहित सभी के खिलाफ नोटा का प्रयोग करना चाहता था, तो क्या मुझे अपने इस अधिकार से वंचित नहीं किया गया है?

इधर हमारे चुनावी परिदृश्य में एक और चर्चा है। वाराणसी की सीट से देश के प्रधानमंत्री जी चुनाव लड़ रहे हैं। उसी सीट से एक स्टैण्डअप कॉमेडियन ने भी अपना नामांकन पर्चा भरने की घोषणा की है। अनेक को यह कृत्य मूर्खतापूर्ण या उपहासास्पद लग रहा है। इसलिए कि लोगों को लगता है, प्रधानमंत्री जी और उस कॉमेडियन में बहुत अंतर है। कहां वे और कहां ये वाला मामला है! प्रधानमंत्री जी एक मंजे हुए नेता हैं, उनका दल बहुत बड़ा और समर्थ है, पूरे मीडिया का समर्थन उन्हें हासिल है, आदि-आदि। इनके सामने वह कॉमेडियन तो जैसे कोई हैसियत ही नहीं रखता है। और इस बात को वह ख़ुद भी जानता है। फिर क्यों वह लड़ रहा है? मुझे ख़ुद उस कॉमेडियन की बात में बहुत दम लगा। उसने कहा है कि वह नहीं चाहता कि पिछले दिनों सूरत और चण्डीगढ़ में जो हुआ वही वाराणसी में भी हो। इसलिए वह चुनाव लड़ रहा है। असल में वह हास्य कलाकार एक नागरिक के रूप में अपने अधिकार का प्रयोग कर रहा है और एक नागरिक के रूप में ही अपना दायित्व भी निबाह रहा है। और इसके लिए उसकी सराहना की जानी चाहिए। हम किसे वोट देते हैं, किसे चुनते हैं यह हमारी अपनी सोच, हमारी अपनी पसंद, हमारी अपनी राजनीतिक संलग्नता का मामला है। यह भी समझा जाना चाहिए कि किसी के खिलाफ़ चुनाव लड़ना एक सहज नागरिक अधिकार है और यह किसी भी तरह सामने वाले की अवमानना नहीं है। कोई बात नहीं कि यह हास्य कलाकार पराजित हो जाए, उसकी जमानत जब्त हो जाए! चुनाव हमेशा ही जीत-हार के लिए नहीं होते हैं। उनके माध्यम से संदेश भी दिए जाते हैं। अपनी उम्मीदवारी के माध्यम से वह कलाकार पूरे देश को एक संदेश दे रहा है – कि नागरिकों से उनके चयन का अधिकार नहीं छीना जाना चाहिए और चुनाव की व्यवस्था निर्बाध ज़ारी रहनी चाहिए।

प्रधानमंत्री जी के सामने खड़े इस दुबले-पतले और अकिंचन हास्य कलाकार का खड़ा होना मुझे कवि भरत व्यास के लिखे पुराने किंतु बेहद लोकप्रिय गीत की याद दिलाने को पर्याप्त से अधिक है –निर्बल से लड़ाई बलवान की/ ये कहानी है दीये और तूफ़ान की! फिर दुहरा देता हूं, कोई किसे वोट देता है, किसे चुनता है यह उसका विवेकाधिकार है। इस पर मैं कोई टिप्पणी नहीं कर रहा। मेरा समर्थन केवल इस देश के नागरिक को मिले चुनाव करने के अधिकार की रक्षा के प्रति है! चुनाव होते रहें, साफ़-सुथरे तरीके से होते रहें, पांच बरस में एक बार हमें अपने मताधिकार के प्रयोग का मौका मिलता रहे! बस! इतनी-सी आकांक्षा है!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

ओवरलोड बजरी के ट्रैक्टर-ट्रॉली अधरझूल होकर चलने से राहगीरों की जान मुसीबत में

ओवरलोड वजन होने से ट्रैक्टर-ट्रॉली के आगे के टायर सड़क से ऊपर हो जाते हैं इससे चालक वाहन को मोड़ भी नहीं सकता है

लालसोट/दौसा, (निसं)। उपखंड मुख्यालय पर घाटे की चढ़ाई में निकलने वाले ओवरलोड बजरी के ट्रैक्टर-ट्रॉली इन दिनों संभावित कोई बड़ी दुर्घटना का कारण बनने को तैयार दिख रहे हैं। यह बजरी के ओवरलोड ट्रैक्टर-ट्रॉली एक साथ बड़ी संख्या में निकलते हैं। इस दौरान बजरी से ओवरलोड ट्रैक्टर-ट्रॉली को चालक दूसरे आगे वाले ट्रैक्टर से आगे निकलने की जुगत में स्पीड बढ़ा देता है। ऐसे में अनियंत्रित बजरी से ओवरलोड ट्रैक्टर-ट्रॉली के आगे के टायर अनियंत्रित होकर हवा में हवा में अधर झूल जाते हैं।

इस दौरान अगर सामने से आए या पीछे से कोई वहां ओवरटेक करने का प्रयास करे या फिर सामने आने वाला हुआ निकलना चाहे तो उसके लिए कोई रास्ता नहीं होता है लेकिन बेखौफ यह बजरी माफिया ओवरलोड ट्रैक्टर ट्रॉलियों को दिन-रात इसी तरह लोगों की जान मुसीबत में डालकर अवैध परिवहन करते हुए नजर आते हैं। बेखौफ इन बजरी माफियाओं से जुडे ओवरलोड बजरी के ट्रैक्टर ट्रालियों का आलम इस कदर लोगों में खोफ बनकर बैठा हुआ है कि लोग बजरी के ट्रैक्टर-ट्रॉली को आते देख वहां साइड में खड़ा कर उसके निकालने का इंतजार करते हैं।

हाल ही में चार दिन पहले घाटे की चढ़ाई के दौरान एक अवैध ओवरलोड ट्रैक्टर-ट्रॉली के चालक द्वारा ट्रैक्टर के आगे के टायर ओवरलोड होने के बाद हवा में अधरझूल होने के बाद चलते ट्रैक्टर-ट्रॉली से उतरकर उसकी रील बनाई और सोशल मीडिया पर अपलोड कर दी। क्षेत्र में बजरी माफिया को किनका संरक्षण प्राप्त है और वह किस तरीके से लोगों की जान संकट में डाल रहे हैं साथ ही अवैध तौर पर बजरी का परिवहन का लोगों में अवैध ओवरलोड बजरी के परिवहन के आसपास हो रहे आवागमन को किस तरह संकट में डाल देते हैं इसे आसानी से खुली आंखों से देखा जा सकता है। ऐसा भी नहीं है कि बजरी माफिया द्वारा किए जा रहे इस अवैध बजरी के व्यापार से कोई अनजान हो। पुलिस प्रशासन सहित विभिन्न जिम्मेदार खनिज अभियंता खनिज अधिकारियों की जानकारी में सब होने के बाद भी जिम्मेदार आंख बंद किए हुए है। लोगों के संभावित होने वाले नुकसान एवं अब तक ओवरलोड बजरी के ट्रैक्टर-ट्रॉली से हो चुकी जनहानि को नजरअंदाज कर देते है।

लालसोट उपखंड क्षेत्र में हाईवे के किनारे आसानी से बजरी के अवैध स्टॉक लगे हुए आसानी से देखे जा सकते हैं जो सड़क पर फैलकर आवागमन के दौरान वाहनों के फिसलने का कारण भी बना रहे हैं। कई बार दो पहिया वाहन चालक सड़क किनारे लगे बजरी के स्टॉक से फैली बाजरे से फिसलकर गिरकर घायल हो चुके है। लोगों को निर्माण में बजरी की जरूरत है लेकिन इस बजरी की जरूरत स्टोन सैंड से भी पूरी की जा सकती है फिर भी लोगों की पहली पसंद बजरी होने के कारण बजरी के अवैध परिवहन एवं बजरी माफिया क्षेत्र में फल फूल रहे हैं।

लालसोट थाना क्षेत्र के घाटे की चढ़ाई में ओवरलोड बजरी के ट्रैक्टर-ट्रॉली के आगे के टायर अधरझूल चलते दिखाई देते हैं।

राजकीय महाविद्यालय में एक ही पद पर दो प्राचार्य आसीन, शिक्षा व्यवस्था चरमराई

- नोडल राजकीय महाविद्यालय करौली में गत छह माह से दोनों में आपसी खींचतान बनी हुई है
- कई उच्च शिक्षा महाविद्यालयों में प्राचार्य के पद रिक्त चले आ रहे हैं जिसके चलते उन महाविद्यालयों की शिक्षण व्यवस्था चरमराई हुई है

करौली, (निसं)। एक ओर तो केन्द्र और राज्य सरकार शिक्षा को बढ़ावा देने की बात करती है। वहीं दूसरी ओर जिले के सबसे बड़े एवं नोडल राजकीय महाविद्यालय करौली में गत छह माह से प्राचार्य के पद पर दो व्यक्ति आसीन हैं। जिससे दोनों में आपसी खींचतान बनी हुई है और शिक्षण व्यवस्था चरमराई हुई है।

जानकारी के अनुसार जिला मुख्यालय के राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य के पद पर डॉ. विश्राम लाल बैरवा को राज्य सरकार ने पदोन्नित देते हुए गत वर्ष 6 अक्टूबर 2023 को प्राचार्य पद पर लगाया था, लेकिन अगले ही दिन इन्हें राजनीतिक व्यवस्था के तहत हटा दिया गया। उनके स्थान पर डॉ. श्रीफल मीणा को प्राचार्य पद पर नियुक्त किया गया था। जिसको लेकर डॉ. बैरवा ने न्यायालय की शरण ली और अपनी पुनः बहाली के लिए स्टे आर्डर प्राप्त किया। न्यायालय के दबाव के कारण ही अंततः डॉ. बैरवा को 30 जनवरी 2024 को जाकर प्राचार्य पद का कार्यभार दिया गया। जबकि अक्टूबर से ही प्राचार्य के एक पद पर दो व्यक्ति लगातार कार्य कर रहे हैं। जिसको आज तक सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया है, जबकि कई उच्च शिक्षा महाविद्यालयों में प्राचार्य के पद रिक्त चले आ रहे हैं जिसके चलते उन महाविद्यालयों की शिक्षण व्यवस्था एवं अन्य व्यवस्थाए चरमराई हुई है।

जिला मुख्यालय स्थित महाविद्यालय में लगभग 50 सह सहायक आचार्यों का स्टाफ कार्यरत है। वहीं दूसरी ओर जिले के अन्य महाविद्यालयों में स्टाफ पूर्णतया खाली है या अत्यंत न्यून है। यह परिस्थिति जाति विशेष के राजनीतिक दबाव के कारण उत्पन्न हुई है।

स्थिति यह है कि महिला शिक्षा को बढ़ावा देते हुए विगत वर्षों में जिले में नादौती, कटकड़, हिंडौन, मंडरायल, टोडाभीम आदि में कन्या महाविद्यालय सरकार द्वारा खोले गए। लेकिन इन सभी महाविद्यालयों में एक भी नियमित कार्मिक नियुक्त नहीं है। जिले के दो कृषि महाविद्यालय करौली एवं सूरोंठ हिंडौन में भी कोई स्थाई कार्मिक उपलब्ध नहीं है। इसी प्रकार राजकीय महाविद्यालय मंडरॉयल, नादौती, मासलपुर आदि मात्र एक-एक नियमित स्टाफ के भरोसे महाविद्यालय चल रहे हैं। जिसके अभाव में शिक्षण व्यवस्था चौपट हो रही है और महाविद्यालय में शैक्षिणक एवं अशैक्षिणक स्टाफ के नियमित कार्मिक उपलब्ध नहीं होने के कारण शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करवाया जाना संभव नहीं है।

काश्तकारों की 100 वर्ष पुरानी खातेदारी भूमि पर वन विभाग कब्जा करने में लगा

- 26 बीघा जमीन पर वन विभाग जेसीबी चलाकर कब्जा करने में लगा हुआ है
- काश्तकारों ने बताया कि सालों से जमीन हमारे कब्जे में थी, जिसकी खातेदारी हमारे नाम दर्ज है
- ये सब काश्तकार अनुसुचित जनजाति के हैं जिसमें कुछ बीपीएल में भी शामिल है

पाटन, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम कालाखेड़ा उर्फ प्रतापपुरा की ढाणी देवलाडी में लगभग 26 बीघा जमीन पर वन विभाग जेसीबी चला कर अपनी जमीन बताते हुए उस पर कब्जा करने में लगा हुआ है। वहीं जिस जमीन पर फसल पैदाकर अपना जीवन-यापन करने वाले काश्तकारों ने बताया कि लगभग 100 वर्षों से जो जमीन हमारे कब्जे में थी, जिसकी खातेदारी हमारे नाम पर दर्ज है, जिस पर हम लोग बुवाई जुताई कर पेट पाल रहे थे, उस जमीन को वन विभाग अपनी बताकर हमें बेघर करने में लगा हुआ है। खातेदारी भूमि में दो मकान बने हुए हैं, बिजली के कनेक्शन है, पांच बोरिंग करवाई थी जो सिंगल फेस में चलती हैं, हमारा पुराना कुआं है, इतना सब कुछ होने के बावजूद भी वन विभाग पहाड़ी क्षेत्र में बताकर हमारी उपजाऊ भूमि पर जेसीबी चलाकर खुद की भूमि बता रहा है।

इस बारे में काश्तकारों ने बताया कि जमीन कालाखेड़ा उर्फ प्रतापपुरा की ढाणी देवलाडी निवासी भवानीसिंह धानका, इंद्राज सिंह, समुंदर सिंह, हवा सिंह, रामोतार, रामनिवास, धर्मपाल, रमेश, रामकुमार, रामेश्वर, रोहिताश, रामस्वरूप, बाबूलाल आदि के नाम खसरा नंबर 5,6,7,8, 9,10, 11 दर्ज है, उस भूमि पर वन विभाग कब्जा करने में लगा है। ये सबके सब काश्तकार अनुसुचित जनजाति के हैं जिसमें कुछ बीपीएल में भी शामिल है।

इन सभी ने फॉरेस्टर महेश गुर्जर पर आरोप लगाते हुए बताया कि महेश गुर्जर हम लोगों को नाजायज परेशान करने में लगा है, जबकि 30 अप्रेल को हमने एसडीएम कोर्ट नीमकाथाना में सीमा ज्ञान की अर्जी लगाई गई है। यही नहीं हमने वन विभाग के अधिकारियों को सीमा ज्ञान करने के लिए कहा परंतु मौके पर पटवारी ने कहा कि यह जमीन फॉरेस्ट के नाम है, आपकी जमीन पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है। इतना होने के बाद भी वन विभाग द्वारा 100 वर्षों के कब्जे को अपने कब्जे में करने में जुटा हुआ है।

अधिकांश हल्का पटवारियों का कहना है कि पाटन तहसील के अधिकांश गांवों का नक्शा सही नहीं होने के कारण सभी खसरा नंबरों में बदलाव आया है। अगर यह नक्शे दुरुस्त हो तब जाकर ही कुछ कहा जा सकता है।

महेश गुर्जर, फोरेस्टर लादी का बास का कहना है कि उपरोक्त जमीन वन विभाग की है जो वन विभाग के रिकॉर्ड और गूगल मैप पर भी अंकित है। खातेधारकों को पूर्व में भी अवगत करवाया गया था कि आपकी जमीन यहां से एक किलोमीटर की दूरी पर है, जिस पर अन्य लोग काबिज थे, जिन्होंने अपना कब्जा हटा लिया है। खातेदारों को अवगत करवाने के बावजूद भी ये लोग हटधर्मीता कर रहे हैं, इसलिए जेसीबी की सहायता से जमीन के चारों तरफ खाई खुदवाई गई है।

मुनेश सर्वा, तहसीलदार पाटन का कहना है कि वन विभाग अपनी जमीन बता रहा है, पटवारी ने सीमा ज्ञान कर भी जमीन को वन विभाग की बताई है, इसलिए यह कार्यवाही वन विभाग के अधिकार क्षेत्र में आती है। जो कार्रवाई की है वह भी वन विभाग ने ही की है।

ग्राम कालाखेड़ा उर्फ प्रतापपुरा की ढाणी देवलाडी में वन विभाग जमीन को अपनी बता रहा है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 6 मई, 2024

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, रेवती नक्षत्र सांय 5:43 तक, प्रीति योग रात्रि 12:28 तक, वणिज करण दिन 2:41 तक, चन्द्रमा आज सांय 5:43 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज से गुरू वृद्धत्व प्रातः 7:15 से आरम्भ होगा। आज मास शिव रात्रि है। पंचक सांय 5:43 पर समाप्त होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:27 तक, शुभ 9:06 से 10:45 तक, चर 2:02 से 3:41 तक, लाभ-अमृत 3:41 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:48, सूर्यास्त 6:58

मेष

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। पारिवारिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृष

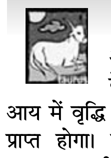

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

कर्क

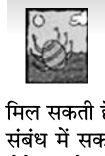

नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

सिंह

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा।

कन्या

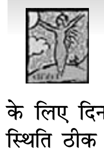

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

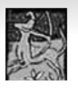

घर-परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित समस्या हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

बीकानेर की लोक कला और संस्कृति का देश और दुनियां में विशेष स्थान : रंगा

पांच दिवस नगर स्थापना दिवस समारोह के समापन पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र किशन मूंधड़ा व वरिष्ठ साहित्यकार कमल रंगा ने वितरित किए।

- **पांच दिवसीय नगर स्थापना दिवस समारोह उछब थरपणा रविवार को संपन्न हुआ**

बीकानेर, (कासं)। राजस्थानी साफा पाग-पगड़ी कला संस्कृति संस्थान एवं थार विरासत का पांच दिवसीय नगर स्थापना दिवस समारोह उछब थरपणा रविवार को संपन्न हुआ। इस दौरान नत्थूसर गेट के बाहर स्थित नालन्दा 8 सृजन सदन में आयोजित चंदा कला एवं बीकानेर की विभिन्न कलाओं की प्रदर्शनी का समापन भी किया गया।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि सी.एम. मूंधड़ा चैरिटेबल ट्रस्ट के किशन मूंधड़ा थे। उन्होंने कहा कि नगर का स्थापना दिवस प्रत्येक शहरवासी के लिए गौरवमयी होता है। इसे पूर्ण उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस बार अनेक संस्थाएं इसके लिए आगे आई हैं। यह अच्छी पहल है। विभिन्न कलाओं की प्रदर्शनी आयोजित करने से युवा प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने की अवसर मिलेंगे। मूंधड़ा ने बालिकाओं द्वारा लगाई गई कलाकृतियों की सराहना की और कहा कि इन्हें ऐसे अवसर लगातार दिए जाएं।

जिला उद्योग संघ के अध्यक्ष द्वारका प्रसाद पचीसिया ने कहा कि बीकानेर में अनेक प्रतिभाएं हैं। इन्हें आगे बढ़ने के अवसर दिए जाने जरूरी है। उन्होंने बताया कि जिला उद्योग संघ में परिसर में आर्ट गैलरी का निर्माण करवाया गया है। जो कि ऐसे कलाकारों के लिए लाभदायक साबित होगी। वरिष्ठ कवि-कथाकार कमल रंगा ने कहा कि बीकानेर की लोक कला और लोक संस्कृति देश और दुनियां में विशेष स्थान रखती है। युवा पीढ़ी के हाथों में यहां की कला और संस्कृति का भविष्य सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनी के माध्यम से जीवन के विभिन्न रंगों को उकेरा गया। उन्होंने कहा कि दोनों संस्थाएं ऐसे आयोजन के लिए साधुवाद की पात्र हैं।

उन्होंने बीकानेर की साहित्यिक सामाजिक सांस्कृतिक और परंपरागत विशेषताओं के बारे में बताया और कहा कि इन्हीं विशेषताओं के कारण यह शहर अपनी अलहदा पहचान रखता है। संस्कृति कर्मी कृष्ण चंद्र पुरोहित ने पांच दिवसीय कार्यक्रमों की रूपरेखा की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी में 25 कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों को आमजन के अवलोकनार्थ रखा।

थार विरासत के राजेश रंगा ने आगंतुकों का आभार जताया। उन्होंने कहा कि पांच दिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न विधाओं को शामिल करने के प्रयास हुए। कार्यक्रम का संचालन हरिशंकर आचार्य ने किया। इस अवसर पर अतिथियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इससे पूर्व श्लोक कलाओं का प्रचार विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। इसमें नाबार्ड के जिला विकास प्रबंधक रमेश तांबिया बतौर अतिथि मौजूद थे। उन्होंने कहा कि बीकानेर प्रतिभाओं की खान है। इन कलाकारों की कलाओं को देश और दुनिया तक पहुंचाने के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग करना जरूरी है।

इससे इन कलाकारों को संबल मिलेगा तथा बीकानेर की कला देश और दुनिया में प्रसिद्ध हो सकेगी। उन्होंने कहा कि डिजिटल माध्यम इन कलाओं के प्रसार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। युवा कलाकार इस ओर विशेष ध्यान दें।

विशिष्ट अतिथि शिक्षाविद रामलाल सोलंकी ने कहा कि युवाओं को चाहिए कि वे लक्ष्य निर्धारित कर इसे प्राप्त करने में जुट जाएं। इस दिशा में आने वाली बाधाओं से डरे बिना वे अनवरत आगे बढ़ें। सहायक निदेशक जनसंपर्क हरिशंकर आचार्य ने कहा कि लोक कलाओं के क्षेत्र में बेटियों का आगे आना अच्छे संकेत हैं। बेटियां पूर्ण मनोयोग के साथ आगे बढ़ें।

प्रयास संस्थान के धर्मेन्द्र छंगाणी ने आर्टिजेंस के लिए किए जा रहे हैं कार्यों की जानकारी दी। इस दौरान वरिष्ठ चित्रकार एम. जहांगीर को लोक कला साधक सम्मान अर्पित किया गया। अतिथियों ने जांगिड़ को माला और शॉल अर्पित कर सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन राजेश रंगा ने किया। प्रदर्शनी में डॉ मोना सरदार डूडी की कुरेचन कला धर्मा स्वामी मॉडर्न आर्ट, महावीर रामावत पेंसिल पोट्रेट, कृष्णचंद पुरोहित साफा पगडी कला, योगेन्द्र पुरोहित इन्स्टोलेशन आर्ट, कमल किशोर जोशी पोट्रेट कला, रामकुमार भादाणी सुनहरी कलम, रवि उपाध्याय यथार्थ आर्ट, फराह कन्टेम्परी आर्ट, प्रिया मारू दृश्य कला, सैफ अली उस्ता उस्ता आर्ट, संगीता चौधरी मिनियचर आर्ट, गणेश रंगा पेंसिल आर्ट, केशव जोशी लीफ आर्ट, पुलकित हर्ष पेंसिल आर्ट, भूमिका रांकावत मण्डाला आर्ट, कृष्णकांत व्यास वुडन आर्ट, मुकेश जोशी सांचीहर मॉडर्न आर्ट, मंशा रावत लिपन आर्ट, योगेश रंगा पिछवाई आर्ट प्रस्तुत की।

12 खाद बीज विक्रेताओं के लाइसेंस निलंबित

हनुमानगढ़, (कासं)। जिले में किसानों को गुणवत्तायुक्त कृषि आदान प्राप्त हो, इसके लिए आदान विक्रेताओं का अभियान चलाकर निरीक्षण किया जा रहा है। इसके तहत विभागीय टीम ने विभिन्न बीज दुकानों पर जाकर दबिश दी। इस दौरान नियमों का उल्लंघन करने पर कुछ के खिलाफ कार्रवाई की गई है।

अनियमितता मिलने पर बीज अधिनियम के प्रावधानों के तहत कार्रवाई की जा रही है। अभी तक 12 आदान विक्रेताओं के लाइसेंस निलंबित किए जा चुके हैं। साथ ही 07 विक्रेताओं को नोटिस देकर विक्रय पर रोक लगाई गई है। अभियान आगे भी जारी रहेगा। संयुक्त निदेशक कृषि (विस्तार) योगेश कुमार वर्मा ने बताया कि जिले में सभी बीटी कॉटन बीज मांग के अनुसार उपलब्ध है तथा खाद बीज उर्वरक की कमी नहीं है।

उन्होंने किसानों से अपील कि है कि वे विभागीय दिशा निर्देशों के अनुसार उर्वरकों का उपयोग करें। किसी भी प्रकार की समस्या होने पर हनुमानगढ़, संगरिया, पीलीबंगा एवं टिब्बी के किसान सहायक निदेशक बीआर बाकोलिया के दूरभाष 9414535747 पर, नोहर, रावतसर एवं पल्लू के किसान सहायक निदेशक रामप्रताप गोदारा के दूरभाष 9414637211 पर और भादरा क्षेत्र के किसान सहायक निदेशक बनवारी लाल के दूरभाष 9950023570 पर सम्पर्क कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि गुलाबी सुंडी के नियत्रंण के लिए आयोजित कार्यशाला के व्याख्यान कृषि विभाग, राजस्थान के सोशल मीडिया पर उपलब्ध है।

सार-समाचार

परिंदों के लिए पालसिए लगाए

कुलपति कोठी के आस-पास में परिंदों के लिये पानी से भरे मिट्टी के पालसिए लगाते कुलपति प्रो. मनोज दीक्षित।

बीकानेर, (कासं)। बीकानेर सेवा योजना द्वारा रविवार सुबह महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय परिसर के कुलपति कोठी, अतिथि गृह व आस पास में परिंदों के लिये पानी से भरे मिट्टी के पालसिए लगाये गये। योजना के अध्यक्ष राजकुमार व्यास ने बताया कि इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति मनोज दीक्षित ने योजना के समस्त सदस्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि भीषण गर्मी में बेजुबान परिंदों के लिये पानी की सेवा से बड़ी कोई सेवा नहीं है और इससे बड़ा कोई धर्म नहीं है। योजना के प्रवक्ता पवन राठी ने बताया कि हर गर्मी के मौसम में बीकानेर सेवा योजना के पदाधिकारी बीकानेर में अलग अलग जगहों पर परिंदों के लिये पालसिए और चिडियों के लिये मिट्टी से बने घोंसले लगाने के कार्यक्रम करती है। आज के कार्यक्रम में योजना के वरिष्ठ उपाध्यक्ष त्रिलोक बिस्सा,सीमा पारीक, वीणा पारीक, सुमन ओझा जोशी, के. सी. ओझा, इंजीनियर वीरेंद्र राजपुरोहित, रामकुमार ओझा, छोटूलाल चूरा, बद्रीदास जोशी, हेमंत सोनी, वीरेन्द्र सिंह चौहान, रामलाल पवार, जुगल ओझा, राधा पुरोहित, पूजा प्रजापत, मुकेश सैनी, मनीष तावनिया, रूद्र व्यास, गणेश पुरोहित ने सहयोग किया। योजना की राधा पुरोहित ने बताया कि शीघ्र ही अगला कार्यक्रम मुरलीधर कॉलोनी के पार्कों में रखा जायेगा।

स्लोगन दोहे लिखे चंदा बनाए

बीकानेर स्थापना दिवस पर स्लोगन दोहे लिखे चंदा बना रही है जाझो ब्रिगेड।

बीकानेर, (कासं)। बीकानेर स्थापना दिवस पर जाझो ब्रिगेड पिछले कई वर्षों से चंदे बनाकर पारम्परिक चंदा उड़ाकर परम्परा का निर्वाह कर रहा है। परम्परागत पगड़ी पर चंदा बनाने वाले एकमात्र कलाकार व जाझो ब्रिगेड लोक नाट्य कला संस्थान के अध्यक्ष अनिल कुमार बोड़ा ने बताया कि चंदे पर बीकानेर के आपसी प्रेम को सदा जीवित रखने का संदेश भी दोहों द्वारा दिया गया। उन्होंने बताया कि चंदों पर शहर बीकाणो-जाझो निरालो अपनायत रो देश, भुजिया-पापड़-बड़ी रे स्वाद रो डंको गूंजे देश-विदेश, वाह! बीकाणा देश वाह बीकाणा देश! व आकाशां में उड़े म्हारो चंदों करणी मात म्होरी सहाय करे मान सवायो रेवे बीकाणे रो सब जनता रा भंडार भरे आदि दोहे लिखे गए है। इसके अलावा पूवा नाडी बावड़ी हरदम राखो साफ-बूंद-बूंद पानी संजोवो जीवन का आधार आदि दोहे भी लिखे गए हैं। जाने-माने संस्कृतिकर्मी बोड़ा ने यह भी बताया कि साथ चंदे पर करणी माताजी, पूनरासर हनुमानजी, कोडमदेसर भैंरूजी की तस्वीर बनायी गई है। बोड़ा के अलावा राजकुमार बोड़ा, आशाराम मारू, कांता बोड़ा ने भी चंदा बनाने में सहयोग किया।

शिविर में 142 यूनिट रक्तदान

श्री श्री रविशंकर के जन्मदिवस के उपलक्ष में शिविर में युवाओं ने रक्तदान किया।

बीकानेर, (कासं)। आर्ट ऑफ लिविंग के प्रणेता संस्थापक श्री श्री रविशंकर के जन्मदिवस के उपलक्ष में रविवार को बीकानेर केन्द्र द्वारा लगाए गए रक्तदान शिविर में 142 यूनिट रक्त दान हुआ। आर्ट ऑफ लिविंग ब्यूरो कम्यूनिकेशन के बीकानेर जोनल मीडिया कोऑर्डिनेटर गिरिराज खैरीवाल के मुताबिक ट्रांसपोर्टर गली स्थित कथूरिया भवन में लगे इस शिविर में संस्था के सदस्यों ने बढ़- चढ़कर हिस्सा लिया तथा 142 डिवोटिज ने ब्लड डोनेट कर अपने गुरूदेव को एडवांस में बर्थ-डे विश किया। शिविर के संयोजक रवि कथूरिया एवं अनिल खजांची ने बताया कि गुरूदेव के जन्मदिवस के उपलक्ष में आर्ट ऑफ लिविंग के बीकानेर केन्द्र द्वारा हर वर्ष 13 मई से पहले आने वाले रविवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर स्टेट टीचर्स कॉर्डिनेटर जितेंद्र सारस्वत सहित संस्था के अनेक सदस्यों ने विभिन्न व्यवस्थाओं को बखूबी संभाला।

पतंगबाजी का जुनून, धोरों पर ढील, छतों पर बो काट्या की गूंज

- **नगर स्थापना दिवस पर दो दिन तक पतंगबाजी का दौर चलेगा**

बीकानेर,(कासं)। शहर में पतंगबाजी का जुनून शहरवासियों के सिर चढ़कर बोलता है। अवसर नगर स्थापना दिवस का हो अथवा साल भर चलने वाली मैदानी पतंगबाजी का। सर्दी, गर्मी और लू के थपेड़ों की बिना परवाह किए पतंगबाज पतंगों के पेच लड़ाने में व्यस्त रहते हैं। नगर स्थापना दिवस पर हर घर की छत से उड़ने वाली पतंगे, पतंगों से आच्छादित शहर के आकाश का नजारा देखते ही बनता है।

बोई काट्या और फेर उड़ा के स्वर हर किसी को रोमांचित करने वाले होते है। ऐसा ही नजारा 9 और 10 मई को फिर देखने को मिलेगा। आखाबीज और आखातीज के दिन होने वाली पतंगबाजी के लिए बच्चे, युवा, बुजुर्ग और महिलाएं तैयार हो चुके है। पतंग-मांझे की बिक्री शुरू हो गई है। पतंगों के पेच के लिए पुरानी प्रतिद्वंदी फिर से तैयार हो गए है। नगर स्थापना दिवस पर दो दिनों तक पतंगबाजी का दौर चलेगा। घरों की छतों पर बच्चों से बुजुर्ग तक व महिलाएं पतंगबाजी में व्यस्त रहेंगे। पतंगे उड़ाने, काटने और लूटने का क्रम चलेगा। डीजे, टेप, स्पीकर पर गीतों की गूंज रहेगी। खान-पान के दौर चलेंगे।

चिलचिलाती धूप और गर्मी के बाद भी अनवरत रूप से पतंगबाजी का क्रम चलता रहे, इसकी तैयारियां चल रही है। शहर में केवल नगर स्थापना दिवस पर ही पतंगबाजी का जुनून नजर नहीं आता है। पूरे साल शहर से दूर सोनलियां धोरों पर मैदानी पतंगबाजी का क्रम चलता रहता है। मैदानी पतंगबाजी के शौकिन लोग इसका आनंद लेते हैं। पतंगबाज राजेश पुरोहित ने बताया कि मैदानी पतंगबाजी के लिए संसोलाव तालाब के पास स्थित नाथजी का धोरा अंदरूनी शहर के पतंगबाजों के लिए पसंदीदा मैदान है। सुजानदेसर काली माता मंदिर के पास, चकगर्बी बीकाजी फैक्ट्री के पीछे, जोड़बीड, नोखा और देशनोक में भी मैदानी पतंगबाजी के स्थान है।

शहर में केवल नगर स्थापना दिवस और शौकिया तौर पर ही पतंगबाजी नहीं होती है। पतंगबाजी के लिए टीमें भी बनी हुई है, जो न केवल साल भर पतंगबाजी में जोर आजमाइश करती रहती है, बल्कि पतंगबाजी की प्रतियोगिता में भी शामिल होती है। पतंगबाजों के अनुसार टीमों में मरूधर काइट क्लब, नामाकूल महफिल काइट क्लब, शक्ति काइट क्लब सहित अन्य शामिल हैं।

ट्रेन की चपेट में आने से मौत

बीकानेर, (कासं)। कान में ईयर फोन लगाकर चलना एक युवक के लिए मौत का कारण बन गया। जिसके चलते युवक ट्रेन की चपेट में आ गया और उसकी दर्दनाक मौत हो गई।

यह दर्दनाक घटना जिले के नापासर थाना क्षेत्र की है। घटना के बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को मोर्चरी में रखवाया, जहां पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंपा गया। बताया जा रहा है कि युवक के कानों में इयर फोन लगे हुए थे। संभवत: उसे पीछे से आ रही ट्रेन की आवाज सुनाई नहीं दी और वो ट्रेन की चपेट में आ गया। उसके सिर सहित शरीर के अन्य हिस्सों के गंभीर चोट आने के कारण मौके पर ही दम तोड़ दिया।

घटना की जानकारी मिलने पर नापासर पुलिस मौके पर पहुंची। परिजनों को भी सूचना दी गई। जानकारी मिली हैं कि युवक ने एक प्राइवेट कोचिंग की टी-शर्ट पहनी हुई थी। उसकी शिनाख्त मनोज जाखड़ निवासी तेजरासर के रूप में हुई है।

लिव इन में रह रहे युवक-युवती को जबरन ले गए

- **युवक-युवती को चुनावगढ़ थाने में पेश करने ले जाते समय रास्ते में से परिजन जबरन ले गए**

बीकानेर, (कासं)। लिव इन रिलेशनशिप में रह रहे युवक-युवती पेश होने के लिए जा रहे थे, किंतु बीच रास्ते में ही परिजन उनको जबरदस्ती अपने साथ ले गए। इस आशय की रिपोर्ट जयपुर निवासी सुनीता नायक पत्नी सतपाल ने लड़की के परिजनों के खिलाफ थाने में दर्ज करवाई है।

दरअसल मामला बीकानेर के महाजन पुलिस थाना का है। सुनीता नायक ने लड़की के ताऊ पालाराम, जीजा प्रेम कुमार, विनोद कामरेड, महेन्द्र समेत 20 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है। उसके मुताबिक लिव इन रिलेशनशिप में रहने वाले मुकेश व निकिता है। रिपोर्ट में बताया कि उसके रिश्तेदार लड़का मुकेश तथा लड़की निकिता अपने घर वालों को बिना बताए पिछले आठ-दस दिनों से उसके घर पर लिव इन रिलेशनशिप में रह रहे थे।

इनके लिव इन रिलेशनशिप के रिश्ते को ध्यान में रखते हुए वह इनको एक निजी वाहन से संबंधित पुलिस थाने चुनावगढ़ में पेश करने के लिए लेकर जा रही थी।

आरोप है कि जैतपुर टोल नाका के नजदीक आरोपी गाड़ी से पहुंचे तथा उसकी गाड़ी को रूकवाकर उससे उसका मोबाइल छीन लिया तथा मुकेश व निकिता को जबरन अपने साथ ले गए। आरोपियों ने उसके साथ गाली गलौच की तथा उसके साथ बदतमीजी की। पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

डिस्ट्रीब्यूटर बनाने के नाम पर 10 लाख हड़पे

- **पूर्व महापौर नारायण चौपड़ा के बेटे के साथ दस लाख की धोखाधड़ी**

बीकानेर, (कासं)। नगर निगम के पूर्व महापौर नारायण चौपड़ा के बेटे के साथ दस लाख रूपए की धोखाधड़ी होने का मामला सामने आया है।

परिवादी की रिपोर्ट पर गंगाशहर थाना पुलिस ने तीन जनों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार चौरडिया चौक गंगाशहर निवासी भरत चौपड़ा पुत्र नारायण चौपड़ा ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि वह सीमेंट का व्यवसाय करता है। आरोपियों ने मुझे सीमेंट का डिस्ट्रीब्यूटर बनाने का कहकर एक लाख रूपए बतौर एडवांस अपनी फर्म में ट्रांसफर करवा लिए।

इसके बाद सीमेंट भिजवाने का कहकर नौ लाख रूपए और ले लिए। लेकिन अभी तक सीमेंट सप्लाई नहीं किया। इस तरह आरोपियों ने सुनियोजित तरीके से षडयंत्र रचकर उसे डिस्ट्रीब्यूटर नियुक्त करने का झांसा देकर कुल दस लाख रूपए हड़प लिए।

पुलिस ने परिवादी की रिपोर्ट पर नोएडा में रहने वाले अरशद खां सहित विजेन्द्र शर्मा, किशनकांत त्रिपाठी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मामले की जांच एएसआई चरण सिंह को सौंपी गई है।

महिला से दुष्कर्म, अश्लील वीडियो बनाया

बीकानेर,(कासं)। महिला के साथ दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। दुष्कर्म करने वाले भी पीड़िता के परिचित बताए जा रहे है।

मामला श्रीगंगानगर जिले के जवाहर नगर पुलिस थाना क्षेत्र का है। पीड़िता का कहना है कि उसका कुछ लोगों से परिचय है। आरोप है कि सात माह पहले आरोपी उसको अपने घर लेकर गए। जहां तीन लोगों ने उसके साथ दुष्कर्म किया। इसमें एक महिला ने भी आरोपियों का सहयोग किया। पीड़िता के मुताबिक तीनों आरोपी शहर की एक कॉलोनी के रहने वाले है। आरोप लगाया कि आरोपियों ने उसके साथ दुष्कर्म किया तथा उसकी अश्लील वीडियो क्लिप बना ली तथा उसको डराया व धमकाया।

नवनिर्मित दो सी.एच.सी. भवनों का नहीं हो रहा उपयोग

- **डॉ. बी. डी. कल्ला ने चिकित्सा मंत्री को पत्र लिखा**

बीकानेर, (कासं)। पूर्व मंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला ने बीकानेर शहर स्थित मुक्ता प्रसाद कॉलोनी सी.एच.सी. तथा दादाबाड़ी, गंगाशहर के पास स्थित सी.एच.सी. में चिकित्सक, पैरा मेडिकल स्टाफ एवं आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराने के लिए चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर को पत्र भेजा है।

उन्होंने पत्र में बताया है कि बीकानेर शहर में राज्य सरकार दो नवीन सी. एच. सी. स्वीकृत की गई थी तथा इनकी स्थापना के लिए प्रत्येक सी.एच.सी. को 6-6 करोड़ की राशि स्वीकृत की गई थी। मुक्ता प्रसाद कॉलोनी तथा दादाबाड़ी, गंगाशहर दोनों स्थानों पर स्वीकृत सी.एच.सी. के भवन बनकर तैयार हो चुके हैं तथा इनका लोकार्पण भी किया जा चुका है। लेकिन विधानसभा चुनाव की आचार संहिता लागू हो जाने के कारण इन दोनों सी.एच.सी. के लिए चिकित्सक, पैरा मेडिकल स्टाफ एवं उपकरणों की स्वीकृति जारी नहीं हो पाई थी। पूर्व में इन दोनों सी.एच.सी. को कार्यशील बनाने के लिए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सी.एम.एच.ओ.) द्वारा चिकित्सकों तथा पैरा मेडिकल स्टाफ की व्यवस्था करके इन्हें संचालित कर दिया गया था। लेकिन बाद में इस व्यवस्था को भी निरस्त कर दिया गया जिसके कारण इन दोनों सी.एच.सी. वाले स्थानों के निवासियों को चिकित्सा सुविधा से वंचित होना पड़ रहा है।

डॉ. कल्ला ने बताया कि दोनों सी.एच.सी. के नवनिर्मित भवनों का उपयोग नहीं होने तथा नियमित साफ-सफाई नहीं होने के कारण दोनों भवन खराब हो रहे हैं। इसलिए राज्य सरकार द्वारा सी.एच.सी. के लिए निर्धारित मापदण्डों के अनुसार यहां के लिए पर्याप्त चिकित्सक, पैरा मेडिकल स्टाफ स्वीकृत करते हुए आवश्यक उपकरणों की भी स्वीकृति जारी करने की मांग की है।

श्रीकोलायत में अम्बेडकर सर्किल पर पर श्रमदान कर की साफ-सफाई

डॉ. भीमराव अम्बेडकर सर्किल संरक्षण समिति के कार्यकर्ताओं ने कोलायत में अम्बेडकर सर्किल पर स्वच्छता अभियान चलाकर सफाई की।

- **सुबह दो घंटे श्रमदान करके सफाइ की**

श्रीकोलायत, (कासं)। डॉ भीमराव अंबेडकर सर्किल संरक्षण समिति, बीकानेर द्वारा डॉ. अम्बेडकर सर्किल, कोलायत पर श्रमदान कर स्वच्छता अभियान चलाया गया।

इसी क्रम में डॉ. भीमराव अम्बेडकर सर्किल संरक्षण समिति के अध्यक्ष सत्यनारायण देवड़ा ने बताया कि सर्किल की टीम हर सप्ताह रविवार को प्रात: 6:00 बजे से 8:00 तक बीकानेर में अम्बेडकर सर्किल पर श्रमदान करती है। समिति ने यह निर्णय लिया कि बीकानेर संभाग के हर तहसील में स्थित डॉ भीमराव अम्बेडकर सर्किल पर भी स्वच्छ अभियान सर्किल समिति बीकानेर के माध्यम से चलाया जायेगा जिसका आगाज आज श्रीकोलायत में स्थित डॉ अम्बेडकर सर्किल पर बीकानेर सर्कल संरक्षण समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने श्रमदान किया। जिसमें सर्कल के अंदर वह बाहर पड़े काफी सारी गंदगी को साफ कर सर्कल को स्वच्छ एवं सुंदर बनाया गया। समिति से जुड़े कार्यकर्ताओं ने 5 घंटे साफ सफाई की। डॉ अम्बेडकर सर्किल संरक्षण समिति के कार्यकर्ताओं ने प्रात 7 से दोपहर 12 बजे तक सर्किल स्थल प्रतिमा व चारों तरफ सड़क की सफाई की। कार्यकर्ताओं ने कड़ी मेहनत कर 6 ट्रैक्टर ट्राली कचरा व मलबा साफ किया।

इस श्रमदान में डॉ. अम्बेडकर सर्किल संरक्षण समिति बीकानेर के महासचिव जगदीश मेघवाल, उपाध्यक्ष राजकुमार हटीला, पत्रकार मोहनलाल कड़ेला रवि लेखाला, रवि जोइया, कुणाल, मुंशीलाल, जेठाराम तुलसीराम डॉ अम्बेडकर सर्किल, कोलायत की स्थापना से जुड़े प्रो. भग्गाराम ढाल, समाजसेवी प्रो. राजेन्द्र मेघवाल, कोलायत सरपंच प्रतिनिधि बजरंग पंवार, प्रेम बारूपाल, पंकज ढाल ने भी अपनी सेवाएं दी।

राजनीति क्यों नहीं होती टी-शर्ट की तरह : विनोद विट्ठल

बीकानेर, (कासं)। राजनीति क्यों नहीं होती टी-शर्ट की तरह.. हमजाद है पासवर्ड जिन्दगी का, बनाता कोई और है, बदलता कोई और है, जिंदगी हैकर्स की चीज बनकर रह जाती है.., अड़तालीस की उम्र अस्सी प्रतिशत है जिंदगी का...गीतों की जगह याद आती हैं मजबूरियां...जैसी गहरी संवेदनाओं को पिरोकर अपनी विशिष्ट शैली में अभिव्यक्त कर उपस्थिति प्रबुद्ध श्रोताओं को कवि विनोद विट्ठल ने अपनी कविताओं की एक-एक पंक्ति से मंत्रमुग्ध कर दिया।

अवसर था चिंतन व सृजन को समर्पित प्रज्ञा परिवृत और बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति, बीकानेर के सह-आयोजन में सुख्यात कवि विनोद बिट्ठल के एकल काव्यपाठ का। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कवि विनोद विट्ठल का माल्यार्पण, शॉल ओढ़ाकर और स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत किया गया।

प्रौढ़ शिक्षा भवन में आयोजित एकल काव्य पाठ करते कवि विनोद विट्ठल।

स्थानीय प्रौढ़ शिक्षा भवन में आयोजित एकल काव्य पाठ में विट्ठल ने तरीके, जवाब, लेटर बॉक्स, टी-शर्ट, डायबिटीज, जैसी अपनी समकालीन और आधुनिक कविताओं के साथ वे पांच थी और जीवन थे दस, पांव वो जो वे जीन चाहती थीं और पांच वे जो वे जी रही थीं........मैंने भाषा के सबसे सुन्दर शब्द बचाकर रखे थे, तुम्हारे लिए.......जैसी उक्तियों ने का भावसिक्त पाठ करके सदन की ओर से दिली-प्रशंसा प्राप्त की।

कार-पिकअप की भिड़ंत में परिवार के छह लोगों की मौत, दो बच्चे घायल

मृतक परिवार झुंझुनू का मूल निवासी था जो वर्तमान में सीकर के खंडेला में रह रहा था

बौंली-बामनवास/सीकर/ सवाई माधोपुर, (निसं)। बौंली-बामनवास क्षेत्र के दिल्ली-मुंबई आठ लाइन एक्सप्रेस-वे बनास नदी के पास सड़क मार्ग पर रविवार को प्रात: करीब आठ बजे कार एवं केंटरा पिकअप में आमने-सामने से टक्कर हो गई। इस सड़क दुर्घटना में एक ही परिवार के तीन महिला व तीन पुरुषों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। वहीं एक बालक व बालिका घायल हो गए। जिन्हें बौंली के चिकित्सालय में प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर के लिए रेफर किया गया है।

बौंली थाने के कार्यवाहक थाना प्रभारी उप निरीक्षक धर्मसिंह ने बताया कि थाना क्षेत्र के बनास नदी के पास एक्सप्रेस-वे पर अज्ञात वाहन द्वारा एक कार को टक्कर मार देने की सूचना पर मय एंबुलेंस पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। इस सड़क दुर्घटना में कार पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई थी एवं सभी यात्री कार में फंसे थे। ग्रामीणों की सहायता से कार में सवार तीन महिला व तीन पुरुषों व दो बालक, बालिका शामिल थे। उन्हें बाहर निकला गया। सड़क दुर्घटना में मृतक परिवार झुंझुनू के मुकंदगढ़ गांव का मूल निवासी था जो कि वर्तमान में सीकर जिले के खंडेला में रह रहा था।

पूरा परिवार कार में सवार होकर सवाई माधोपुर त्रिनेत्र गणेश जी के मंदिर पर दर्शन करने जा रहा था। इसी दौरान अज्ञात वाहन ने उनकी कार को टक्कर मार दी। जिससे सतीश व मनीष शर्मा दोनों सगे भाई एवं उनकी

सड़क दुर्घटना में कार पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई।

पत्नी पूनम व अनीता शर्मा, दोनों भाइयों की बहन संतोष शर्मा व कार चालक कैलाश चौधरी की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई एवं परिवार के मनन व दीपाली दोनों भाई बहनों का बौंली प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर रैफर किया गया है। गांव से मृतकों के परिजनों के आने के बाद सभी शवों का बौंली चिकित्सालय में पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सुपुर्द कर दिए। बौंली पुलिस ने मामला दर्ज कर कार्रवाई करते हुए केटंरा पिकअप को जप्त कर चालक की तलाश शुरू कर दी।

सूचना मिलने पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मृतक परिवार को संवेदना प्रकट करते हुए जिला प्रशासन को मौके पर पहुंचकर तुरंत वास्तविक सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। निर्देश के बाद जिला कलेक्टर डॉ. खुशाल यादव एवं पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता बौंली चिकित्सालय पहुंची एवं पोस्टमार्टम के समय उपस्थित मृतक के परिजनों को संवेदना प्रकट करते हुए प्रशासन की ओर से पूरा सहयोग करने का आश्वासन दिया। उसके बाद जिला कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक ने दुर्घटना स्थल पर एक्सप्रेस-वे का भी दौरा किया। दोनों जिला अधिकारियों के साथ बौंली एसडीएम विनीता स्वामी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिनेश यादव एवं पुलिस उपाधीक्षक अंगद शर्मा भी मौजूद थे। सड़क दुर्घटना में मृतक परिवार को राजस्थान के कांग्रेस के पूर्व

- पूरा परिवार कार में सवार होकर सवाई माधोपुर त्रिनेत्र गणेश जी के मंदिर पर दर्शन करने जा रहा था
- हादसे पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा व कांग्रेस के पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने संवेदना प्रकट की

उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने भी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए प्रशासन को उनका पूरा सहयोग करने की अपील की है।

सीकर संवाददाता के अनुसार :- मृतकों में अनीता पत्नी मनीष शर्मा, संतोष पत्नी कैलाश शर्मा, कैलाश पुत्र रामअवतार शर्मा, पूनम पत्नी सतीश शर्मा, मनीष पुत्र रामावतार शर्मा व सतीश शर्मा हैं। वहीं एक्सीडेंट में घायल दो बच्चों को पहले बौंली के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया इसके बाद इन्हें जयपुर रेफर किया गया है। जानकारी अनुसार मृतक एक ही परिवार के है और वह सीकर बाईपास स्थित एक कॉलोनी में कई वर्षों से रहते थे। मूल रूप से मुकुंदगढ़ के निवासी थे, शवों को मुकुंदगढ़ ले जाया गया है।

मलीखेड़ा और बड़लियास क्षेत्र में बजरी का अवैध खनन जारी

पुलिस ने ओवरलोड अवैध बजरी ले जा रहे तीन ट्रैक्टर-ट्रॉली जब्त किये

मांडलगढ़ पुलिस ने बनास नदी से अवैध बजरी खनन कर परिवहन करते तीन ट्रैक्टर ट्रॉली जब्त किए।

मांडलगढ़, (निसं)। राज्य सरकार और जिला प्रशासन द्वारा खनन माफिया के खिलाफ बड़ा अभियान चला रखा है, लेकिन मांडलगढ़ और बडलियास इलाके में बजरी माफ़िया में पुलिस और प्रशासन का ख़ौफ़ ख़त्म होता जा रहा है। अभियान के दौरान मलीखेड़ा और बडलियास क्षेत्र की बनास नदी में बजरी का अवैध खनन और परिवहन धड़ल्ले से किया जा रहा है और ट्रैक्टर-ट्रॉली डम्पर व ट्रैलर में बजरी परिवहन बदस्तूर जारी है। पुलिस गश्त के दौरान मांडलगढ़ थानाधिकारी शिवचरण ने अवैध बजरी भरे तीन ट्रैक्टर ट्रॉली को जब्त कर थाने में लाकर जब्त किया।

जानकारी के मुताबिक सराणा से केकड़िया दुर्गम सड़क मार्ग पर पुलिस को देख तीन चालक ट्रैक्टर छोड़ कर भाग गए। एक चालक बजरी भरे ट्रैक्टर को तेज रफ़्तार से भगा ले गया। हड़बड़ाहट में बजरी भरी ट्रैक्टर ट्रॉली पलट गई। हादसे के बाद ट्रैक्टर चालक वो भी मौक़े से फरार हो गया। पुलिस ने

- पुलिस कार्रवाई के दौरान मौक़े से तीन ट्रैक्टर चालक फरार हो गये
- पुलिस को देख एक चालक ने ट्रैक्टर को दौड़ाया और वह पलट गया

जब्त किए गए ट्रैक्टर चालकों के खिलाफ कार्रवाई के लिए खनिज विभाग को सूचित किया गया हैं, फोरमैन की रिपोर्ट पर अवैध बजरी खनन का केस दर्ज कर ओवरलोड बजरी परिवहन की भी कार्रवाई की जाएगी। वहीं खनन माफिया द्वारा भीलवाड़ा के पास बरदोड़ (हमीरगढ़) से रवन्ना टीपी से ट्रेलर, डम्पर में अंडरलोड बजरी भर बडलियास थाना क्षेत्र से उक्त वाहनों में ओवरलोड बजरी भर कर कोटा ले जाई जा रही है। खनिज विभाग की चैकिंग के दौरान रवन्ना की ढाल होने से बजरी माफ़िया का खेल पकड़ में नहीं आता हैं। रविवार को एक ट्रेलर का रवन्ना (टी पी) सुबह 10:46 पर बजरी स्टॉक हमीरगढ़ से जरनेट किया गया और उक्त वाहन दोपहर एक बजे 40 किलोमीटर बडलियास क्षेत्र में लाकर ओवरलोड बजरी भरकर कोटा की ओर निकल गया, लेकिन किसी के पकड़ में नहीं आ सका।

वहीं इस रवन्ना (टी पी), से ट्रेलर, डम्पर दो बार इस क्षेत्र से बजरी आसानी से भरकर ले जाते हैं जिससे राजस्व का चूना लगने के साथ पुलिस और प्रशासन की आंखों में धूल झोंकी जा रही हैं। मांडलगढ़ थाना पुलिस ने आज बजरी माफ़िया पर शिकंजा कस डाला। मांडलगढ़ पुलिस के मुताबिक बनास नदी से अवैध खनन कर बजरी परिवहन करते जब्त किए 3 ट्रैक्टर ट्रॉली के खिलाफ खनिज विभाग केस दर्ज करा कर जुर्माना वसूलेगा।ओर परिवहन विभाग ओवरलोड बजरी का जुर्माना करेगा।

इंडियन कोस्टगार्ड परीक्षा में फर्जीवाड़े का मास्टर माइंड चिड़ावा का निकला

कोटा में शांतिभंग के आरोप में गिरफ्तार किए छह आरोपियों से पूरे फर्जीवाड़े का खुलासा हुआ

झुंझुनूं, (निसं)। इंडियन कोस्ट गार्ड की परीक्षा सीजीपीईटी में फर्जीवाड़े का मास्टरमाइंड राजस्थान का एक कोचिंग संचालक है। पिछले महीने 20 और 21 अप्रेल को देशभर में नाविक की पोस्ट के लिए परीक्षा हुई थी। एग्जाम के करीब 9 दिन बाद कोटा में शांतिभंग के आरोप में गिरफ्तार किए 6 आरोपियों से पूरे फर्जीवाड़े का खुलासा हुआ। इन्होंने ही झुंझुनूं के चिड़ावा में कोचिंग चला रहे मास्टरमाइंड की भी जानकारी दी। यह कोचिंग आर्मी के अलग-अलग एग्जामों की तैयारी करवाती है। आरोपी कोचिंग संचालक अभी फरार है।

जानकारी के अनुसार कोटा शहर के आईटी पार्क के पास पुलिस ने 30 अप्रैल को छह युवकों को शांतिभंग के आरोप में पकड़ा था। युवकों के मोबाइल की जांच में कई स्टूडेंट के परमिशन कार्ड मिले थे। सख्ती से पूछताछ करने पर उन्होंने सीजीईपीटी एग्जाम के फर्जीवाड़े का खुलासा हुआ। मास्टरमाइंड कोचिंग संचालक ने पेपर सॉल्व, कंप्यूटर को रिमोर्ट एक्सेस पर लेने और अभ्यर्थियों के कंप्यूटर हैक करने के लिए अलग-अलग टीम लगा रखी थी। कोटा के विज्ञान नगर थाना

आरोपी कोचिंग संचालक।

पुलिस ने मामले में अशोक जाट (38) निवासी बांगड़वा थाना हमीरवास तहसील राजगढ़ (चूरू) और संदीप (29) बरालू थाना लोहारू भिवानी हरियाणा थे। इनके अलावा प्रतीक गजराज (24) निवासी पालोता थाना सिंघाना रणवीर सिंह (32) निवासी कांट थाना धनूरी, अशोक (29) निवासी गोपाल की ढाणी थाना पचेरी और राहुल जाखड़ (21) धमोरा थाना गुढ़ागौड़जी, झुंझुनूं को पकड़ा था। इस खेल का मास्टरमाइंड अमित भास्कर है, जो चिड़ावा में बौधायन एकेडमी नाम से कोचिंग सेंटर का मालिक है। वह कोचिंग में कॉम्पिटिशन एग्जाम इंडियन आर्मी, इंडियन कोस्ट गार्ड, सिविल एग्जाम की तैयारी करवाता है। उसकी तलाश की जा रही है।

कोटा की एएसपी और मामले की जांच अधिकारी नियति शर्मा ने बताया कि सभी आरोपी मास्टरमाइंड अमित भास्कर से पिछले दो साल से संपर्क में थे। गिरफ्तार आरोपी रणवीर अमित भास्कर की कोचिंग में फिजिक्स, अशोक मैथ्स, अशोक जाट जीके पढ़ाता है। एक आरोपी राहुल स्टूडेंट है जो कॉम्पिटिशन की तैयारी कर रहा है। मास्टर माइंड ने पेपर सॉल्व करने के लिए कोटा के आईटी पार्क के पास स्थित कंप्यूटर लैब को किराए पर लिया था। हालांकि सीजीईपीटी का कोटा में सेंटर नहीं था। आरोपी युवकों ने यहां लैब में बैठकर पेपर सॉल्व किया था। आरोपियों ने बताया कि कंप्यूटर को हैक करने और लैब में कंप्यूटर को रिमोर्ट एक्सेस व ऐप डाउनलोड करने के लिए अलग

- इन्होंने ही झुंझुनूं के चिड़ावा में कोचिंग चला रहे मास्टरमाइंड की भी जानकारी दी
- पुलिस ने बताया कि सभी आरोपी मास्टरमाइंड अमित भास्कर से पिछले दो साल से संपर्क में थे

टीम काम कर रही थी, जिनका काम के हिसाब से कमीशन सेट था। उनका पेपर सॉल्व करने का काम था।पुलिस पूछताछ में सामने आया बताया कि कोटा में बैठकर आरोपियों ने 30 अभ्यर्थियों के पेपर सॉल्व किए। जो अभ्यर्थी थे। उनका सेंटर जयपुर और शिमला आया था। पुलिस को यह भी अंदेशा है कि आरोपियों के गिरोह ने अन्य जगहों पर भी कंप्यूटर लैब किराए पर लेकर इसी तरीके से पेपर सॉल्व किए थे। पूरा खुलासा गिरोह के सरगना अमित भास्कर के पकड़ में आने के बाद ही होने की उम्मीद है।

गार्गी पुरस्कार आवेदन के लिए एक और मौका मिला

बीकानेर, (निसं)। गार्गी पुरस्कार योजना की पहली व दूसरी किश्त तथा बालिका प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए वर्ष 2023-24 में अभी तक प्रदेश की 96 हजार बालिकाओं ने आवेदन नहीं किया है। ऐसे में बालिका शिक्षा फाउंडेशन ने आवेदन का एक और मौका देते हुए पोर्टल को 31 मई तक खोल दिया है। बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन के लिए सरकार ने यह पुरस्कार योजना शुरू कर रखी है। इसमें स्कूली प्रतिभावान छात्राओं की सूची बालिका शिक्षा फाउंडेशन को उपलब्ध कराई जाती है। साथ ही पुरस्कार के लिए उनसे ऑनलाइन आवेदन लिए जाते हैं। इस बार 96 हजार 997 बालिकाओं ने आवेदन नहीं किया है। इस वजह से पुरस्कार की पहली और दूसरी किश्त तथा बालिका प्रोत्साहन राशि जारी करने में विलंब हो रहा है। अब वंचित छात्राएं 31 मई तक शाला दर्पण पोर्टल पर आवेदन कर सकती है।

बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1998 से गार्गी पुरस्कार व वर्ष 2008 से बालिका प्रोत्साहन पुरस्कार हर साल वर्ष वसंत पंचमी पर दिए जाते हैं। गार्गी के लिए सीनियर हायर सैकंडरी में 75 प्रतिशत या इससे अंक पाने वाली छात्राओं का चयन किया जाता है। उन्हें पांच हजार रुपए की राशि पुरस्कार में दी जाती है। बालिका प्रोत्साहन योजना के तहत दसवीं में 75 प्रतिशत या फिर इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को तीन हजार रुपए दिए जाते हैं।

वेतन नहीं दिए जाने से परेशान युवक ने आत्महत्या की

सीटकवर बनाने की फैक्ट्री में काम करता था युवक

भीलवाड़ा, (निसं)। सीट कवर बनाने की फैक्ट्री में काम करने वाले युवक ने फैक्ट्री मालिक द्वारा लम्बे समय से सैलेरी नही दिए से परेशान होकर युवक ने आत्महत्या कर ली।

जानकारी के अनुसार कालू पिता बरदा बैरवा निवासी पितास शहर के बडला चौराहा क्षेत्र में गोपालपुरा रोड़ स्थित अशोक बजाज की फैक्ट्री में सीटकवर बनाने का काम करता था। कालू को 50 हजार रुपए महीने की सैलेरी पर बात करके फैक्ट्री मालिक द्वारा 25 हजार की सैलेरी दी जाती थी और काम छोड़ ना दे इस भय के चलते 25 हजार की राशि रोक ली जाती थी। कालू द्वारा बार अपने रोके गए पैसे मांगने पर फैक्ट्री मालिक द्वारा टालमटोल कर दिया जाता था और ना हीं उसे अन्य कही काम करने दिया जाता था। फैक्ट्री मालिक की तानाशाही से परेशान कालू ने सुसाइड से पहले वीडियो बना कर सोशल मीडिया पर वायरल किया। जिसमें उसने आप बीती बताते हुए फैक्ट्री मालिक अशोक बजाज को

मृतक युवक कालू।

अपनी मौत का जिम्मेदार बताया है। युवक की मौत से बैरवा समाज के आक्रोश का माहौल है।

समाज के जिलाध्यक्ष रामेश्वरलाल बैरवा ने बताया कि कालू को आर्थिक तंगी में डालकर आत्महत्या के लिए मजबूर किया गया है। कालू के दो बच्चे और पत्नी है जिनका उसके जाने के बाद अन्य कोई सहारा नहीं है। ऐसे में समाजजनों ने मृतक के आश्रितों को उचित मुआवजा और सैलेरी के बाकी पैसे दिए जाने की मांग करते हुए एमजी हॉस्पिटल की मोर्चरी के बाहर प्रदर्शन शुरू कर दिया। जिलाध्यक्ष बैरवा का कहना था कि जब तक मुआवजा राशि से बाकी सैलेरी नहीं दी जाती है तब तक मृतक के शव का पोस्टमार्टम नही करवाया जायेगा। देर शाम तक पुलिस और प्रशानिक अधिकारी समझाइश के प्रयासों में जुटे हुए थे।

- 50 हजार रुपए महीने की सैलेरी पर बात कर फैक्ट्री मालिक 25 हजार ही देता था
- फैक्ट्री मालिक की तानाशाही से परेशान युवक ने सुसाइड से पहले वीडियो बना वायरल किया

विधायक बाबूसिंह राठौड़ पर एक और एफआईआर दर्ज

जोधपुर, (कासं)। शेरगढ़ से भाजपा विधायक बाबूसिंह राठौड़ पर बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स के एसआई ने मामला दर्ज कराया है। जोधपुर के चामू थाने में दर्ज हुए मामले की जांच सीआईडी-सीबी करेगी। इस मामले में चामू थाना एसएचओ ओमप्रकाश की ओर से एक मामला पहले से दर्ज है।

ग्रामीण एसपी धर्मेंद्र यादव ने बताया कि बीएसएफ जैसलमेर में तैनात एसआई विकास कुमार ने थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई है। रिपोर्ट में बताया कि 26 अप्रैल को उसकी ड्यूटी नाथडाऊ गांव के मतदान केंद्र पर लगी हुई थी। वहां कुछ मतदाता अपना फोटो पहचान पत्र नहीं लेकर आए थे। उन्होंने मतदाताओं को अपनी फोटो आईडी लाने के लिए कहा था। इस पर उन लोगों ने वहां हंगामा शुरू कर दिया। कुछ ही देर में वहां पर विधायक बाबू सिंह भी आ गए और हंगामा करने लगे। जवानों ने उन्हें रोकने का प्रयास किया, लेकिन भीड़ मेरी तरफ बढ़ने लगी। मुझे भीड़ की ओर से मेरे पर हमला करने का आभास हुआ। विधायक ने मेरे साथ बूथ पर अपमानजनक व्यवहार किया। इसके बाद वह जबरन बूथ के अंदर घुसे और पीठासीन अधिकारी बालू सिंह खींची से भी बदतमीजी की थी। बाबू सिंह ने इस मामले को लेकर माफी भी मांगी थी।

- विधायक पर बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स के एसआई ने मामला दर्ज कराया है

साथ ही उन्होंने आरोप लगाए थे कि बीएसएफ जवान नशे थे। वे मतदान करने आ रहे ग्रामीणों को बेवजह रोक रहे थे।

विधायक बाबू सिंह के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया है। इसमें धारा 171 के अनुसार, चुनाव परिणाम को प्रभावित करने के इरादे से किया गया कृत्य करता है तो उस पर जुर्माना लगता है। 171 एफ के तहत मतदान में अनुचित प्रभाव डालता है तो 1 साल की जेल का प्रावधान है। धारा 132 में किसी सैनिक को विद्रोह के लिए उकसाना भी अपराध है। इसमें भी कारावास का प्रावधान है।

शेरगढ़ विधायक बाबू सिंह ने कहा कि इस मामले की स्पष्ट जांच होगी तो सच सामने आ जाएगा। जवान नशे में था तथा वोटिंग के दिन मतदाताओं से बदतमीजी कर रहा था। इसी का विरोध जताया था। गौरतलब है कि विधायक बाबूसिंह का एक वींडियो सामने आया था जिसमें वे चुनाव अधिकारी को धमकाते नजर आ रहे थे।

राजस्थान के 24 शहरों में 1.92 लाख विद्यार्थियों ने नीट-यूजी की परीक्षा दी

एआई सुरक्षा के बीच देश में 23.5 लाख विद्यार्थियों ने दी नीट-यूजी परीक्षा

कोटा, (निसं)। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी, 2024 रविवार को दोपहर 2 से शाम 5:20 बजे तक आधुनिक तकनीक के कड़े सुरक्षा घेरे में शांतिपूर्वक आयोजित की गई, जिसमें देश के 557 शहरों में 23.50 लाख (98 प्रतिशत) परीक्षार्थियों ने पेन-पेपर मोड में पेपर दिया। विदेश के 14 शहरों में भी यह परीक्षा हुई। इसका रिजल्ट 14 जून को घोषित किया जायेगा। एनटीए के जोनल कॉर्डिनेटर प्रदीपसिंह गौड़ ने बताया कि नीट-यूजी परीक्षा के लिये राजस्थान के 24 शहरों के विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस द्वारा टेबलेट स्क्रीन पर परीक्षार्थी का डेटाबेस आ जाने से बायोमेट्रिक स्केनिंग तेजी से हुई। इस तकनीक से परीक्षार्थियों को कोई असुविधा नहीं हुई। जूमर के माध्यम से कड़ी सुरक्षा के बीच पेपर हुआ।

उन्होंने बताया कि राज्य में इस वर्ष

कोटा में नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा ''नीट'' आयोजित हुई।

1.97 लाख पंजीकृत परीक्षार्थियों में से 1.92 लाख (97.5 प्रतिशत) पेपर देने पहुंचे। कोटा में 27,456 पंजीकृत परीक्षार्थियों से 27,119 ने 56 परीक्षा केंद्रों पर पेपर दिया। कोटा, जयपुर, जोधपुर, अजमेर, उदयपुर, भरतपुर, अलवर, बीकानेर, बांसवाडा, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, बाड़मेर, बारां, झुंझनू, सीकर, सिरोही, सवाईमाधोपुर, पाली, नागौर, चुरू, दौसा, धौलपुर, करौली के परीक्षा केंद्रों पर सुबह से शाम तक विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की हलचल बनी रही। प्रतिवर्ष की तरह इस बार भी कोटा के परीक्षा केंद्रों पर गर्ल्स परीक्षार्थियों की संख्या सर्वाधिक रही। इस वर्ष भी डॉक्टर बनने की दौड में बेटियां आगे रहीं। नीट-यूजी 2024 के लिये 24 लाख 6 हजार परीक्षार्थी पंजीकृत हुये, जिनमें 13.63 लाख छात्रायें एवं 10.18 लाख छात्र शामिल हैं। जबकि गत वर्ष इस परीक्षा में 20,87,449 पंजीकृत हुये थे। इस वर्ष 2,94,384 परीक्षार्थी बढ़े हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया के अनुसार, इस वर्ष देश के 706 सरकारी व प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस की अधिकृत सीटें बढ़कर 1,08,940 हो गई हैं, जो 2014 में 51,348 थीं। इस तरह 10 वर्षों में 57,591 एमबीबीएस की सीटों में वृद्धि हुई है। इसी तरह बीडीएस के 323 कॉलेज की 28,088, आयुष पाठ्यक्रम की कुल 55,851 सीटों पर भी नीट-यूजी में क्वालिफाई विद्यार्थियों को अवसर मिलेगा।

फिजिक्स-बॉयो आसान, कैमिस्ट्री कठिन रही

कोटा, (निसं)। देश की सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्ष नीट यूजी 2024 रविवार को ऑफलाइन पेन-पेपर मोड पर नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा आयोजित की गई।

एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक डॉ. बृजेश माहेश्वरी ने बताया कि नीट का पेपर एनसीईआरटी बेस्ड रहा। फिजिक्स, बॉयोलॉजी आसान रही जबकि कैमिस्ट्री कठिन रही। इस बार कैमिस्ट्री का पेपर ही रैंक निर्धारित करेगा। कैमिस्ट्री में आयोनिक इक्विलीब्रियम से कोई प्रश्न नहीं पूछा गया और इस वर्ष सिलेबस में जोड़े गए फिजीकल कैमिस्ट्री से 5 प्रश्न आए थे। जबकि इस वर्ष सिलेबस में जोड़े गए टॉपिक एक्सपीरिमेन्टल स्किल्स से एक भी प्रश्न नहीं पूछा गया। बॉयोलॉजी में कुछ प्रश्न ओल्ड एनसीईआरटी से एवं कुछ प्रश्न एनसीईआरटी के सिलेबस से बाहर से भी पूछे गए। एलन मेगा लाइव स्ट्रीम से जुड़े स्टूडेंट्स-एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट की ओर से नीट-यूजी परीक्षा में शामिल हो रहे विद्यार्थियों के लिए एलन मेगा लाइव स्ट्रीम इवेंट किया गया।

यहां पेपर के तुरंत बाद एलन के निदेशक डॉ. बृजेश माहेश्वरी एवं एलन एक्सपर्ट फैकल्टी ने पेपर के सभी सवालों पर बारी-बारी से चर्चा की। फिजिक्स-फिजिक्स का पेपर पिछले वर्ष की तुलना में ओवरऑल कठिन रहा। कई सवालों में कैलकुलेशन कठिन रही। सभी प्रश्न एलन के मॉड्यूल्स से पूछे गए हैं। कक्षावार में 11वीं कक्षा के सिलेबस से 20 एवं 12वीं कक्षा के सिलेबस से 30 प्रश्न पूछे गए थे। इस वर्ष सिलेबस में जोड़े गए टॉपिक एक्सपीरिमेन्टल स्किल्स से एक भी प्रश्न नहीं पूछा गया।

मैकेनिक्स से 15, थर्मल फिजिक्स से तीन एवं एसएचएम एंड वेव्ज से दो आसान प्रश्न आए। इसी प्रकार इलेक्ट्रोडाइनेमिक्स से 17 कठिन प्रश्न आए। ऑप्टिक्स से चार एवं मॉडर्न फिजिक्स एंड इलेक्ट्रोनिक्स नौ अच्छे स्तर के प्रश्न पूछे गए। सिंगल करेक्ट 42, मल्टीपल करेक्ट 3, असर्शन एंड रीजनिंग का एक, स्टेटमेंट टाइप के दो एवं मैच द कॉलम के दो प्रश्न पूछे गए। कैमिस्ट्री-कैमिस्ट्री का पेपर पिछले वर्ष की तुलना में थोड़ा कठिन रहा। ओवरऑल पेपर का स्तर अच्छा था।

हनुमान बेनीवाल और बाबूसिंह राठौड़ पर मुकदमें दर्ज हुए

राजस्थान में अब तक तीन विधायकों पर चुनावों में बाधा पहुंचाने के मामले हुए दर्ज

- बाबूसिंह पर दर्ज मुकदमे की धाराओं में कारावास का प्रावधान
- सभी की जांच सीआईडी सीबी करेगी

जयपुर, (का.प्र.)। राजस्थान में लोकसभा चुनावों के मतदान के बाद अब तक तीन विधायकों और एक उम्मीदवार पर मुकदमा दर्ज किया जा चुका है। नए मुकदमों के तहत रविवार को आरएलपी विधायक हनुमान बेनीवाल और भाजपा विधायक बाबूसिंह राठौड़ पर चुनाव में बाधा पहुंचाने का मुक़दमा दर्ज किया गया है। इससे पहले शिव विधायक रविंद्र सिंह भाटी पर बालोतरा में धरना देने पर और जोधपुर से कांग्रेस उम्मीदवार करण सिंह पर भी मुकदमा दर्ज हो चुका है।

राजस्थान के नागौर जिले के कुचेरा थाना क्षेत्र में खींवसर विधायक और लोकसभा प्रत्याशी हनुमान बेनीवाल के खिलाफ मामला दर्ज हुआ है। आरोप है कि बेनीवाल ने 19 अप्रैल को बिना अनुमति जनता को संबोधित किया। ऐसे में बेनीवाल के खिलाफ धारा 144 का उल्लंघन करने का आरोप लगाते हुए मामला दर्ज हुआ है।

कुचेरा थाना अधिकारी मुकेश कुमार ने बताया कि 19 अप्रैल को सुबह कुचेरा में मतदान के दौरान भाजपा और आरएलपी के कार्यकर्ता आपस में भिड़ गए थे। इसके बाद देर शाम खींवसर विधायक हनुमान बेनीवाल ने सार्वजनिक स्थान पर बिना अनुमति के जनसभा को संबोधित किया था। इसको लेकर भाजपा प्रत्याशी ज्योति मिर्धा ने पर्यवेक्षक को शिकायत दी। इसके बाद पर्यवेक्षक ने इसे जिला निर्वाचन अधिकारी को भेजा और जिला निर्वाचन अधिकारी ने एसपी नारायण टोगस को निर्देश दिया। एसपी के निर्देश पर रविवार को मुकदमा दर्ज किया गया।

दूसरी ओर 26 अप्रैल को मतदान के दिन शेरगढ़ विधानसभा के नाथडाऊ गांव के मतदान केन्द्र पर हुए विवाद प्रकरण में विधायक बाबू सिंह राठौड़ की मुसीबतें बढ़ गई है। घटना के दिन जहां पुलिस ने इस मामले को लेकर धारा 189 में रपट दर्ज की थी, अब इस मामले में बीएसएफ जवान की ओर से बाबू सिंह के खिलाफ दी गई रिपोर्ट पर चामू थाने में मामला दर्ज हो गया है। बीएसएफ जैसलमेर में कार्यरत उप निरीक्षक विकास कुमार की रिपोर्ट पर यह मामला दर्ज हुआ है, जिसमें विकास कुमार ने बताया कि मतदान के दिन जो लोग फोटो पहचान पत्र नहीं लेकर आ रहे थे, हमने उन्हें पहचान पत्र लाने को कहा। इस दौरान एक व्यक्ति ने वहां शोर गुल किया। उसके कुछ समय बाद विधायक बाबू सिंह राठौड़ 10-12 लोगों के साथ वहां पहुंचे। हमारे जवानों ने उन्हें रोकने का प्रयास किया। मैं खुद वहां मौजूद था। वो मुझसे अभद्र व्यवहार करने लगे। मेरी तरफ भीड़ के साथ बढ़ते चले आ रहे थे। ऐसा लग रहा था, जैसे वह मेरे पर हमला करना शुरू कर देंगे। मैंने कुछ बोलने की कोशिश की लेकिन वह सुन नहीं रहे थे। उन्होंने मुझसे बहुत अभद्र व्यवहार किया और हमला करने की कोशिश की। उसके बाद पोलिंग बूथ में जवानों की ओर से रोकने पर भी वो जबरन अंदर प्रवेश कर गए। वहां पीठासीन अधिकारी बालू सिंह खींची के साथ भी उन्होंने अभद्र व्यवहार किया। उन पर हाथ उठाने की कोशिश की। इस दौरान मौजूद डीएसपी गजेंद्र सिंह ने विधायक को रोकने की कोशिश की और उन्हें बाहर लेकर गए। बीएसएफ के सब इंस्पेक्टर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि विधायक का व्यवहार अपमानजनक था।

इस मामले पर बाबू सिंह राठौड़ ने कुछ दिनों पहले सार्वजनिक रूप से यह कहते हुए माफी मांगी कि इस व्यवहार से किसी को पीड़ा हुई तो मैं क्षमा प्रार्थी हूं, लेकिन बाबू सिंह राठौड़ ने अपने आरोप नहीं बदले।

विधायक के खिलाफ पुलिस ने भारतीय दंड संहिता की धारा 352, 504,506,186,179,132,171 (ग) और 171 (एफ) में मामला दर्ज किया है। धारा 171 के अनुसार कोई व्यक्ति चुनाव परिणाम को प्रभावित करने के इरादे से कुछ करता है तो उस पर जुर्माना लगता है। 171 एफ के तहत मतदान में अनुचित प्रभाव डालता है तो एक साल के कारावास की सजा का प्रावधान है। यह गैर संज्ञेय अपराध की श्रेणी है। धारा 132 में किसी सैनिक को विद्रोह के लिए उकसाना भी अपराध है। कारावास का प्रावधान है। अन्य धाराएं भी डराने, धमकाने से जुड़ी हुई है।

जेके लोन हॉस्पिटल में प्लाज्मा चुराता हुआ लैब टेक्नीशियन पकड़ा

- मामले की जांच के लिए कमेटी गठित की
- ब्लड बैंक में काम करने वाले कर्मचारियों ने आरोपी को रंगे हाथों पकड़ा
- आरोपी की कार से 110 यूनिट प्लाज्मा मिलासंबोधित किया

जयपुर। राजधानी के जेके लोन हॉस्पिटल में ब्लड बैंक से प्लाज्मा चुराने का मामला सामने आया है। ब्लड बैंक में काम करने वाला लैब टेक्नीशियन लंबे समय से प्लाज्मा चुरा रहा था। शनिवार को ब्लड बैंक में काम करने वाले दूसरे कर्मचारियों ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया।

ब्लड बैंक इंचार्ज ने जब उससे पूछताछ की तो उसने प्लाज्मा चुराने की बात कबूल कर ली। इसके बाद बड़ी मात्रा में चुराया हुआ प्लाज्मा फिर से जेके लोन हॉस्पिटल में जमा भी कराया। उधर, मामला सामने आने के बाद जेके लोन अस्पताल प्रशासन ने कमेटी गठित कर आरोपी लैब टेक्नीशियन के खिलाफ जांच शुरू कर दी है।

जेके लोन हॉस्पिटल में ब्लड बैंक के इंचार्ज डॉक्टर सत्येंद्र सिंह ने बताया कि लैब टेक्नीशियन कृष्णकांत कटारिया पिछले लंबे वक्त से प्लाज्मा चुरा रहा था। शनिवार को ही लैब में काम करने वाले दूसरे कर्मचारियों ने उसे रंगे हाथों पकड़ा था। इसके बाद जब इस पूरे मामले की शुरुआती जांच की गई तो इसमें कृष्णकांत दोषी पाया गया। फिलहाल फिजिकल वेरिफिकेशन किया जा रहा है, ताकि यह पता लग सके कि कृष्णकांत कब से और कितनी यूनिट प्लाज्मा चुरा चुका है। उसके बाद ही इस पूरे मामले पर कोई अंतिम फैसला लिया जा सकेगा।

वहीं मामले की जांच के लिए कमेटी का गठन भी कर दिया गया है, जिसमें ब्लड बैंक के नर्सिंग ऑफिसर, लैब टेक्नीशियन समेत अन्य अधिकारी शामिल हैं। कमेटी अब इस पूरे मामले की जांच रिपोर्ट तैयार कर हॉस्पिटल अधीक्षक को सौंपेगी। कृष्णकांत के दोषी पाए जाने पर लीगल राय के आधार पर उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी, क्योंकि इस तरह से प्लाज्मा चुराने का यह पहला मामला सामने आया है, जो काफी गंभीर है।

उधर, सूत्रों के अनुसार जेके लोन हॉस्पिटल का लैब टेक्नीशियन कृष्ण कांत कटारिया पिछले लंबे वक्त से प्लाज्मा चुरा कर निजी कंपनियों को बेच रहा था। शनिवार को भी उसकी कार से करीब 110 यूनिट प्लाज्मा बरामद हुआ था। हालांकि जेके लोन हॉस्पिटल प्रशासन द्वारा इसकी पुष्टि नहीं की गई है और न ही कृष्णकांत के खिलाफ अब तक कोई शिकायत दर्ज करवाई गई है।

ताला तोड़कर चोरी करने वाली गैंग का शातिर चोर गिरफ्तार

जयपुर। ब्रह्मपुरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मकानों और थडियों के ताला तोड़कर चोरी करने वाली गैंग के शातिर चोर को गिरफ्तार किया है। उसके पास से चोरी की बाइक, दो सिलेंडर, मोबाइल सहित अन्य सामान जब्त किए गए है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर उत्तर राशि डोगरा डूडी ने बताया कि ब्रह्मपुरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मकानों और थडियों के ताला तोड़कर चोरी करने वाली गैंग के शातिर चोर अनिल कुमार योगी उर्फ बंटी निवासी मनोहरपुर जयपुर हाल ब्रह्मपुरी को गिरफ्तार किया है। आरोपी अनिल कुमार योगी उर्फ बंटी और उसके अन्य साथी भी शराब पीने के आदि है।

चतुर्वेदी ने तेलंगाना क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी को जिताने का आव्हान किया

- नारायण पंचारिया ने तेलंगाना में सर्व ब्राह्मण महासभा सम्मेलन को संबोधित किया

जयपुर, (का.सं.)। लोकसभा चुनाव प्रचार के चौथे चरण के लिए भाजपा प्रदेश पदाधिकारी विभिन्न लोकसभा क्षेत्रों में घर-घर जाकर जनसंपर्क, रैलियों और सभाएं कर रहे हैं। भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष नारायण पंचारिया ने तेलंगाना की चेवेल्ला लोकसभा क्षेत्र में बूथ स्तर से लेकर मंडल और ब्लॉक में घर-घर जनसंपर्क किया। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आगामी 10 मई को होने वाली विशाल जनसभा की तैयारियों को लेकर आमजन से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने की अपील की।

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष नारायण पंचारिया ने बताया कि चेवेल्ला लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत हैदराबाद शहर की तीन विधानसभा और ग्रामीण की चार विधानसभाएं शामिल है। जनसंपर्क के दौरान राजेंद्र नगर विधानसभा में आई माता मंदिर में दर्शन करके राजस्थानी प्रवासियों से संपर्क किया और अधिक से अधिक मतदान करने का आग्रह किया। वहीं अतापुर में सर्व ब्राह्मण महासभा की ओर से आयोजित सम्मेलन में भाग लेकर भाजपा के पक्ष में अधिक से अधिक मतदान करने की अपील की। भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी ने तेलंगाना के सिकंदराबाद लोकसभा क्षेत्र की विभिन्न विधानसभाओं में जनसंपर्क कर भाजपा के पक्ष में मतदान करने की अपील की। वहीं सिकंदराबाद लोकसभा क्षेत्र के खैरताबाद में वाहन रैली निकालकर भाजपा प्रत्याशी को अधिक से अधिक वोटों से जिताने की अपील की। भाजपा के प्रदेश महामंत्री दामोदर अग्रवाल बीते छह दिनों से तेलंगाना के निजामाबाद लोकसभा क्षेत्र में चुनाव प्रचार का जिम्मा संभाले हुए है। इस दौरान वे प्रवासी राजस्थानियों से जनसंपर्क कर लोकसभा प्रत्याशी धर्मपुरी अरविंद के समर्थन में अधिक से अधिक मतदान की अपील कर रहे है। प्रभु श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के बाद देश की जनता में भाजपा के प्रति बेहद उत्साह का माहौल है। ऐसे में प्रदेश की जनता निश्चित रूप से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार भाजपा सरकार बनाने का मन बना चुकी है।

दिल्ली की सभी सात लोकसभा सीटें जीतेगी भाजपा : भजनलाल

- मुख्यमंत्री शर्मा ने सम्मेलन में साध्वी अणिमाश्री ठाणा, साध्वी संगीतश्री ठाणा से भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया

नई दिल्ली/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को पूर्वी दिल्ली के ओसवाल भवन में आचार्य महाप्रज्ञ के 15वें महाप्रयाण दिवस पर आयोजित सामाजिक सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि जैन समाज ने देश को दिशा दिखाने का सराहनीय कार्य किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जैन समाज व साधु-संतों के साथ गहरा रिश्ता रहा है। मोदी के लिए जैन समाज उनके परिवार जैसा है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में आने वाले जैन समाज के संत प्रदेश के लिए स्टेट गेस्ट होंगे। उनकी सेवा के लिए हम सदैव तत्पर हैं।

शर्मा ने सम्मेलन में बड़ी संख्या में उपस्थित जैन समाज के प्रवासी राजस्थानियों से कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी साधु-संतों के आशीर्वाद से देश सेवा का कार्य कर रहे हैं। उनके नेतृत्व में भारत को दुनिया का सिरमौर बनाना है। इसके लिए समाज को एकजुट होकर कार्य करना होगा। साधु-संतों की वाणी एवं आशीर्वाद से देश निरंतर मजबूत बन रहा है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 से पहले देश की स्थिति कैसी थी, इससे आप सभी अवगत हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 10 वर्षों में देश में अभूतपूर्व विकास हुआ है। मुख्यमंत्री ने पूर्वी दिल्ली से भाजपा प्रत्याशी हर्ष मल्होत्रा की जीत के लिए प्रवासी राजस्थानियों से अधिक से अधिक संख्या में वोट करने एवं समर्थन देने की अपील की। उन्होंने कहा कि मल्होत्रा भाजपा के संघर्षशील एवं कर्मशील कार्यकर्ता हैं, इनकी जीत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को मजबूती प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि दिल्ली की सभी 7 लोकसभा सीटें भारतीय जनता पार्टी ही जीतेगी।

मुख्यमंत्री शर्मा ने सम्मेलन में साध्वी अणिमाश्री ठाणा, साध्वी संगीतश्री ठाणा से भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में प्रवासी राजस्थानी एवं श्री जैन श्वेताम्बर तैरापंथी सभा के गणमान्य जन मौजूद रहे।

अपहरण करने वाले तीन आरोपित धरे

जयपुर। सांगानेर सदर थाना इलाके में रविवार की सुबह रुपये की वसूली करने के लिये एक व्यक्ति का अपहरण करने वाले तीन आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों से वारदात में प्रयुक्त एक कार भी बरामद की गई है। पुलिस कार्रवाई में अपहरण हुए व्यक्ति को भी सकुशल मुक्त करा लिया गया है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त (दक्षिण) जयपुर दिगंत आनंद ने बताया कि रविवार सुबह पुलिस कन्ट्रोल रूम में यह सूचना प्राप्त हुई थी कि एक कार में सवार कुछ लोग प्रमोद शर्मा नाम के एक व्यक्ति को गोनेर मोड़ राधा विहार कॉलोनी से अपहरण करके ले गये हैं। कार्रवाई करते हुए अपहृत व्यक्ति प्रमोद शर्मा को सकुशल हिण्डौन सिटी से मुक्त कराकर साथ ही रोहिताश निवासी हिंडौन सिटी जिला करौली, बृजेश तंवर निवासी हिण्डौन सिटी जिला करौली और बंटी गुर्जर निवासी बयाना जिला भरतपुर को गिरफ्तार किया गया।

आपसी विवाद के चलते एक्सीडेंट करवाकर महिला की हत्या करवाने का प्रयास

- लेन-देन और भूखंड विवाद के साथ अन्य कई विवाद के चलते दी सुपारी

जयपुर। शहर में पहली बार एक ऐसा मामला सामने आया है जिसमें वाहन से टक्कर मार कर महिला को जान से मारने के लिए सुपारी ली गई है। पुलिस ने इस मामले में सुपारी लेने वाले मुख्य सरगना सहित चार लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने सुपारी देने वाले आरोपी को भी दस्तयाब कर लिया है। सुपारी देने वाले और परिवादिया के बीच आपस में पूर्व से विवाद चल रहा था।

डीसीपी साउथ दिगत आनंद ने बताया कि 31 मार्च को सुबह करीब 10 से 11 बजे के बीच कावेरी पथ मानसरोवर में एक महिला को जान बूझकर वाहन से टक्कर मारने के मामले में उसके पुत्र हर्षवर्धन सिंह ने मानसरोवर थाने में मामला दर्ज करवाया था। रिपोर्ट में हर्षवर्धन ने बताया कि मेरी माताजी हमारे घर के बाहर गाडी में सामान रख रही थी तभी पूर्व से खड़ी गाडी नम्बर आरजे 45 सीवी 5723 के चालक ने जानबूझकर अपनी गाडी को चलाकर टक्कर मार दी जिससे उन्हें गंभीर चोटे आई।

डीसीपी ने बताया कि घटना के बाद मौके से सीसीटीवी कैमरों की रिकॉर्डिंग खंगाली गई। रिकॉर्डिंग में सामने आया कि गाड़ी नम्बर आरजे 45 सीवी 5723 का चालक काफी समय से पीड़िता के घर के आस पास अपने वाहन को खड़ा करके इंतजार कर रहा था। पीड़िता के घर से बाहर आने पर कार स्टार्ट कर तेजगति से उसे टक्कर मार देता है। कार के नम्बरों के आधार पर वाहन स्वामी श्रवण मीणा से पूछताछ की गई तो उसने बताया कि मेरा कुकु कार रेन्टल प्राइवेट लिमिटेड के नाम से ऑफिस है। 31 मार्च को मेरी कार नम्बर आरजे 45 सीवी5723 को अंशुमान मीणा किराए पर लेकर गया था।

मानसरोवर थाना पुलिस ने महिला की हत्या के लिए सुपारी देने वाले सहित चार बदमाशों को गिरफ्तार किया।

घटना में प्रयुक्त वाहन को बरामद किया गया। सूचना के आधार पर पीड़िता के मकान की रैकी करने तथा कार चलाकर उसे टक्कर मारने वाले तथा मारने की सुपारी देने वाली गिरोह के अपराधी मन्नालाल चौधरी, महेश जागिड उर्फ बॉक्सर, राहुल चौधरी, अशुमान मीणा को पकड़ कर पूछताछ की गई।

सुपारी देने वाले मन्नालाल का पीड़िता से लेन-देन और भूखंड विवाद के साथ अन्य कई मामलों को लेकर रंजिश चल रही थी। आरोपी मन्नालाल चौधरी पहले पीड़िता के पिता की गाडी चलाता था। उनके घर पर ही ज्यादातर रहता था। पूर्व में भी आरोपी मन्नालाल निवासी फागी ने पीड़िता की मां के गहने चुरा लिए थे, बाद में मुकदमा दर्ज होने पर वापस देकर राजीनामा कर लिया था। वर्तमान में पीड़िता व आरोपी मन्नालाल के बीच लेनदेन तथा भूखण्ड संबंधी विवाद था।

आरोपी मन्नालाल इसी कारण पीड़िता से रंजिश रखता था। आरोपी ने पीड़िता को जान से मारने तथा घटना को एक्सीडेन्ट का रूप देने की नियत से अपने जानकार महेश जागिंड उर्फ बॉक्सर से बात की। वारदात को अंजाम देने के लिए 1 लाख रुपए की सुपारी देना तय हुआ। आरोपी महेश जागिंड उर्फ बॉक्सर निवासी माधोराजपुरा ने मिलने वाले बदमाश राहुल चौधरी निवासी निमोडिया चाकसू, जितेन्द्र उर्फ गुडडू, अजय और अशुमान निवासी टोंक के साथ मिलकर घटना को अंजाम देने की योजना बनाई।

सौदा तय होने व खातों में रुपयों का स्थानान्तरण होने के उपरान्त मन्नालाल चौधरी ने महेश जागिड उर्फ बॉक्सर को पीड़िता का मकान दिखाकर रैकी करवाई। महेश जागिड उर्फ बॉक्सर ने अपनी गैग के अन्य साथियों को पीड़िता का मकान व स्वयं की रैकी करवाकर समय और टारगेट फिक्स किया। योजना के अनुसार घटना को अंजाम देने के लिए राहुल चौधरी और जितेन्द्र उर्फ गुडडू द्वारा मोटरसाईकिल पर रैकी की गई। योजना अनुसार आरोपियों ने घटना में काम में लेने के लिए कार प्रतापनगर से 12 घण्टे के लिए किराए पर लिया। रैकी करने के लिए मोटरसाइकिल पर आरोपी राहुल चौधरी तथा जितेन्द्र उर्फ गुडडू सवार हुए तथा टक्कर मारने के लिए कार में चालक अजय और अशुमान सवार होकर पीड़िता के निवास स्थान पर पहुंचे।

पीड़िता अपने मकान से बाहर आकर वाहन में सामान रखने के दौरान आरोपी अजय मीणा ने कार को दौडाकर परिवादिया को जान से मारने के लिए टक्कर मार दी लेकिन परिवादिया टक्कर से गाडी में गिरने के कारण घायल हो गई। हादसे के बाद आरोपी फरार हो गए।

"राजस्व प्रकरणों में निर्णय लेखन के आधारभूत तत्व" विषयक राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता होगी

प्रशासनिक अधिकारियों समेत आम नागरिकों से 5 जून तक रचनाएं आमंत्रित

- पंचवर्गीय श्रेणी में श्रेष्ठ लेखन के लिये प्रतिभाओं का होगा सम्मान

जयपुर/अजमेर (कासं)। राजस्व मंडल अजमेर की ओर से राजस्व न्यायालयों की कार्यप्रणाली में सुधार एवं नवाचार की दिशा में आयोजित "राजस्व प्रकरणों में निर्णय लेखन के आधारभूत तत्व" विषयक राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता के लिये प्रविष्टियां 5 जून तक आमंत्रित की गई हैं।

राजस्व मंडल के अध्यक्ष राजेश्वर सिंह के निर्देशानुसार आयोजित की जा रही इस प्रतियोगिता में राजस्थान राज्य के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, राजस्थान प्रशासनिक सेवा अधिकारी, राजस्व अधिकारी व कर्मचारी, अधिवक्ता एवं आम नागरिक श्रेणी में हिस्सा ले सकते हैं। हिन्दी अथवा अंग्रेजी में भेजे जाने वाले निबंध के लिये अधिकतम शब्द सीमा एक हजार निर्धारित की गई है। मूल निबंध रचना राजस्व मंडल को ई-मेल आईडी अथवा निबंधक, राजस्व मंडल अजमेर के पते पर भिजवायी जा सकेगी। अंतिम तिथि के पश्चात प्राप्त निबंधों को मूल्यांकन में शामिल नहीं किया जाएगा। राजस्व मंडल के निबंधक महावीर प्रसाद के अनुसार इन पांचों श्रेणियों के तहत मंडल को प्राप्त निबंधों की श्रेष्ठता के आधार पर राजस्व मंडल स्तर पर गठित समिति के स्तर से समीक्षा की जाकर प्रत्येक श्रेणी में प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान के लिए प्रतिभागियों का चयन किया जाएगा। चयनित प्रतिभागियों को राजस्व मंडल की ओर से आयोजित राज्य स्तरीय सम्मान समारोह में प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।

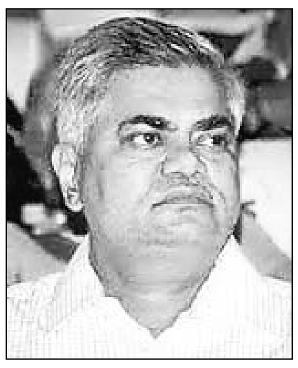

राजेश्वर सिंह

निबंध प्रतियोगिता के तहत प्राप्त रचनाओं का मूल्यांकन कर विभिन्न श्रेणियों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान के लिये प्रतिभागी का चयन करने के लिए राजस्व मंडल के स्तर पर एक समिति भी गठित कर दी गई है।

पांच जुआरी पकड़े

जयपुर। गलता गेट थाना पुलिस ने रविवार को कार्रवाई करते हुए सार्वजनिक स्थान पर जुआ खेल रहे पांच जुआरियों को गिरफ्तार किया है और उनके पास से चौदह हजार रुपये की जुआराशि भी बरामद की है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (उत्तर) राशि डोगरा डूडी ने बताया कि गलता गेट थाना पुलिस ने रविवार को मुखबिर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए सार्वजनिक स्थान पर जुआ खेल रहे सन्नी कुमार,गोविंद धामोनिया,सागर हडाला,चेतन राणावत और रवि जाजोटर को गिरफ्तार किया है और सभी रामगंज के रहने वाले है।

158वां स्थापना दिवस आज

जयपुर । राजकीय महाराजा बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय किशनपोल बाजार, छोटी चौपड़ का 158वां स्थापना दिवस 6 मई को प्रात: 9 बजे धूमधाम से मनाया जावेगा। प्राचार्य पुखराज आर्य ने बताया कि 158 वां स्थापना दिवस विद्यालय विकास प्रबंधन समिति एवं अखिल भारतीय नाटाणी परिवार समिति की ओर से मनाया जायेगा।

चने पर आयात शुल्क हटाकर किसानों को उचित मूल्य से वंचित करने वाला अन्यायकारी कदम : रामपाल जाट

- रामपाल जाट ने कहा कि "चने का घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य 5440 रुपए है। जबकि वर्तमान में चने की बाजार कीमत 5800 रु. प्रति क्विंटल कीमत है। ऐसे में समर्थन मूल्य पर चना बेचना किसानों के लिए घाटे का सौदा होगा।"
- जाट का कहना है कि "शुक्रवार की रात चना को आयात शुल्क मुक्त करने का प्रभाव शनिवार से आना आरंभ हो गया। इस विपणन मौसम में संभावित उत्पादित चने की मात्रा 121.61 लाख टन है। जिसे पिछले वर्ष की तुलना में 100.06 लाख टन कम बता कर सरकार ने यह अन्याय किया है।"

जयपुर । किसान महापंचायत के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामपाल जाट ने कहा कि चने पर आयात शुल्क हटाकर किसानों को उचित मूल्य से वंचित करने वाला कदम अन्यायकारी है। उन्होंने बताया कि चने का घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य 5440 रुपए है। चना बाजार में अप्रैल से आना शुरू हो गया था, उस समय तो चने के भाव 5200 रुपए प्रति क्विंटल थे। एक माह की अवधि में बढ़कर इसकी कीमत 5800 रुपए प्रति क्विंटल हो गई, जिससे किसानों को अनेक वर्षों के बाद इस वर्ष न्यूनतम समर्थन मूल्य से अधिक दाम प्राप्त होने का अवसर आया। सरकार ने चने के आयात शुल्क को घटाकर शून्य तक लाकर किसानों को चने के उचित मूल्य से भी वंचित करने का काम कर दिया है। यह भी उस समय जब किसान के घर में चने की पैदावार आना शुरू हुई है। यही कदम 6 महीने बाद उठाया जाता तो किसानों को उचित मूल्य प्राप्त होने से वंचित नहीं रहना पड़ता, किंतु सरकारों का रवैया किसान विरोधी होने के कारण किसानों के हितों के विरुद्ध आयात-

रामपाल जाट

निर्यात नीति का निर्धारण किया जाना सरकारों के स्वभाव में है। शुक्रवार की रात चना को आयात शुल्क मुक्त करने का प्रभाव शनिवार से आना आरंभ हो गया । इस विपणन मौसम में संभावित उत्पादित चने की मात्रा 121.61 लाख टन है। जिसे पिछले वर्ष की तुलना में 100.06 लाख टन कम बात कर सरकार ने यह अन्याय किया है।

रामपाल जाट ने कहा कि दाल उपभोक्ताओं को सरकार द्वारा 60 प्रति किलो वितरित की जा रही है । अभी भी घाटे का काम नहीं है, क्योंकि दाल बनाने के लिए एक चने के दो टुकड़े कर छिलका ही हटाना पड़ता है। इसमें से किसी भी प्रकार की क्षति नहीं होती, छिलका का उपयोग आटा में मिलने तथा पशु आहार के लिए होता है। यदि दो से अधिक टुकड़े हो जाए तो वह बेसन बनाने के काम आ जाते हैं। इस प्रकार 1 किलो चने की दाल बनाने पर अधिकतम खर्चा एक रुपए का आता है । फिर उपभोक्ताओं को सस्ती दाल देने के लिए सरकार सक्षम है।

रामपाल जाट ने कहा कि आश्चर्य है कि जब चना बाजार में न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम पर किसानों को बेचना पड़ता है, तब सरकार किसानों के हितों के संरक्षण के लिए तैयार नहीं होती है। इसीलिए चना उत्पादक प्रमुख राज्य मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र एवं राजस्थान के किसानों को सर्वाधिक घाटा उठाना पड़ता है। इसके लिए राजस्थान के किसानों ने तो सैकड़ों की संख्या में चने से भरे हुए ट्रैक्टरों को महीना तक सड़कों पर खड़ा रखकर आंदोलन किया तो भी सरकार का हृदय पसीजा नहीं था। सरकार किसानों को अपनी उपज को घाटे में बेचने के लिए विवश करती रहती है। जबकि संसद में वह किसी भी किसान को घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम दामों पर अपनी उपज बेचने के लिए विवश नहीं होने देने का वचन देती है। सरकार की कथनी और करनी में अंतर के कारण कटे पर नमक छिड़कने के समान किसानों को दर्द होता है। अच्छा यह हो सरकार आयात शुल्क मुक्त करने के आदेश को तत्काल वापस ले अन्यथा किसानों का विरोध सहने के लिए तैयार रहे।

हैंडीक्राफ्ट और हैंडलूम आर्टीजंस ने अपनी कला का प्रदर्शन किया

जयपुर । कला, संस्कृति और रचनात्मकता का उत्सव मनाने के लिए, फिक्की लेडीज ऑर्गेनाइजेशन (फ्लो) जयपुर चैप्टर द्वारा राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर (आरआईसी) में आयोजित दो दिवसीय जयपुर आर्ट फेयर का रविवार को पुरस्कार समारोह के साथ समापन हुआ। रंग दे जयपुर थीम पर आयोजित इस कला उत्सव में राजस्थान की जीवंत विरासत और संस्कृति की सुंदर प्रस्तुति देखने को मिली। वहीं हैंडीक्राफ्ट और हैंडलूम में ख्याति प्राप्त लगभग 88 कलाकारों को अपनी कला और रचनात्मकता प्रदर्शित करने के लिए भी एक मंच प्राप्त हुआ। इनमें करीब 15 राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता आर्टीजंस भी शामिल थे। पुरस्कार समारोह में विजेता प्रतिभागियों और पुरस्कार विजेता आर्टीजंस को सम्मानित किया गया।

फिक्की फ्लो जयपुर की चेयरपर्सन (2024-25) और चीर सागर एक्सपोर्ट्स की निदेशक, रघुश्री पोद्दार ने जयपुर आर्ट फेयर के सफलतापूर्वक आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि इस मंच के माध्यम से हमने राजस्थान की समृद्ध पारंपरिक कलाओं को जीवंत करने और सक्रिय रूप से बढ़ावा देने का प्रयास किया। हैंडीक्राफ्ट व हैंडलूम आर्टीजंस को भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने और अपनी अद्भुत कला को लोगों तक पहुंचाने का अवसर प्राप्त हुआ। इस दो दिवसीय फेयर के दौरान हैंडब्लॉक प्रिंट्स, मीनाकारी, जेमस्टोन कार्विंग, ब्लू पॉटरी, तारकाशी, वुड कार्विंग, फड़ पेंटिंग, लघु चित्रकला, कोफ्तगिरी सहित विभिन्न शैलियों का आर्टवर्क प्रस्तुत किया गया।

जयपुर आर्ट फेयर के तहत आर्टिस्ट अशोक यू. शाह की ओर से पोर्ट्रेट एग्जीबिशन लगाई गई। इसमें उन्होंने स्वयं के बनाए 25 से अधिक सफल महिलाओं के पोर्ट्रेट प्रदर्शित किए, जिनके जरिए वुमन एम्पावरमेंट को साकार किया। राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष ममता शर्मा ने इस एग्जीबिशन का उद्घाटन किया। एग्जीबिशन में शाह ने नीता अंबानी, किरण मजूमदार शाह, गीता गोपीनाथ, नताशा पूनावाला, प्रीति अडाणी, वंदना लूथरा व ईशा अंबानी जैसी प्रख्यात महिलाओं के पोर्ट्रेट प्रदर्शित किए।

कम लागत में एग्रोनेट हाउस में खीरा की खेती सर्वोत्तम विकल्प : डॉ अरूण कुमार

- एग्रोनेट हाउस में खीरे की क्वालिटी भी अच्छी आती है। कीट रोग प्रबंधन भी आसान है और बूंद-बूंद सिंचाई से पानी की बचत भी होती है
- खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के सकारात्मक परिणाम आये

बीकानेर, (कासं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के एग्रोनेट हाउस (शेडनेट हाउस) में खीरा उत्पादन को लेकर चल रहे शोध कार्य के सकारात्मक परिणाम आये हैं।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने एग्रोनेट हाउस में खीरा उत्पादन का जायजा लेते हुए बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे के बीजारोपण के करीब एक महीने बाद ही उत्पादन शुरू हो गया है। उन्होंने बताया कि एग्रोनेट हाउस में खीरे की संरक्षित खेती करने से आम किसानों को होने वाले लाभ पर शोध कार्य किया जा रहा है। साथ ही खीरे की खेती में स्प्रे के जरिए नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम न्यूट्रिशन देने पर उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर भी अध्ययन किया जा रहा है। जिसके शुरूआती परिणाम सकारात्मक आए हैं। पॉलीहाउस के मुकाबले काफी कम लागत से बनने वाले एग्रोनेट हाउस में खीरे का अच्छा उत्पादन हो रहा है। कोई भी जागरूक कृषक कृषि विश्वविद्यालय में आकर एग्रोनेट हाउस में खीरे की खेती को देख सकता है। उन्होने बताया कि पश्चिमी राजस्थान में कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन व अधिक लाभ के लिए शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती सर्वोत्तम विकल्प है।

कृषि विश्वविद्यालय परिसर में कुलपति डॉ अरूण कुमार ने एग्रोनेट हाउस में खीरा उत्पादन का जायजा लिया।

हॉर्टिकल्चर विभागाध्यक्ष डॉ पी. के. यादव ने बताया कि ऑफ सीजन में खीरे का उत्पादन पॉलीहाउस और शेडनेट में किया जाता है। लेकिन मई जून में बहुत अधिक तापमान होने से पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन में कुछ दिक्कतें आ सकती हैं। ऐसे में एग्रोनेट हाउस में तापमान कम होने से और आर्द्रता बनी रहने से खीरे की अच्छी फसल ली जा सकती है। एग्रोनेट हाउस में खीरे की क्वालिटी भी अच्छी आती है। कीट रोग प्रबंधन भी आसान है और बूंद- बूंद सिंचाई से पानी की बचत भी होती है। लिहाजा आम किसान कम जगह में एग्रोनेट हाउस के जरिए कम लागत से अधिक उत्पादन और अधिक आय प्राप्त कर सकता है।

पीएचईडी स्टूडेंट गाइड और सहायक आचार्य डॉ सुशील कुमार ने बताया कि शोध विद्यार्थी पवन कुमार खीरे पर शोध कार्य कर रहे हैं। साथ ही इसका अध्ययन भी किया जा रहा है कि क्या एक सामान्य किसान छोटी सी जगह पर शेडनेट हाउस में संरक्षित खेती कर सकता है। लिहाजा कृषि विश्वविद्यालय परिसर में ही 15 बाई 30 मीटर के शेडनेट हाउस में बिना बीज वाले खीरे की वैरायटी के पौधे लगाये गए हैं। सवा महीने बाद ही खीरे का उत्पादन शुरू हो चुका है। एक दिन छोड़कर एक दिन करीब 40-70 किलो खीरे का उत्पादन हो रहा है जो अगले तीन महीनों तक लगातार जारी रहेगा।

हनुमानगढ़। गत वर्ष कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप से सबक लेते हुए इस बार जिला प्रशासन सतर्कता बरत रहा है। इसके तहत कृषि विभाग की टीम ने जिले भर में बीज दुकानों पर दबिश देकर बीज विक्रय की वस्तुस्थिति को जानने का प्रयास किया। बीज विक्रेताओं की ओर से किसानों से प्रिंट रेट से अधिक रुपए वसूलने की शिकायत मिलने पर कृषि विभाग ने टीमें गठित कर जिले भर में संचालित आदान विक्रेताओं की दुकानों की जांच की।

नगर स्थापना समारोह आज

बीकानेर, (कासं)। विधायक सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित होने वाले चार दिवसीय नगर स्थापना दिवस कार्यक्रमों को अंतिम रूप दिया गया।

बीकानेर (पश्चिम) विधायक जेठानंद व्यास ने बताया कि कार्यक्रमों की शुरूआत 6 मई को धरणीधर मैदान में चंदा महोत्सव के साथ होगी। इस दिन सायं 6 बजे शहर वासी विभिन्न संदेशपरक चंदा उड़ाकर स्थापना दिवस की खुशियां मनायेंगे। इस कार्यक्रम के प्रभारी संस्कृति कर्मी पवन व्यास होंगे। इस दौरान सभी लोग चाईनीज मांझे का उपयोग नहीं करने की शपथ भी लेंगे।

विधायक व्यास ने बताया कि दूसरे दिन सात मई को बारह गुवाड़ में सायं 7 बजे से कवि सम्मेलन होगा। इसके प्रभारी आशु कवि बाबूलाल छंगाणी होंगे। इसके लिए शहरी क्षेत्र के 15 कवियों को आमंत्रित किया गया है। यह कवि हास्य कविताओं के माध्यम से विभिन्न संदेश देंगे।

विधायक व्यास ने बताया कि तीसरे दिन 8 मई को नगर स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर जस्सूसर गेट के अंदर मुख्य कार्यक्रम होगा। जहां बड़ी संख्या में दीपक जलाए जायेंगे। वहीं उन्होंने शहरी क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं और मोहल्ला कमेटियों का आव्हान किया है कि उनके द्वारा प्रत्येक चौक और मोहल्ले में दीप जलाएं जिससे कि शहरी क्षेत्र में स्थापना दिवस को उत्सव की तरह मनाया जा सके। विधायक ने बताया कि इस कार्यक्रम के प्रभारी राजकुमार किराडू होंगे।

सार-समाचार

ओम बन्ना का जन्मोत्सव मनाया

ओम बन्ना का जन्मोत्सव केक काटकर मनाया।

बीकानेर, (कासं)। ओम बन्ना का जन्मोत्सव रविवार को ओम बन्ना सेवा समिति द्वारा अभिलेखागार कार्यालय के पास ओम बन्ना धाम में धूमधाम से मनाया गया। जन्मोत्सव के मौके पर बीकानेर पश्चिम विधायक जेठानंद व्यास, भाजपा युवा नेता दीपक पारीक के आतिथ्य में ओम बन्ना के वार्षिक दो दिवसीय जन्मोत्सव कार्यक्रम का समापन हुआ। शनिवार व रविवार को ओम बन्ना धाम पर दिनभर भजन-कीर्तनों तथा महाप्रसादी कार्यक्रम का दौर चला। पुजारी सुरजाराम ने बताया कि रविवार को ओम बन्ना के 70 वें जन्मोत्सव की खुशी में भक्तों ने केक काटा। ओम बन्ना सेवा समिति के पदाधिकारी सूरजभान सिंह, भानु प्रताप सिंह राठौड़, मनोज कुमार मोदी, राजकुमार जीनगर, सैय्यद अख्तर चूडीगर, नरपतसिंह ज्याक, महेंद्र गोयल, ओंकार सिंह,नीरज सोढा,सीता देवी,भंवरी देवी, राहुल भाटी, प्रेम पाल, किसन सिंह सोलंकी, उज्जवल सिंह,अजय जीनगर सहित आदि ने पूजा-अर्चना कर ओम बन्ना को केक का विशेष भोग लगाया। भक्तों के द्वारा रविवार की सुबह 5 बजे ओम बन्ना की विधि-विधान के साथ पूजा अर्चना की गई। ओम बन्ना धाम स्थान के बाहर 3 हजार से ज्यादा भक्तों के बीच में महाप्रसादी के तौर पर भोजन कराया गया। इससे पहले जन्मोत्सव की पूर्व संध्या पर रात्रि जागरण का आयोजन किया गया। जागरण में गायक बालिका कलाकार सृष्टि सुथार द्वारा गणपति वंदना से शुरुआत की गई। जिसमें एक से बढ़कर एक ओम बन्ना के भजनों की सरिता बही। देर रात चली भजन संध्या में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। मंच संचालन श्याम मोदी ने किया।

गेहूं खरीद की जानकारी ली

गजसिंहपुर, (कासं)। समर्थन मूल्य पर चल रही गेहूं खरीद संबंधी जानकारी के लिए आज जिला कलेक्टर लोकबंधु स्थानीय कृषि उपज मंडी समिति कार्यालय पहुंचे। उनके साथ भारतीय खाद्य निगम के मंडल प्रबंधक चौधरी अभिरित व एसडीएम पदमपुर संदीप काकड़ व मंडी समिति सचिव सूबे सिंह रावत मौजूद थे। जिला कलेक्टर लोकबंधु ने समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीद व उठाव व अन्य व्यवस्थाओं संबंधी जानकारी ली। समर्थन मूल्य पर खरीद केन्द्र गजसिंहपुर के गुणवत्ता निरीक्षक ने बताया कि लगभग डेढ़ लाख गेहूं कट्टों की खरीद की जा चुकी है व इनका उठाव करके वेयरहाउस में लगाया जा चुका है। खरीद का भुगतान भी कर दिया गया है व लगभग डेढ लाख कटे और खरीद की संभावना है। जिला कलेक्टर लोकबंधु ने स्थानीय व्यापारियों व तौला, धानक मजदूरों की बैठक भी ली। धानक मजदूरों ने नई धानमंडी बनाने की मांग की और कहा कि धानमंडी में स्थान अपर्याप्त होने से उन्हें काफी परेशानी होती है। जिला कलेक्टर व अन्य अधिकारी इसके बाद पदमपुर के लिये रवाना हो गए।

मंदिर निर्माण समिति की बैठक

मोहन नगर, घड़सीसर में बनने वाले राधा मोहन मंदिर के निर्माण को समिति की बैठक में चर्चा की।

बीकानेर, (कासं)। मोहन नगर, घड़सीसर में बनने वाले राधा मोहन मंदिर के निर्माण हेतु मोहन नगर वासियों की एक बैठक एसबीबीजे भवन में मोहन डवलपर्स के युनूस अली की अध्यक्षता में आहुत की गई। आर के शर्मा ने बताया कि बैठक में मंदिर निर्माण की योजना पर गहन विचार विमर्श किया गया तथा भूमि पूजन के बाद निर्माण कार्य प्रारंभ हेतु नींव खुदाई का कार्य हो चुका है। बिहारी लाल शर्मा ने बताया मोहन नगर वासियों व जन सहयोग से बनने वाले मंदिर हेतु मोहन डेवलपर्स द्वारा निःशुल्क भूखंड उपलब्ध करवाया गया है तथा कम्मूखां परिवार की ओर से 15 हजार ईट व बजरी की व्यवस्था की गइ। बैठक में लीलाधर खत्री, जितेश अरोड़ा, अशोक बड़गुजर, शशि कांत, महावीर कच्छावा, राधा किशन सारस्वत, नवनीत दवे, नंदकिशोर शर्मा, अंकित सोलंकी, मनीष सोलंकी, मनीष कुमार मीणा, प्रकाश चन्द्र शर्मा व सिमरनजीत सिंह के अलावा अन्य उपस्थित थे।

परिचय सम्मेलन को लेकर बैठक

बीकानेर, (कासं)। समस्त पंजाबी विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन पवनपुरी कॉलोनी में एक सभा का आयोजन सुरेश चंद्र भसीन की अध्यक्षता में की गई। राजकुमार भाटिया ने बताया कि राजस्थान व बाहर से आने वाले सभी पंजाबी भाईयों का ठहरने का स्थान व आपसी बातचीत से परिचय करवाया जायगा। आगामी बैठक कर पंजाबी युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन के स्थान व दिनांक की घोषणा कर दी जायेगी।

गर्भवती नवविवाहिता की संदिग्ध मौत, जहर देने का आरोप

- पांच महीने पहले हुई थी शादी, एक दिन पहले पिता को फोन पर कहा था ये लोग मुझे मार देंगे
- महिला के पीहर पक्ष ने ससुराल वालों पर दहेज हत्या व जबरन कीटनाशक पिलाकर मारने की रिपोर्ट दर्ज करवाई

अनूपगढ़, (कासं)। चार महीने की गर्भवती महिला की संदिग्ध मौत का मामला सामने आया है। पीहर पक्ष ने ससुराल वालों पर जहर देकर मारने का आरोप लगाया है।

घटना से एक दिन पहले विवाहिता ने अपने पिता से फोन पर बात की थी। उसने कहा था दहेज के लिए ससुराल वाले मुझे मार देंगे। उसकी पांच माह पहले ही शादी हुई थी। घटना अनूपगढ़ जिले की रावला मंडी के गांव 3 केएचएम में 3 मई की है। डीएसपी अमरजीत चावला ने बताया कि संजू (23) की मौत के मामले में उसके भाई रविन्द्र ने तीन मई की शाम रावला मंडी पुलिस थाने में दहेज हत्या का मामला दर्ज करवाया है। घटना के बाद से ताया ससुर भागीरथ फरार है।

डीएसपी अमरजीत चावला ने बताया कि गांव 4 केपीडी की रहने वाली संजू की शादी 6 दिसम्बर 2023 को 3 केएचएम के निवासी राजकमल पुत्र कृष्णलाल बिश्नोई के साथ हुई थी। वह चार महीने की गर्भवती थी। तीन मई को सुबह उसकी तबीयत बिगड़ने पर ससुराल वाले रावला के सरकारी हॉस्पिटल लेकर गए जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। महिला के पीहर पक्ष ने ससुराल वालों पर जबरन कीटनाशक पिलाकर मारने का आरोप लगाकर रिपोर्ट दर्ज करवाई है। पोस्टमार्टम के बाद शव पीहर पक्ष को सौंपा दिया है।

मृतका के भाई रविन्द्र (20) पुत्र संतोष कुमार बिश्नोई ने बताया कि तीन मई को सुबह करीब नौ बजे संजू के ससुराल के ही गांव के निवासी शिवकुमार ने फोन कर बताया कि कीटनाशक के कारण संजू की तबीयत बिगड़ गई थी। उसे रावला हॉस्पिटल लेकर गए हैं। भाई ने बताया कि बहन के ससुर कृष्णलाल, ताया ससुर भागीरथ और ताई सास सरस्वती ने बहन से एक बाइक और 10 लाख रूपए की मांग की थी।

पांच दिन पहले वह अपने मायके आई थी और दहेज की मांग के बारे में बताया था। इसके बाद पंचायत की गई। पंचायत में ससुराल पक्ष के लोगों को समझाकर संजू को वापस ससुराल भेज दिया था।

भाई ने बताया कि 2 मई की रात करीब 8:40 पर बहन का पिता के पास फोन आया था। उसने कहा था ससुर, ताया ससुर और ताई सास दहेज के लालच में उसकी हत्या कर सकते हैं। सभी उसके साथ मारपीट और लड़ाई-झगड़ा कर रहे हैं।

आग से सामान जलकर राख

श्रीडूंगरगढ़, (कासं)। श्रीडूंगरगढ़ क्षेत्र के गांव गजपुरा की रोही स्थित एक खेत में बनी ढाणी के छप्पर में अचानक आग लगने से बकरियां, घरेलू सामान व नकदी जल गई।

किसान लखुराम पुत्र श्रवणराम नाई निवासी लखासर ने बताया कि शनिवार सुबह उसकी मां व भाई भगवानाराम खेत में थे। भगवानाराम सुबह बकरियां चराने ढाणी से बाहर निकल गया व मां अन्य कृषि कार्यों में जुट गई। तभी सुबह करीब 7 बजे ढाणी में बने छप्पर में अचानक आग लग गई। आग की लपटों देखकर आसपास के खेतों से लोग मौके पर एकत्रित हो गए। तब तक आग फैल गई थी।

बड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। आग से तीन पिंजरों में रखे बकरियों के 6 बच्चे जलकर मर गए और एक घायल हो गया। साथ ही दो बोरी गेहूं, राशन का सामान, कपड़े, रजाई गद्दे, घरेलू बर्तन, एक सोने की रखड़ी, ठुस्सी, अंगूठी व एक जोड़ी चांदी की पायल सहित 32 हजार रूपए भी जलकर खाख हो गए। भाजपा देहात मंडल अध्यक्ष महेन्द्र सिंह सहित भगवान सिंह ने भी मौके पर पहुंचकर पटवारी को सूचना दी और प्रशासन से मदद करने की मांग की।

दादा के तेहरवें को हादसे में पोते की मौत

- दादा के तेरहवें को भोग की रस्म के लिए जाते वक्त पोते को बोलेरो ने टक्कर मार दी

बीकानेर, (कासं)। घर के बड़े-बुजुर्ग (दादा) की मौत से परिवार के लोग अभी तक पूरी तरह उबर भी नहीं पाए कि दादा के तेहरवें के दिन पोते की मौत से परिवार एक बार फिर शोक में डूब गया।

दरअसल तेहरवें को दादा के भोग की रस्म के लिए जाते वक्त हादसे में पोते की मौत हो गई। दिलचस्प बात ये है कि पोता सड़क किनारे बाइक पर खड़ा इंतजार कर रहा था। उसने हेलमेट भी पहन रखा था। इसके बावजूद बोलेरो ने उसको इस कदर अपनी चपेट में लिया कि हादसे में उसकी मौत हो गई। जबकि बोलेरो चालक गाड़ी को मौके पर छोड़कर फरार हो गया।

दरअसल यह हादसा अनूपगढ़ के गांव बांडा कामरनिया की ओर जाने वाली सड़क पर स्थित 13 एपीडी चौराहे पर हुआ। जहां बोलेरो गाड़ी ने चौराहे पर बाइक लेकर खड़े चक 07 एसजेएम अनूपगढ़ निवासी सिकन्दर सिंह (22) पुत्र अजमेर सिंह को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसको तुरंत अस्पताल ले जाया गया। जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया।

अपहरण का प्रयास : श्रीडूंगरगढ़ थाना क्षेत्र नाबालिग लड़की का अपहरण करने का प्रयास का मामला सामने आया है। इस संबंध में नाबालिग के पिता ने थाने पहुंचकर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। परिवादी ने पुलिस को बताया कि उसकी पुत्री खेत जाने के लिए रवाना हुई। उसे रास्ते में बाइक लेकर आरोपी मिला। आरोपी ने नाबालिग को खेत छोडने की बात कही और रास्ते में उससे अश्लील हरकतें की। जिसका विरोध करने पर वह उसे खेत के पास छोड़कर लौट गया। इस पर बालिका ने अपनी मां को ये बात बताई तो परिवादी व उसके भाई ने आरोपी के घर जाकर ओलमा दिया तो वे नाराज हो गए।

भारत भ्रमण साइकिल यात्री बीकानेर पहुंचा

बीकानेर, (कासं)। पर्यावरण को संरक्षण देने तथा शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए दिल्ली से साइकिल पर निकला 28 वर्षीय युवक बीकानेर पहुंचा।

इस युवक का सपना है कि साइकिल पर भारत भ्रमण कर लोगों को पर्यावरण, शिक्षा को बढ़ावा देने एवं भाइचारे की भावना को आगे बढ़ाया जा सके। दिल्ली निवासी नितेश शर्मा दो फरवरी को भारत भ्रमण के लिए दिल्ली से साइकिल पर निकला है। उसने बताया कि उसका सपना है कि तीन साल में भारत भ्रमण पूरा करना है।

इसके लिए उन्होंने दो फरवरी से साइकिल यात्रा शुरू की है। इस यात्रा में चार धाम की यात्रा भी शामिल है और अभी तक 40 प्रतिशत राजस्थान की यात्रा पूरी कर ली गई है। शेष यात्रा को भी बिना व्यवधान के पूरी होने की संभावना है।

उन्होंने बताया कि अभी तक 2600 किलोमीटर की यात्रा पूरी की जा सकी है। अगर यात्रा के दौरान साइकिल पंक्चर हो जाती है तो वे स्वयं ही पंक्चर निकाल कर आगे बढ़ जाते हैं।

शर्मा ने बताया कि राजस्थान के लोग सहायता करने वाले है। जिन-जिन जिलों में भी गया था। वहां के लोगों ने गले मिलकर स्वागत किया।

मटका प्याऊ की शुरूआत

हनुमानगढ़, (कासं)। मां भद्रकाली क्षेत्र विकास सेवा समिति हनुमानगढ़ की ओर से बढ़ती गर्मी में आमजन को राहत देने के उद्देश्य से आधुनिक मटका प्याऊ की शुरूआत टाउन मां भद्रकाली नीम कोरिडोर मार्ग पर की गई।

समिति अध्यक्ष भगवान सिंह खुड़ी ने बताया कि उक्त मटका प्याऊ विशेष रूप से शेखावटी आंचल की देन है। उन्होंने कहा कि उक्त प्याऊ के चारों और लोहे से बनी जाली लगाई गई है। समिति वरिष्ठ सदस्य सुशील जैन व गुरूद्वारा प्रेमनगर के प्रधान बलकरण सिंह ढिल्लो ने बताया कि यह प्याऊ पहला जरूर है, परंतु अंतिम नहीं है। शहर के अलग- अलग जगहों पर इसी तरह के प्याऊ स्थापित किए जायेंगे।

खाजूवाला ब्लॉक में 7.29 करोड़ की राशि की स्वीकृत

- खाजूवाला व पूगल ब्लॉक के स्कूलों में कक्षा कक्ष व कम्प्यूटर तथा साइंस लैब बनेगी

बीकानेर, (कासं)। खाजूवाला विधायक डॉ विश्वनाथ मेघवाल की अनुशंसा पर राज्य सरकार ने खाजूवाला व पूगल ब्लॉक के विद्यालय में कक्षा कक्ष निर्माण, कम्प्यूटर लैब निर्माण, साइंस लैब निर्माण, महिला शौचालय व केजीबीवी बिल्डिंग निर्माण के लिए 7 करोड़ 29 लाख रूपये स्वीकृत किए हैं। जिससे खाजूवाला विधानसभा में शिक्षा के स्तर में बड़ा सुधार होगा।

भाजपा जिला मंत्री देवीलाल मेघवाल ने बताया कि खाजुवाला विधानसभा में खाजूवाला विधायक डॉ विश्वनाथ मेघवाल ने शिक्षा मंत्री मदन दिलावर को पत्र लिखकर विभिन्न विद्यालयों में अत्याधुनिक सुविधाओं की मांग की थी। जिसे राज्य सरकार द्वारा शैक्षिक विकास के लिए समग्र शिक्षा योजना के अन्तर्गत पूगल ब्लॉक में दामोलाई में केजीबीवी की बिल्डिंग निर्माण के लिए 4 करोड़ 41 लाख रूपए राउमावि 2 एडी आडुरी में कक्षा कक्ष के निर्माण के लिए 29.88 लाख रूपये राउमावि भुट्टों का कुआं में कक्षा कक्ष के निर्माण के लिए 29.88 लाख रूपये राउमावि पुगल में कम्प्यूटर लैब के लिए 13.67 लाख रूपये राउमावि भाडसर कम्प्यूटर लैब के लिए 13.67 लाख रूपये राउमावि रामडा कम्प्यूटर लैब के लिए 13.67 लाख रूपये राउमावि रावत माइनर में कम्प्यूटर लैब के लिए 13.67 लाख रूपये स्वीकुत किए हैं।

सैन जयंती पर होनहार विद्यार्थी पुरस्कृत, शोभायात्रा निकाली

- छप्पन तरह के पकवानों को भोग प्रसाद के रूप में सैन जी महाराज को अर्पण किया

बीकानेर, (कासं)। सैन समाज के अराध्य, संत शिरोमणी श्री सैन महाराज की 724 वीं जयंती 5 मई को विभिन्न आयोजनों के साथ धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर सैन समाज के लोगों ने अपने प्रतिष्ठान बंद रख सैन जयंती पर होने वाले आयोजनों में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

रात्रि में सैन मंदिर गंगाशहर में श्रवण सैन एण्ड म्यूजिक पार्टी द्वारा सैनजी महाराज के समधुर भजन प्रस्तुत किए। सैन मंडल संस्थान के अध्यक्ष पुरूषोत्तम सैन ने बताया कि इससे पूर्व गंगाशहर सैन मंदिर में प्रतिभा सम्मान समारोह कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विधायक बीकानेर (पूर्व) विधायक सिद्धी कुमारी, महापौर सुशीला कंवर राजपुरोहित एवं असिस्टेंट कमिश्नर (एसजीएसटी) श्रीगंगानगर नीतू सैन सहित विशिष्ट अतिथि समाजसेवी एवं उद्योपति बाबूलाल चौहान किशनासर वाले, डॉ. राधेश्याम नाई एवं आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी डॉ. संदीप नाई एवं समाज के वरिष्ठजनों ने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में अव्वल रहने वाले प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया। इससे पूर्व अलसुबह सैन मंदिर में सैनजी महाराज की प्रतिमा का महाअभिषेक कर श्रृंगार किया गया। उसके बाद महाआरती की गई और छप्पन तरह के पकवानों को भोग प्रसाद के रूप में सैन जी महाराज को अर्पण किया गया। इस अवसर पर मंदिर में सैन समाज के महिलाओं, पुरुषों, युवक-युवतियों और बच्चों का पूरे दिन आवागमन बना रहा। गंगाशहर नई लाइन स्थित सैन मंदिर में रविवार अलसुबह 7.15 मंदिर प्रांगण में सैन महाराज की महाआरती की।

बीकानेर में सैन समाज के लोगों ने सैन जयंती पर पौधारोपण किया।

सुबह 8.15 बजे भव्य शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें आगे डीजे पर सैनजी महाराज के भजन और अमृतवाणी का संदेश, बैंडबाजों की मधुर स्वर लहरियां और सजे-धजे रथ पर सैनजी महाराज की आदमकद फूल मालाओं से सजी तस्वीर विराजित रही। वहीं उनके पीछे सैकड़ो की संख्या में केसरिया साड़ी पहने महिलाएं, सफेद चौला-पायजामा और सिर पर पचरंगी साफा पहने पुरूष, युवक-युवतियां सैन महाराज के जयकारे लगा रहे थे।

अनिल धानुका श्री शिवनंदी गौशाला समिति के पुन: अध्यक्ष बने

सूरतगढ़, (कासं)। नगर पालिका की ओर से किशनपुरा आबादी में संचालित श्री शिव नंदी गोशाला समिति की आम सभा रविवार को आयोजित की गई। इस अवसर हुए चुनाव में अनिल धानुका को दो वर्ष के लिए सर्वसम्मति से पुन: अध्यक्ष चुन लिया गया।

संरक्षक पूर्व विधायक गंगाजल मील व पालिकाध्यक्ष मास्टर ओमप्रकाश कालवा की अध्यक्षता में आयोजित आम सभा में पूर्व विधायक अशोक नागपाल, व्यापार मंडल अध्यक्ष संजय सोनी, समाजसेवी संदीप कासनिया सहित बड़ी संख्या में क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम में अध्यक्ष अनिल धानुका ने आंगुतकों का स्वागत करते हुए दो वर्ष का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि तूडी के दोनों गोदाम भरे हुए हैं। नंदीशाला में करीब 1500 नंदी की नियमित देखभाल की जा रही है।

इसके अलावा सीसीटीवी कैमरे, हाईमास्ट लाइट आदि भी नगर पालिका मंडल की ओर से लगाई गई है। साथ ही दानदाताओं के सहयोग से आवश्यक सभी संसाधन भी जुटाए गए हैं। सचिव नरेन्द्र चाहर ने सचिवीय प्रतिवेदन पेश करते हुए बताया कि नंदीशाला के द्विवार्षिक कार्यकाल को वित्तीय वर्ष के तहत अप्रैल से मार्च तक किया गया। चाहर ने बताया कि नंदीशाला में विभिन्न संसाधनों व उपकरणों की कमी महसूस हो रही थी। इसलिए दानदाताओं के सहयोग से ट्रेक्टर ट्रॉली, टैंकर, आटा चक्की, चैन कूपी, पंपसैट आदि उपकरण उपलब्ध करवाने के साथ कई शैड, पानी की खेळी, चारे के लिए थाण, एक लाख लीटर क्षमता का भूमिगत टैंक, पंप सेट आदि का निर्माण करवाया गया। कोषाध्यक्ष मनोज सोमानी ने आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए बताया कि 43 लाख रुपए चंदा, एक लाख रुपए सदस्यता शुल्क, साढ़े तीन लाख रूपए खाद ब्रिक्री आदि से आय हुई।

सूरतगढ़ में शिवनंदी गौशाला समिति की साधारण सभा की बैठक को अध्यक्ष अनिल धानुका ने संबोधित किया।

सिराज मैच में अपनी जान लगा देते है। उन्होंने गावा टेस्ट में शानदार गेंदबाजी की। ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों को धूल चटाई। सिराज की असली ताकत उनका आत्मविश्वास और मैदान पर कभी ना हार मानने वाला रवैया है। - सुनील गावस्कर

पूर्व भारतीय क्रिकेटर मोहम्मद सिराज के बारे में बोलते हुए।

आज का खिलाड़ी

इगा स्विएटेक

दुनिया की नंबर एक टेनिस खिलाड़ी इगा स्विएटेक ने रोमांचक फाइनल मुकाबले में एरीना सबैलेन्का को 7-5, 4-6, 7-6(7) से हराकर मैड्रिड ओपन का अपना पहला खिताब जीता। स्पेन की राजधानी मैड्रिड में शनिवार को पोलैंड की स्विएटेक ने तीन घंटे और 11 मिनट तक चले मुकाबले में गत चैंपियन बेलारुस की एरीना सबैलेन्का को हराकर अपना पहला मैड्रिड ओपन खिताब जीता। स्विएटेक की अपने करियर की यह 20वीं जीत और इस सत्र का तीसरा खिताब है।

क्या आप जानते हैं ?... अपनी टेस्ट जीवन की पहली श्रृंखला में सर्वाधिक रन बनाने का रिकॉर्ड भारत के सुनील गावस्कर के नाम है। गावस्कर ने 1970-71 में वेस्टइंडीज के खिलाफ 774 रन बनाए।

कोलकाता ने लखनऊ को हराकर टेबल टॉप किया

सुनील नरेन ने 81 रन की पारी खेली, राणा-चक्रवर्ती को 3-3 विकेट

लखनऊ, 5 मई। कोलकाता नाइट राइडर्स ने -2024 में लखनऊ सुपर जायंट्स पर दूसरी जीत हासिल की है। टीम ने मौजूदा सीजन के 54वें मुकाबले में लखनऊ को 98 रन से हराया। इस जीत से पॉइंट्स टेबल के टॉप पर पहुंच गई है। कोलकाता के 16 अंक हो गए है। टीम प्लेऑफ में अपनी जगह पक्की करने से महज एक जीत दूर है।

लखनऊ ने होमग्राउंड भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी (इकाना) स्टेडियम में रविवार को टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। कोलकाता ने 20 ओवर में 6 विकेट पर 235 रन बनाए। टीम ने सीजन में छठी बार 200 का स्कोर बनाया है। साथ ही इकाना स्टेडियम में पहली बार 200 से ज्यादा रन का स्कोर बना है। जवाब में लखनऊ 16.1 ओवर में 137 रन पर ऑलआउट हो गई। वरुण चक्रवर्ती ने 3 विकेट झटके। हर्षित राणा और आंद्रे रसेल को 2-2 विकेट मिले। मिचेल स्टार्क और सुनील नरेन को एक-एक विकेट मिला। लखनऊ के मार्कस स्टोयनिस ने सबसे ज्यादा 36 रन बनाए। कप्तान केएल राहुल ने 25 रन की पारी खेली। से सुनील नरेन ने 39 बॉल पर 81 रन की पारी खेली, जबकि फिल सॉल्ट और अंगकृष रघुवंशी ने 32-32 रन बनाए। लखनऊ की ओर से नवीन-उल-हक ने 3 विकेट झटके।

आज यहां लखनऊ सुपर जायंट्स के कप्तान के एल राहुल ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी कोलकाता की फिल सॉल्ट और सुनील नारायण की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट लिये 61 रन जोडे। पांचवें ओवर में नवीन उल हक ने फिल सॉल्ट को आउट कर लखनऊ को पहली सफलता दिलाई। सॉल्ट ने 14 गेंदों में पांच चौके और एक छक्के की मदद से (32) रन बनाये।

विकेटों के पतझड़ में चेन्नई ने मारी बाजी, पंजाब को 28 रनों से हराया

पंजाब से लगातार पांच हार के बाद जीती चेन्नई

धर्मशाला, 5 मई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 53वें मैच में रविवार को विकेटों के पतझड़ में चेन्नई सुपर किंग्स के गेंदबाजों ने बाजी मारते हुए पंजाब सुपर किंग्स को 28 रनों से हरा दिया है।

आज यहां हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में पंजाब किंग्स के कप्तान सैम करन ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। चेन्नई ने पहले खेलते हुए बल्लेबाजों के जुझारूपन के दम पर टीम को 167 रन के संघर्षपूर्ण स्कोर तक पहुंचा उसके बाद रवींद्र जडेजा 20 रन देकर तीन विकेट, सिमरजीत सिंह 16 रन देकर दो, तुषार देशपांडे दो विकेट और मिचेल सैंटनर तथा शार्दुल ठाकुर के एक-एक विकेट की बेहतरीन गेंदबाजी के दम पर पंजाब किंग्स की पारी को 20 ओवर में नौ विकेट पर 139 रन पर रोककर मुकाबला 28 रनों से जीत लिया।

168 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी पंजाब किंग्स की शुरुआत खराब रही और उसने दूसरे ओवर में ही दो विकेट गवां दिये। जॉनी बेयरस्टो (7), राइली रुसो (शून्य) पर आउट हुये। उसके बाद प्रभसिमरन सिंह और शशांक सिंह ने पारी को संभालने का प्रयास किया। आठवें ओवर में शशांक सिंह 20 गेंदों में 27 रन बनाकर आउट हुये। अगले ही ओवर में प्रभसिमरन सिंह ने 23 गेंदों में दो चौके और दो छक्कों की मदद से 30 रन बनाकर पवेलियन लौट गये। इसके बाद लगातार अंतराल पर विकेट गिरते रहे और पंजाब का कोई भी बल्लेबाज पिच पर अधिक देर तक नहीं टिक सका।

कप्तान सैम करन (7), जितेश शर्मा (शून्य), आशुतोष शर्मा (3), हर्षल पटेल (12), राहुल चाहर (16) रन बनाकर आउट हुये। हरप्रीत बराड़ (17) और कगिसो रबाडा (11) रन बनाकर नाबाद रहे। इससे पहले रवींद्र जाडेजा (43), कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ (32) और डैरिल मिचेल (30) रनों की पारियों के दम पर चेन्नई सुपर किंग्स ने पंजाब किंग्स को जीतने के लिये 168 रनों का लक्ष्य दिया था। पहले बल्लेबाजी करने उतरी चेन्नई सुपर किंग्स की शुरुआत खराब रही और उसने दूसरे ही ओवर में सलामी बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे (9) का विकेट गवां दिया।

इसके बाद कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ और डैरिल मिचेल ने पारी को संभाला। आठवें ओवर में राहुल चाहर ने ऋतुराज गायकवाड़ को जितेश के हाथों कैच आउट कराकर पंजाब को दूसरी सफलता दिलाई। ऋतुराज गायकवाड़ ने 21 गेंदों में चार चौके और एक छक्के की मदद से (32) रनों की पारी खेली। अगली ही गेंद पर चाहर ने शिवम दुबे (शून्य) को आउट कर पवेलियन भेज दिया। नौवें ओवर में हर्षल पटेल ने डैरिल मिचेल को पगबाधा आउट कर दिया। डैरिल मिचेल ने 19 गेंदों में दो चौके और एक छक्का लगाते हुये (30) रन बनाये। मोईन अली (17), मिचेल सैंटनर (11), शार्दुल ठाकुर (17), एमएस धोनी (शून्य) पर आउट हुये। रवींद्र जडेजा ने 26 गेंदों में तीन चौके और दो छक्कों की मदद से सर्वाधिक (43) रन बनाये। उन्हें अर्शदीप सिंह ने एस करन के हाथों कैच आउट कराया। पंजाब किंग्स के गेदंबाजों ने चेन्नई के बल्लेबाजों को खुलकर खेलने नहीं दिया और विकेट गिराते हुए उन पर दबाव बनाये रखा। चेन्नई सुपर किंग्स की टीम निर्धारित 20 ओवरों में नौ विकेट पर 167 रन ही बना सकी। पंजाब किंग्स की ओर से राहुल चाहर और हर्षल पटेल ने तीन-तीन विकेट लिये। अर्शदीप सिंह को दो विकेट मिले। सैम करन ने एक बल्लेबाज को आउट किया।

बांग्लादेश ने जिम्बाब्वे को छह विकेट से हराया

चटगांव, 5 मई। बंगलादेश ने रविवार को पांच मैचों की श्रृंखला के दूसरे टी-20 मुकाबले में गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के बाद मो. तौहीद हृदोय के नाबाद (37)और महमुदउल्लाह (26) रनों की पारियों के दम पर जिम्बाब्वे को छह विकेट से हरा दिया है।

139 रनों लक्ष्य का पीछा करते हुए बंगलादेश की लिटन कुमार दास और तंजिद हसन की सलामी जोड़ी ने पहले विकेट के लिये 41 रन जोड़े। लिटन कुमार दास (25), तंज़िद हसन (18), कप्तान नजमुल शान्तो (16) और जाकेर अली (13) रन बनाकर आउट हुये। तौहीद हृदोय ने सर्वाधिक (37) रन बनाये। उन्होंने अपनी पारी में उन्होंने 3 चौके और 2 छक्के लगाए। वहीं महमुदुल्लाह 16 गेंद में 2 चौके और एक छक्के की मदद से 26 रन बनाकर नाबाद रहे। तौहीद और महमुदुल्लाह के 49 रन अवजित की साझेदारी हुई। बंगलादेश ने 18.3 ओवर में चार विकेट पर 142 रन बनाकर छह विकेट से मुकाबला जीत लिया।

जिम्बाब्वे की ओर ल्यूक जोंगवे ने दो विकेट लिये। आइंस्ले एनडलोवु और रिचर्ड नगारावा ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले जहूर अहमद चौधरी स्टेडियम में बंगलादेश ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। जिम्बाब्वे ने पहले बल्लेबाजी करते हुए जॉनाथन कैंपबेल (45) और ब्रायन बेनेट (44) की बेहतरीन पारियों की बदौलत निर्धारित 20 ओवर में सात विकेट पर 138 रन बनाये। जॉनाथन कैंपबेल ने 24 गेंद में 4 चौको और 3 छक्कों की मदद से 45 रन की पारी खेली। वहीं ब्रायन बेनेट 29 गेंद में 2 चौके और 3 छक्के की मदद से 44 रन बनाकर नाबाद रहे। कैंपबेल और ब्रायन के बीच छठे विकेट के लिए (43) रन की साझेदारी निभाई। जॉयलॉर्ड गंबी (17), क्रेग एर्विन (13) रन बनाकर आउट हुये। चार बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक भी नहीं पहुंच सके। बंगलादेश की ओर से रिशाद हुसैन और तस्कीन अहमद ने 2-2 विकेट लिये। शोरफुल इस्लाम, महेदी हसन और मोहम्मद सैफुद्दीन ने एक-एक विकेट मिला।

मुंबई इंडियंस की टक्कर हैदराबाद से आज

मुंबई, 5 मई। आत्मविश्वास से भरी सनराइजर्स हैदराबाद की टीम सोमवार को यहां खराब फॉर्म से जूझ रहे मुंबई इंडियंस के खिलाफ जीत के साथ इंडियन प्रीमियर लीग की अंक तालिका में आगे बढ़ने की कोशिश करेगी। दस मैच में छह जीत और चार हार से 12 अंकों के साथ तालिका में चौथे स्थान पर मौजूद सनराइजर्स की टीम ऑलराउंड प्रदर्शन करने और विशेष रूप से अपने गेंदबाजी विभाग में सुधार करने के लिए बेताब होगी। पैट कमिंस की अगुवाई वाली टीम राजस्थान रॉयल्स (16 अंक), कोलकाता नाइट राइडर्स (14 अंक) और लखनऊ सुपर जाइंट्स (12 अंक) के साथ शीर्ष चार में शामिल है।

विमेंस टी-20 वर्ल्डकप-2024 का शेड्यूल घोषित

छह बार की चैम्पियन ऑस्ट्रेलिया, इंडिया और पाक एक ग्रुप में

दुबई, 5 मई। भारत को इस साल तीन से 20 अक्टूबर तक बांग्लादेश में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए रविवार को गत चैंपियन ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और पाकिस्तान के साथ ग्रुप ए में जगह मिली। भारत के सभी ग्रुप मैच सिलहट में खेले जाएंगे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) द्वारा घोषित नौवें महिला टी20 विश्व कप के कार्यक्रम के अनुसार भारतीय टीम अपने अभियान की शुरुआत चार अक्टूबर को न्यूजीलैंड के खिलाफ करेगी जबकि छह अक्टूबर को चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से भिड़ेगी। भारतीय टीम तीसरा मैच नौ अक्टूबर को पहले क्वालीफायर से खेलेगी जिसका अभी फैसला नहीं हुआ है। टीम को अपना अंतिम ग्रुप मैच 13 अक्टूबर को छह बार के विश्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया से खेलना है। आईसीसी ने अपनी वेबसाइट पर लिखा, "टूर्नामेंट में प्रत्येक टीम चार ग्रुप मैच खेलेगी और प्रत्येक ग्रुप से शीर्ष दो टीमें 20 अक्टूबर को ढाका में होने वाले फाइनल से पहले 17 और 18 अक्टूबर को होने वाले सेमीफाइनल मुकाबलों में जगह बनाएंगी।" आईसीसी ने बताया, "ढाका और सिलहट में 19 दिन में कुल मिलाकर 23 मैच खेले जाएंगे।

तेजस्विन शंकर ने एरिजोना एथलेटिक्स मीट में ऊंची कूद स्पर्धा जीती

एरिजोना, 5 मई। भारत के तेजस्विन शंकर ने यूएसएटीएफ थ्रो फेस्टिवल फेस्टिवल 2024 में पुरुषों की ऊंची कूद स्पर्धा में 2.23 मीटर के सत्र के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ जीत हासिल की। एरिजोना विश्वविद्यालय के रॉय पी. ड्रैचमैन स्टेडियम में हुई स्पर्धा में संयोग से शीर्ष तीन एथलीटों ने समान 2.23 मीटर का मार्क दर्ज किया। अमेरिका के अर्नेस्ट सियर्स दूसरे और मैक्सिको के रॉबर्टो विल्चेस तीसरे स्थान पर रहे। भारतीय एथलीट तेजस्विन शंकर को पहले प्रयास में ही क्लियरेंस हासिल करने के कारण विजेता घोषित किया गया। जबकि सियर्स और विल्चेस ने क्रमशः अपने दूसरे और तीसरे प्रयास में यह मार्क दर्ज किया था। तेजस्विन शंकर का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ 2.29 मीटर है, जो 2018 में हासिल किया गया एक राष्ट्रीय रिकॉर्ड है।

इस बीच, एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता सर्वेश कुशारे ने यूएसएटीएफ थ्रो फेस्टिवल में 2.13 मीटर की दूरी तय करके पांचवां स्थान हासिल किया, जो उनके व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ 2.27 मीटर और पिछले महीने कैलिफोर्निया में माउंट सैक रिले में हासिल किए गए 2.23 मीटर के अपने सीजन के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन से काफी कम है।

एरिजोना में कुशारे 2.18 मीटर के निशान को पार करने के अपने तीनों प्रयासों में विफल रहे। 25 वर्षीय तेजस्विन शंकर ने इस वर्ष पांच स्पर्धाओं में भाग लिया है, वर्तमान में रोड टू पेरिस 2024 में 63वें स्थान पर हैं। पांच में से, तेजस्विन शंकर ने तीन मीट जीती हैं – फरवरी में बेल्जियम में अंतरराष्ट्रीय ऊंची कूंद गाला एल्मोस और मार्च में कंसास में शॉकर स्प्रिंग इनविटेशनल। पिछली तीन प्रतियोगिताएँ अमेरिका में हुई हैं।

हैमस्ट्रिंग चोट के कारण श्रीलंका लौटेंगे तेज गेंदबाज पाथिराना

चेन्नई, 5 मई। चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के तेज गेंदबाज मथीशा पाथिराना हैमस्ट्रिंग की चोट के कारण इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के बचे हुए इस चरण से बाहर हो गये और वह जल्द ही चोट से उबरने के लिए श्रीलंका लौटेंगे। पाथिराना ने अभी तक आईपीएल के इस चरण में छह मैच खेलकर 13 विकेट झटके हैं। सीएसके ने रविवार को मीडिया विज्ञप्ति में कहा, "चेन्नई सुपर किंग्स पाथिराना के जल्द ठीक होने की कामना करती है।"

पाथिराना सीएसके के लिए अंतिम मैच सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ खेला था जिसमें टीम 78 रन से जीती थी। इस मैच में उन्होंने दो ओवर डाले थे तथा ऐडन मार्कराम और हेनरिक क्लासेन का विकेट लिया था। पाथिराना का बाहर होना सीएसके के लिए बड़ा झटका है क्योंकि इससे उसकी गेंदबाजी पर असर पड़ेगा। तेज गेंदबाज आल राउंडर दीपक चाहर भी पंजाब किंग्स के मैच में लगी हल्की चोट के कारण आईपीएल के बाकी मैचों में नहीं खेल पायेंगे। चाहर सिर्फ दो गेंदें फेंकने के बाद मैदान से बाहर चले गये थे और शार्दुल ठाकुर ने उनका ओवर पूरा किया था।

पुजारा ने काउंटी चैम्पियनशिप में जड़ा शतक

लंदन, 5 मई। काउंटी चैंपियनशिप डिवीजन टू के मैच में दूसरे दिन ससेक्स के लिए खेलते हुए भारतीय दिग्गज बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा ने नाबाद (104) रनों की शतकीय पारी खेली। यह तीन सत्र में ससेक्स के लिए उनका नौवां शतक है। मैच में पुजारा के अलावा टॉम हेंस, टॉम एल्सॉप और जेम्स कोल्स ने भी अर्धशतक लगाए। ससेक्स ने डर्बीशायर के साथ खेले जा रहे मुकाबले में अब तक पांच विकेट पर 357 रन बना लिया है और उन्हें पहली पारी में 111 रनों की बढ़त मिल चुकी है। दिन के आखिर में लुईस रीस ने ससेक्स के दो विकेट लेकर डर्बीशायर को मैच में बनाए रखा है। ससेक्स को शुरुआत में एक विकेट गवां दिया था, लेकिन उसके बाद डर्बीशायर की गेंदबाज़ी में निरंतरता की कमी साफ़ तौर पर दिखी। हेंस ने केवल 38 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा कर लिया था और एल्सॉप के साथ उन्होंने 90 रनों की साझेदारी की थी। पुजारा ने दो साल पहले इसी मैदान पर दोहरा शतक लगाया था और उन्हें बल्लेबाज़ी के लिए आता देखना डर्बीशायर के लिए चिंता की बात थी।

पिछले कुछ दिन से बीमार था, लगा कि आज खेल नहीं सकूंगा : सिराज

बेंगलुरू, 5 मई। गुजरात टाइटंस पर इंडियन प्रीमियर लीग के मैच में चार विकेट से मिली जीत के नायक रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने कहा कि पिछले कुछ दिन से बीमार होने के कारण उन्हें लगा था कि वह इस मैच में खेल नहीं सकेंगे। सिराज ने पहले स्पैल में ही रिधिमान साहा और शुभमन गिल को आउट करके गुजरात को दबाव में ला दिया था। उन्होंने कहा ," मैं पिछले कुछ दिन से बीमार था। लगा था कि आज खेल नहीं सकूंगा लेकिन मैं खेलना चाहता था और बहुत खुश हूं कि खेल सका।" उन्होंने कहा ,' सुबह उठा तो लगा कि आराम करना चाहिये , आज नहीं खेल सकूंगा। लेकिन फिर मैने सोचा कि नहीं मुझे खेलना ही है।" आरसीबी के कप्तान फाफ डु प्लेसी ने कहा ," पिछले दोनों मैचों में प्रदर्शन शानदार रहा। बल्ले और गेंद दोनों से। यहां 180 का स्कोर अच्छा रहता।"

चीन ने 16वीं बार उबेर कप जीता, फाइनल में इंडोनेशिया को 3-0 से हराया

चेंगडू, 5 मई। चीन ने रविवार को यहां अपनी बादशाहत जारी रखते हुए इंडोनेशिया को हराकर 16वीं बार उबेर कप अपने नाम किया। चीन दो साल पहले बैंकॉक में दक्षिण कोरिया से फाइनल में हार गया था। उसने रविवार को इंडोनेशिया को 3-0 से हराकर खिताब जीता। इंडोनेशिया 2008 के बाद पहला उबेर कप फाइनल खेल रहा था। चीन के लिए ओलंपिक चैम्पियन चेन यु फेई ने ठोगोरिया मारिस्का टुनजंग को 21-7, 21-16 से हराकर शानदार शुरूआत की। इसके बाद चेन किंग चेन और जिया यि फान की दुनिया की नंबर एक जोड़ी ने सिटी फादिया सिल्वा रामाधंती और रिब्का सुगियार्तो को 21-11, 21-8 से हराकर बढ़त 2-0 कर दी। युवा एस्टर नुरूमी ने इंडोनेशिया के लिये कड़ी चुनौती पेश की लेकिन चीन की ही बिंग जियाओ ने उबरते हुए 10-21, 21-15, 21-17 से जीत हासिल ली। चीन ने 16वीं बार उबेर कप जीत लिया।

एंटी-डोपिंग एजेंसी ने पहलवान बजरंग को सस्पेंड किया

एजेंसी बोली- सैंपल नहीं दिया, रेसलर का जवाब- टेस्ट के लिए एक्सपायरी किट दी गई थी

नयी दिल्ली, 5 मई। नेशनल एंटी-डोपिंग एजेंसी (नाडा) ने पहलवान बजरंग पूनिया को अनिश्चितकाल के लिए सस्पेंड कर दिया है। बजरंग पूनिया ने डोप टेस्ट के लिए अपना सैंपल नहीं दिया था, जिसके बाद ने यह एक्शन लिया है।

10 मार्च को ओलिंपिक गेम्स में हिस्सा लेने के लिए हुए एशियन क्वालिफायर्स के नेशनल ट्रायल्स के दौरान ने बजरंग से सैंपल देने के लिए कहा था। लेकिन, बजरंग ने सैंपल देने से इनकार कर दिया। को विश्व डोपिंग रोधी एजेंसी (वाडा) को बताना था कि एक एथलीट ने अपना सैंपल क्यों नहीं दिया।

23 अप्रैल को ने बजरंग को नोटिस दिया और 7 मई तक जवाब देने को कहा था। बजरंग ने अभी तक जवाब नहीं दिया है और इसलिए उन्हें निलंबित कर दिया गया है। बजरंग पूनिया ने पोस्ट करके इसका जवाब दिया। उन्होंने लिखा- मैंने कभी भी अधिकारियों को सैंपल देने से इनकार नहीं किया, उन्होंने पहले मेरा सैंपल लेने के लिए एक्सपायरी किट दी थी। एक्सपायरी किट देने वालों के खिलाफ उन्होंने क्या कदम उठाए। इसका जवाब दें और फिर मेरा डोप टेस्ट ले लीजिए।

बजरंग पूनिया को पिछले साल चीन के हांगझोउ एशियन गेम्स के सेमीफाइनल मैच में हार मिली थी। इतना ही नहीं, ब्रॉन्ज मेडल मैच में भी बजरंग को जापानी पहलवान के. यामागुची ने 10-0 से हरा दिया था। उनकी हार के बाद सोशल मीडिया पर कई लोग भड़क उठे थे, क्योंकि एशियन गेम्स में भाग लेने से पहले उन्होंने किसी प्रतिस्पर्धी मुकाबले में हिस्सा नहीं लिया था। उन्हें ट्रायल के बिना इन खेलों के लिए भारतीय दल में शामिल करने की भी आलोचना हुई थी।

अजय जडेजा ने कहा, आरसीबी वेंटिलेटर से बाहर निकली पर अब भी आईसीयू में

बेंगलुरू, 5 मई। पूर्व भारतीय ऑलराउंडर अजय जडेजा का मानना है कि रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के गेंदबाजों ने एकजुट होकर प्रदर्शन करते हुए अपनी टीम को 'वेंटिलेटर' से बाहर निकाल दिया है लेकिन गुजरात टाइटंस पर जीत के बावजूद टीम अब भी 'आईसीयू' में है। शनिवार को गुजरात के 148 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए आरसीबी ने 38 गेंद शेष रहते चार विकेट से जीत दर्ज की। फाफ डु प्लेसी (64) और विराट कोहली (42) ने पावरप्ले में 92 रन की साझेदारी की लेकिन आरसीबी ने इसके बाद लगातार विकेट गंवाए जिससे उसका स्कोर बिना विकेट के 92 रन से छह विकेट पर 117 रन हो गया और एक समय गुजरात की अप्रत्याशित जीत की उम्मीद बंध गई थी।

भारत की पुरुष टीम 4400 मीटर विश्व रिले की हीट को पूरा करने में नाकाम

नासाउ, 5 मई। दूसरे चरण के धावक राजेश रमेश के पैर में जकड़न के कारण बाहर होने से भारतीय पुरुष चार गुणा 400 मीटर रिले टीम पेरिस ओलंपिक क्वालीफिकेशन के पहले दौर के दौरान रविवार को यहां विश्व एथलेटिक्स रिले में अपनी हीट (शुरुआती दौर की रेस) पूरी करने में विफल रही। मोहम्मद अनस याहिया, राजेश रमेश, मोहम्मद अजमल और अमोज जैकब की भारतीय चौकड़ी हीट नंबर चार में शीर्ष दो में रहकर पेरिस का टिकट पक्का करने की उम्मीद कर रही थी लेकिन रमेश ने अपना बायां पैर पकड़कर लड़खड़ाते हुए रेस बीच में ही छोड़ दी।

अनस पहले चरण की दौड़ पूरी कर चुके थे। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) ने एक बयान में कहा, "पुरुष चार गुणा 400 मीटर रिले टीम की शुरुआत अच्छी रही थी। मोहम्मद अनस ने पहले चरण में 45.93 सेकेंड का समय लिया लेकिन दूसरे धावक राजेश रमेश पहले मोड़ पर पैर की मांसपेशियों में जकड़न के कारण गिर गए।" रमेश ने पुरुष वर्ग में हिस्सा लेने से तीन घंटे पहले मिश्रित चार गुणा 400 मीटर रिले में भी भाग लिया था। भारत के पास सोमवार को ओलंपिक क्वालीफिकेशन के दूसरे दौर के दौरान एक और मौका होगा जहां रविवार को अपनी-अपनी हीट में शीर्ष दो से बाहर रहने वाली अन्य सभी टीमें पेरिस खेलों में क्वालीफाई करने के लिए अपनी किस्मत आजमाएंगी।

टीमों को तीन हीट में विभाजित किए जाने की उम्मीद है और उनमें से प्रत्येक से शीर्ष दो टीम पेरिस के लिए क्वालीकाई करेंगी। भारत की इसी चौकड़ी ने 2023 बुडापेस्ट विश्व चैंपियनशिप में दो मिनट 59.05 सेकेंड का एशियाई रिकॉर्ड बनाया था। तोक्यो ओलंपिक में भारत हीट दौर से आगे निकलने में नाकाम रहा था। भारत क्वालीफिकेशन के पहले दिन महिलाओं की चार गुणा 400 मीटर और मिश्रित चार गुणा 400 मीटर रिले में भी पेरिस ओलंपिक में जगह बनाने में असफल रहा। मिश्रित चार गुणा 400 मीटर और महिलाओं की चार गुणा 400 मीटर दोनों भारतीय टीमों को ओलंपिक क्वालिफिकेशन के लिए सोमवार को होने वाले दूसरे दौर का इंतजार करना होगा।

मिश्रित चार गुणा 400 मीटर स्पर्धा में राजेश रमेश, रूपल चौधरी, अविनाश कृष्ण कुमार और ज्योतिका श्री दांडी की भारतीय चौकड़ी खराब प्रदर्शन करते हुए तीन मिनट 20.36 सेकेंड के समय के साथ हीट नंबर दो में छठे स्थान पर रही। बाद में विथ्या रामराज, एमआर पूवम्मा, ज्योतिका श्री दांडी और सुभा वेंकटेशन की भारतीय चौकड़ी तीन मिनट और 29.74 सेकंड के समय के साथ महिला चार गुणा 400 मीटर की हीट नंबर एक में पांचवें स्थान पर रही।

यहां से चार हीट में से प्रत्येक में शीर्ष दो में रहने वाली टीमें 16 जुलाई से 11 अगस्त तक होने वाले पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करेंगी। सभी हीट में शेष टीमें अन्य छह पेरिस ओलंपिक स्थानों के लिए एक और क्वालिफिकेशन दौर में सोमवार को फिर से प्रतिस्पर्धा करेंगी। यहां आयोजित होने वाली सभी पांच रिले- पुरुषों और महिलाओं की चार गुणा 100 मीटर, पुरुषों और महिलाओं की चार गुणा 400 मीटर और मिश्रित चार गुणा 400 मीटर- के लिए प्रारूप समान है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा राजस्थान, प. बंगाल एवं झारखण्ड में चुनाव प्रचार के बाद अब दिल्ली में प्रचार कार्यक्रम की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। उन्होंने रविवार को पूर्वी दिल्ली लोकसभा क्षेत्र के शाहदरा स्थित भाजपा जिला कार्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं की समीक्षा बैठक ली। इस मौके पर उन्होंने कार्यकर्ताओं की तारीफ की और उनका मनोबल बढ़ाने का प्रयास किया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि, भाजपा के विकास कार्यों के कारण 2014 के बाद देश में बड़ा परिवर्तन आया है और यह परिवर्तन ही भाजपा को आम चुनाव में जीत दिलायेगा।

प्रज्वल रेवन्ना की गिरफ्तारी के लिए इंटरपोल से सम्पर्क से साधा कर्नाटक सरकार ने

कर्नाटक सरकार ने प्रज्वल रेवन्ना के खिलाफ ब्लू कॉर्नर नोटिस जारी करने के बाद एक और बड़ा एक्शन लिया

- **कर्नाटक के गृह मंत्री जी परमेश्वर ने कहा है कि, प्रदेश सरकार प्रज्वल रेवन्ना को वापस लाने की दिशा में हर संभव कदम उठायेगी।**
- **गौरतलब है कि, प्रज्वल रेवन्ना की अग्रिम जमानत याचिका बैंगलुरु की एक स्थानीय अदालत ने पहले ही खारिज कर दी है।**

बेंगलुरु, 5 मई (वार्ता) कर्नाटक के गृह मंत्री जी परमेश्वर ने रविवार को कहा कि, यौन उत्पीड़न के आरोपों का सामना कर रहें हासन लोकसभा सीट से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के उम्मीदवार प्रज्वल रैवन्ना को वापस लाने के लिए ब्लू कॉर्नर नोटिस जारी करने के साथ ही इंटरपोल से भी सहायता मांगी गई है।

डॉ. परमेश्वर ने यहां संवाददाताओं से कहा कि एक विशेष जांच दल (एस.आई.टी.) को रैवन्ना (33) पर लगाये गये यौन शोषण के आरोपों की जांच का काम सौंपा गया है और वह उनको भारत वापस लाने की दिशा में आवश्यक कदम सुनिश्चित करेगा।

उन्होंने कहा, "ब्लू कॉर्नर नोटिस पहले ही जारी किया जा चुका है। इंटरपोल रेवन्ना का पता लगाने के लिए सभी देशों को सूचना भेजेगा।"

उन्होंने मामले की जांच में एस.आई.टी. के प्रयासों की सराहना की और इस बात पर जोर दिया कि टीम ने प्राप्त शिकायतों के आधार पर कानूनी प्रोटोकॉल का सावधानीपूर्वक पालन किया है। उन्होंने यौन शोषण के आरोपों से संबंधित अपहरण के एक मामले में रेवन्ना के पिता एच.डी. रैवन्ना की हाल ही में हुई गिरफ्तारी की ओर इशारा किया। जनता दल (सेक्युलर) (जे.डी.एस.) विधायक रैवन्ना पर छेड़छाड़ और अपहरण का आरोप है। एक स्थानीय अदालत द्वारा उनकी अग्रिम जमानत याचिका खारिज होने के बाद शनिवार को एस.आई.टी. ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

यौन शोषण मामला, जिसमें कथित तौर पर जे.डी.एस. संरक्षक एवं पूर्व प्रधानमंत्री देवेगौड़ा के पोते प्रज्वल रैवन्ना को चित्रित करने वाले स्पष्ट वीडियो क्लिप शामिल हैं, ने हासन में विवाद को जन्म दिया है।

इसके बाद राज्य सरकार ने सांसद पर लगे आरोपों की गहन जांच के लिए एस.आई.टी. का गठन किया।

अंतरराष्ट्रीय पुलिस सहयोग निकाय द्वारा जारी ब्लू कॉर्नर नोटिस का उद्देश्य किसी व्यक्ति की पहचान, स्थान या अपराध से संबंधित गतिविधियों के संबंध में सदस्य देशों से अतिरिक्त जानकारी एकत्र करना होता है।

'2014 से पहले और बाद का अंतर ही भाजपा को तीसरी बार विजय दिलाएगा'

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पूर्वी दिल्ली लोकसभा क्षेत्र के शाहदरा में भाजपा कार्यकर्ताओं की समीक्षा बैठक में कहा कि, आम जनता ने नये भारत का अंतर खुद देखा और महसूस किया है

- **मुख्यमंत्री भजनलाल ने दावा किया कि, दिल्ली में हम सातों सीटें जीतेंगे और बड़े मार्जिन से जीतेंगे।**
- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भाजपा कार्यकर्ताओं की तारीफ की और कहा कि, हमारे कार्यकर्ता बहुत ही सजग हैं, उनको जो भी दायित्व मिलता है वे उसे पुरा करते हैं।**

नई दिल्ली/जयपुर 5 मई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पूर्वी दिल्ली लोकसभा क्षेत्र में शाहदरा स्थित भाजपा के जिला कार्यालय में कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि, 2014 के पश्चात गरीब कल्याण एवं विकास की योजनाएँ, सीमाओं की सुरक्षा, दुनिया में भारत का बढ़ता गौरव, आतंकवाद और नक्सलवाद से मुक्ति होते आम जनता ने देखा है।

वर्ष 2014 से पहले क्या हुआ करता था ये भी जनता ने देखा है। जनता में ये विश्वास है कि, अगर देश को कोई आगे बढ़ा सकता है तो वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं। इसलिए मैं कह सकता हूं, हमारा कार्यकर्ता भी पूर्ण रूप से विश्वास के साथ जनता के बीच जाकर बात करता है। दिल्ली में हम सातों सीटें जीतेंगे और बड़े मार्जिन से जीतेंगे।

मुख्यमंत्री ने समीक्षा बैठक के दौरान कहा कि, भाजपा के कार्यकर्ता को जो भी दायित्व देते हैं, वह उसे पूरा करता है। कार्यकर्ता पूरे मन से लगे हुए हैं। उन्होंने कहा कि, कार्यकर्ता बूथ स्तर तक पूरी मेहनत से लगा हुआ है, यह देखकर मैं कह सकता हूं कि, "मोदी जी का विजन और कार्यकर्ताओं की मेहनत" से हम 400 पार करेंगे।

शर्मा ने कहा कि, राजस्थानी प्रवासी हमेशा राष्ट्रवाद, संस्कृति एवं विचार से जुड़ा हुआ है और अपनी माटी को वे भूले नहीं हैं। दिल्ली में ही नहीं पूरे देश में प्रवासी राजस्थानियों की गूंज है। राष्ट्रवाद की विचारधारा से जुड़कर राजस्थानी प्रवासी हमेशा प्रदेश के गौरव को बढ़ाने का काम करते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि, भाजपा संस्कारित पार्टी है, बाकी कांग्रेस और विपक्षी दल जातिगत एवं पारिवारिक पार्टियां हैं, उनका स्वयं का एजेंडा है, उनके एजेंडे व्यक्तिगत स्तर पर होते हैं। उन्होंने कहा कि, विपक्षियों की कोई उपलब्धि नहीं है। मैं कांग्रेस से पूछना चाहता हूं, पुराने घोषणा पत्र को देखिए कभी कोई वादा पुरा किया क्या? केवल चुनाव के समय विपक्षी एवं कांग्रेसी लूट की बात करते हैं। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष संजय गोयल सहित भाजपा कार्यकर्ता एवं वरिष्ठ पार्टी पदाधिकारी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने रविवार को नई दिल्ली के दो लोकसभा क्षेत्रों से भाजपा प्रत्याशियों के लिए जनसभाओं को एंव अन्य कार्यक्रमों को संबोधित किया और आगामी लोकसभा चुनाव के दिन भाजपा के पक्ष में अधिक से अधिक मतदान करने की अपील की।

शर्मा ने कहा भाजपा गरीब, मज़दूर और किसानों की पार्टी है, सबको साथ लेकर चलने वाली पार्टी है। उन्होंने कहा कि, केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार ने शानदार काम किया है और हमारी सरकार ने गरीब, कमजोर और बेघर परिवारों को मकान देने का काम किया है, बिजली और पानी की व्यवस्था भी कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि, चुनावी मौसम में सपने दिखाने वाले झूठे वादे करने वाले आयेंगे, इनकी लूट और झूठ की दुकान है। इनका जवाब वोट से देना चाहिए। मुख्यमंत्री ने जनसभा में भारी जन-सैलाव को संबोधित करते हुए कहा कि, भारत को दुनिया में कोई विकसित कर सकता है तो वो नरेंद्र मोदी है।

करौली-धौलपुर...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जीते हैं। पर इस बार के चुनाव में कांग्रेस ने कड़ी चुनौती दी है लेकिन करौली - धौलपुर सीट भाजपा के पाले में जाने के संकेत मिल रहे हैं, अगर फिर भी भाजपा को शिकस्त मिलती है उसके लिए भाजपा के बड़े नेता व संगठन के पदाधिकारी जिम्मेदार माने जाएंगे। क्षेत्र के कार्यकर्ता तो यहां तक कह रहे है कि ऊपर से चुनाव प्रचार के लिए भारी बजट भी आया लेकिन होटल में ठहरने वाले पार्टी के बड़े नेताओं में आपस में बंटवारा करने की होड सी मची हुई थी, जिसके चलते नेताओ का चुनाव प्रचार की ओर रूझान कम देखा गया।

तीसरे चरण का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अपने पूरे जोश के साथ चुनावी प्रचार किया। चुनाव आयोग तीसरे चरण की वोटिंग को लेकर तैयारियों में जुटा हुआ है। चुनाव आयोग मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए मतदाता जागरूकता अभियान के कई कार्यक्रम कर रहा है।

तीसरे चरण में 12 राज्यों के 94 लोकसभा सीटों के लिए वोट पड़ेंगे, इनमें बिहार की पांच, मध्य प्रदेश की नौ, असम की चार, छत्तीसगढ़ की सात, कर्नाटक की 14, गोवा की दो, गुजरात की 25, महाराष्ट्र की 11, उत्तर प्रदेश की 10, बंगाल की चार, दमन और दीव की दो सीट शामिल हैं।

'पुंछ में सुरक्षाबलों पर आतंकी हमला भाजपा की चुनावी स्टंटबाजी'

पंजाब के पूर्व मु.मंत्री एवं कांग्रेस नेता चरणजीत सिंह चन्नी ने पुंछ के आतंकी हमले पर कई सवाल उठाये

- **पूर्व मु.मंत्री चन्नी ने कहा कि, यह सब भाजपा को जिताने का स्टंट होता है और इसमें कोई सच्चाई नहीं होती। उन्होंने आरोप लगाया कि, लोगों को मरवाना और उनकी लाशों पर खेलना तो भाजपा को आता है।**
- **गौरतलब है कि, पुंछ जिले में शनिवार शाम हुए हमले में वायुसेना के 5 कर्मी घायल हो गए और उनमें से एक ने बाद में एक सैन्य अस्पताल में दम तोड़ दिया।**

जालंधर, 5 मई। पंजाब के जालंधर सीट से कांग्रेस के लोकसभा प्रत्याशी व पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने पुंछ आतंकी हमले पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने वायु सेना के काफिले पर शनिवार शाम को हुए अटैक को स्टंटबाजी करार दिया। चन्नी ने कहा, ये स्टंटबाजी हो रही है। हमले नहीं हो रहे। पिछली बार भी चुनाव आया तो ऐसे स्टंट खेले गए और बीजेपी को जिताने का काम किया गया। उन्होंने कहा कि, पहले से तैयारी करके हमले करवाए जाते हैं। यह भाजपा को जिताने का स्टंट होता है और इसमें कोई सच्चाई नहीं होती। पूर्व मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि, लोगों को मरवाना और उनकी लाशों पर खेलना तो भाजपा को आता है।

चरणजीत सिंह चन्नी ने इस दौरान किसानों का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने कहा, भाजपा किसानों को खत्म करना चाहती है। ऐसा करके वह पंजाब को दबाना चाहती है। पंजाब की अर्थव्यवस्था को तहस-नहस कहने का प्लान है। उन्हें पता है कि, अगर हम किसान को खत्म कर देंगे, खेती को खत्म कर देंगे तो पंजाब रुक जाएगा। चन्नी ने शनिवार को कहा था कि सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड में सुरक्षा लीक करने वाले के लिए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान और उनके सहयोगियों को नामजद किया जाना चाहिए। साथ ही उनकी ओर से गैंगस्टरों को किए गए भुगतान की जांच की जानी चाहिए। चन्नी ने कहा कि उन्होंने पहले ही कहा था कि, यह राजनीतिक हत्या है और इसे एक सोची-समझी साजिश के तहत अंजाम दिया गया है।

बता दें कि, जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में वायुसेना के काफिले पर हमले में शामिल आतंकवादियों का पता लगाने के लिए तलाशी अभियान रविवार को दूसरे दिन भी जारी रहा। इस मामले में कई लोगों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया है। जम्मू के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक आनंद जैन और सेना व खुफिया एजेंसियों के सीनियर अधिकारियों ने सुरनकोट क्षेत्र में हमला स्थल का दौरा किया। उन्होंने बताया कि, सेना ने हेलीकॉप्टर के जरिए हवाई निगरानी भी की।

जे.पी. नड्डा की रैली में जा रहे 15 लोग हादसे का शिकार

- **हादसे में करीब 15 लोगों को चोटें आई हैं। सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र धौरपुर में भर्ती कराया गया है।**

सरगुजा, 5 मई (वार्ता)। जिले के धौरपुर क्षेत्र से रविवार को पहाड़ी कोरवा ग्रामीणों को भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा की सूरजपुर आमसभा में ले जा रही स्कूल बस धौरपुर थाना क्षेत्र में पलट गई हादसे में बस में सवार 15 लोग घायल हो गए घायलों में 4 लोगों का धौरपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज चल रहा है। जबकि बाकियों को इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई।

सूरजपुर में सरगुजा लोकसभा के भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा की आमसभा आयोजित थी। आमसभा में ग्रामीणों को ले जाने के लिए धौरपुर के ग्राम सपड़ा के सरईपानी से स्कूल बस में करीब 30 पहाड़ी कोरवा सवार होकर सुबह सूरजपुर जाने के लिए रवाना हुए।

ग्रामीणों से भरी बस ग्राम भेड़िया के पास लहराते हुए अनियंत्रित होकर पलट गई जिससे ग्रामीणों में अफरा-तफरी मच गई। अधिकांश यात्री खुद बाहर आ गए। कुछ को स्थानीय लोगों की मदद से बाहर निकाला गया। हादसे में करीब 15 लोगों को चोटें आई हैं। सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र धौरपुर में भर्ती कराया गया है। बस के चालक ने बताया कि, खराब रास्ते में बस अनियंत्रित हो गई। ओवरलोड होने के चलते संभल नहीं पाई और बस पलट गई।

इस मामले में धौरपुर पुलिस ने बस के चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

छत्तीसगढ़: कांग्रेस प्रवक्ता राधिका खेड़ा ने पार्टी छोड़ी

राधिका खेड़ा ने आरोप लगाया कि, राम मंदिर का दर्शन करने के बाद से ही पार्टी के अंदर उन्हें रोज प्रताड़ित किया जा रहा था

- **राधिका खेड़ा ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को सौंपे अपने इस्तीफे में कहा है कि, वे अयोध्या जाने से खुद को नहीं रोक सकी, उसके बाद लगातार पार्टी में उनका विरोध होने लगा और जब उन्होंने इंसाफ मांगा तो उन्हें वो भी देने से इनकार कर दिया गया।**
- **राधिका खेड़ा ने कहा है कि, उन्होंने बार-बार शीर्ष नेताओं को उनके अपमान के बारे में बताया, लेकिन इसके बावजूद उन्हें न्याय नहीं मिला। इसी बात से आहत होकर उन्होंने कांग्रेस छोड़ने का फैसला लिया।**

रायपुर, 5 मई। लोकसभा चुनाव के बीच अब छत्तीसगढ़ में कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। यहां से कांग्रेस प्रवक्ता राधिका खेड़ा ने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। कुछ दिनों पहले ही उन्होंने पार्टी पर महिलाओं के अपमान का आरोप लगाया था। उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को सौंपे अपने इस्तीफे में कहा है कि वह अयोध्या जाने से खुद को रोक नहीं तो पार्टी में उनका विरोध होने लगा और जब उन्होंने इंसाफ मांगा तो उन्हें वो भी देने से इनकार कर दिया गया।

उन्होंने कहा कि, उन्होंने बार-बार शीर्ष नेताओं को उनके अपमान के बारे में बताया लेकिन इसके बावजूद उन्हें न्याय नहीं मिला। इसी बात से आहत होकर उन्होंने कांग्रेस छोड़ने का फैसला लिया। उन्होंने अपने इस्तीफे में लिखा, मैंने जिस पार्टी को अपने 22 साल से ज्यादा दिए, जहां एनएसयूआई से लेकर ए.आई.सी.सी. के मीडिया विभाग में पूरी ईमानदारी से काम किया, आज लहां ऐसे ही तीव्र विरोध का सामना मुझे करना पड़ा है, क्योंकि मैं अयोध्या में राम लला के दर्शन करने से खुद को रोक नहीं पाई।

बता दें, हाल ही में राधिका खेड़ा ने सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट कर पार्टी में महिलाओं के अपमान का आरोप लगाया था। उन्होंने कहा था, कौशल्या माता के मायके में बेटी सुरक्षित नहीं है। पुरुषवादी मानसिकता से ग्रसित लोग आज भी बेटियों को पैरों तले कुचलना चाह रहे हैं। खुलासा करूंगी !!

टिकट लौटाने...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वापस किया कि पार्टी उन्हें चुनाव लड़ने के लिए आर्थिक मदद उपलब्ध नहीं कर रही है। उन्होंने यह भी कहा था कि, यदि पार्टी उन्हें आर्थिक सहायता देती है तो वह चुनाव लड़ेंगे लेकिन कांग्रेस ने मदद करने की बजाय पुरी सीट पर नया उम्मीदवार घोषित कर दिया है।

प्रज्वल रेवन्ना की शिकायत लेकर पहुँची तीन और पीड़ित महिलायें

- **कर्नाटक सरकार द्वारा गठित स्पेशल इन्वैस्टिगेशन टीम प्रज्वल रेवन्ना को गिरफ्तार करने विदेश में उनकी लॉकेशन पर पहुंची।**

बैंगलुरु, 5 मई। कर्नाटक सेक्स स्कैंडल केस में बड़ा अपडेट सामने आया है। मामले की जांच कर रही एस.आई.टी. ने जे.डी.एस. के फरार सांसद और हासन से उम्मीदवार प्रज्वल रेवन्ना की विदेश में तलाश तेज कर दी है। इस बीच अश्लील वीडियो कांड की तीन और पीड़ितों ने एस.आई.टी. से संपर्क किया है। सूत्रों ने कहा कि, एच.डी. रेवन्ना की गिरफ्तारी के बाद पीड़ितों ने एस.आई.टी. से संपर्क किया है। अधिकारी जल्द ही उनके बयान दर्ज कर सकते हैं। इस संबंध में अभी और जानकारी सामने आना बाकी है। वहीं ऐसी अफवाहें हैं कि अपने पिता जे.डी.एस. विधायक एच.डी. रेवन्ना की गिरफ्तारी के बाद प्रज्वल रेवन्ना जल्द ही अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण कर सकते हैं।

एस.आई.टी. की एक टीम प्रज्वल रेवन्ना की गतिविधियों के बारे में जुटाई जानकारी के आधार पर पहले ही एक विदेशी स्थान पर पहुंच चुकी है। टीम स्थानीय एजेंसियों और सी.बी.आई. के समन्वय से उसे गिरफ्तार करेगी। ट्रैक किया गया स्थान हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट था। प्रज्वल रेवन्ना अपना स्थान बदल रहा है। सूत्रों के अनुसार, प्रज्वल रेवन्ना रविवार को मंगलुरु अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर पहुंच सकते हैं। हालांकि एसआईटी का कहना है कि, उनके पास यह भी जानकारी है कि, प्रज्वल रेवन्ना लोस. चुनाव के बाद ही वापस आएंगे।

मेघालय: युवती से रेप का प्रयास कर रहे दो लोगों को भीड़ ने पीट-पीट कर मार डाला

पुलिस ने बताया कि घर में घुसकर आरोपियों ने युवती पर चाकू से हमला किया और उसके साथ रेप करने की कोशिश की

- **पीड़िता ने बताया कि, उसकी चीख सुनकर पड़ोसी वहां आ गए और उन्होंने दोनों व्यक्तियों को पकड़ लिया। इसके बाद भीड़ उन्हें पास के सामुदायिक हॉल में ले गई और वहां दोनों के साथ मारपीट की।**

मेघालय, 5 मई। मेघालय के पूर्वी पश्चिमी खासी हिल्स जिले में 2 लोगों की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। रिपोर्ट के मुताबिक, इन दोनों पर 18 वर्षीय एक किशोरी से बलात्कार का प्रयास करने के आरोप था। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि, यह घटना शुक्रवार दोपहर को जिला मुख्यालय मैरांग के नोंगथ्लिव गांव में हुई। पुलिस के मुताबिक, युवती ने आरोप लगाया कि, जब वह घर में मौजूद थी तो दोनों ने उस पर चाकू से हमला किया और उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश की। उसकी चीख सुनकर पड़ोसी वहां आ गए और उन्होंने दोनों व्यक्तियों को पकड़ लिया।

इसके बाद भीड़ उन्हें पास के सामुदायिक हॉल में ले गई और वहां दोनों के साथ मारपीट की। पुलिस ने उन्हें बचाने की कोशिश की लेकिन बचा नहीं सके। एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि हॉल से भीड़ के चले जाने के बाद ही दोनों को बाहर लाया गया। उन्होंने बताया कि दोनों में से एक की मौत तिरोट सिंग मेमोरियल सिविल अस्पताल में हुई, जबकि दूसरे ने शिलांग सिविल अस्पताल में दम तोड़ दिया। अधिकारी ने बताया कि मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच की जा रही है।

पुलिस ने बताया कि, दोनों मृतक राज्य के अन्य हिस्सों के रहने वाले थे। वे नोंगथ्लिव में मजदूर के रूप में काम करते थे। वहीं, छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के आरंग थाना के कलाई गांव में नाबालिग के रेप का केस सामने आया है। बताया जा रहा है कि, आरोपी 6 महीने से शादी का झांसा देकर पीड़िता का शोषण कर रहा था। इस मामले में युवक को शनिवार को गिरफ्तार कर लिया गया। पीड़िता ने शुक्रवार को थाना आकर लिखित आवेदन देकर रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उसने बताया कि, आरोपी सुरेंद्र लोधी से इंस्टाग्राम में परिचय हुआ था और फिर मोबाइल से बातचीत होने लगा।

किसानों ने...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तरह से गड़बड़ हो गयी है। उन्होंने बताया कि, रेलवे ने जम्मू मेल, शालीमार, श्री माता वैष्णो देवी-कालका एक्सप्रेस और उधमपुर-दिल्ली सराय रोहिल्ला एसी एक्सप्रेस को सात मई तक रद्द करने का आदेश दिया गया है।

अधिकारी ने बताया कि वंदे भारत, झेलम, बेगमपुरा, हिमगिरी एक्सप्रेस, पूजा सुपरफास्ट, राजधानी, उत्तर संपर्क क्रांति, स्वराज एक्सप्रेस और मालवा सुपरफास्ट, सियालदह एक्सप्रेस सहित ट्रेनों को निर्धारित मार्ग के बजाय वैकल्पिक मार्गों के माध्यम से अपने गंतव्य की ओर भेजा जायेगा, जिससे उनके आगमन में देरी हो सकती है।

अखिलेश के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अराजक तत्वों ने चौराहे पर लगी महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर चढ़कर नारेबाजी और अभद्रता की। कुछ लोग सपा का झंडा लिए हुए थे। रात दो बजे एक और वीडियो वायरल हुआ जिसमें भाजपा समर्थक महाराणा प्रताप की प्रतिमा की पानी से धुलाई कर रहे हैं। तनाव को देखते हुए रात में ही मौके पर भारी पुलिस बल तैनात कर दिया गया।

अमेठी से टिकट नहीं मिलने पर रॉबर्ट वाड्रा ने भावुक पोस्ट लिखा

वाड्रा ने फेसबुक पोस्ट में लिखा कि, राजनीति की कोई भी शक्ति या पद हमारे परिवार के बीच नहीं आ सकती

- **रॉबर्ट वाड्रा ने पोस्ट में आगे लिखा कि, हम सभी अपने महान राष्ट्र की जनता और जनता की बेहतरी के लिए हमेशा काम करेंगे और करते रहेंगे। मैं सदैव अपनी जनसेवा के माध्यम से यथासंभव लोगों की मदद करूंगा।**
- **गौरतलब है कि, रॉबर्ट वाड्रा कई बार अमेठी से चुनाव लड़ने की इच्छा जता चुके हैं। अमेठी से उम्मीदवार के ऐलान के बाद यह रॉबर्ट वाड्रा की पहली प्रतिक्रिया सामने आई है।**

नई दिल्ली, 5 मई। चुनाव से पहले चर्चा थी कि इस बार रॉबर्ट वाड्रा कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ सकते हैं। कांग्रेस ने रायबरेली और अमेठी की सीट पर प्रत्याशियों का ऐलान करने में भी खासी देरी की। रायबरेली सीट पर राहुल गांधी तो अमेठी सीट पर कांग्रेस के करीबी किशोरी लाल शर्मा को टिकट दिया गया है। इसी बीच रॉबर्ट वाड्रा ने फेसबुक पर भावुक पोस्ट किया है। बता दें कि, अमेठी का फैसला राजनीतिक पंडितों के लिए भी चौकाने वाला था।

फेसबुक पर किए गए पोस्ट में रॉबर्ट वाड्रा ने लिखा, राजनीति की कोई भी शक्ति, पद हमारे परिवार के बीच नहीं आ सकती। हम सभी अपने महान राष्ट्र की जनता और जनता की बेहतरी के लिए हमेशा काम करेंगे, करेंगे और करते रहेंगे। आपके समर्थन और शुभकामनाओं के लिए सभी को धन्यवाद। मैं सदैव अपनी जनसेवा के माध्यम से यथासंभव लोगों की मदद करूंगा। बता दें कि, रॉबर्ट वाड्रा कई बार अमेठी से चुनाव लड़ने की इच्छा जता चुके हैं। अमेठी से प्रत्याशी के ऐलान के बाद यह रॉबर्ट वाड्रा की पहली प्रतिक्रिया है।

बता दें कि रॉबर्ट वाड्रा ने सक्रिय राजनीति में आने का इरादा जताया था। कयास थे कि, अगर अमेठी से उन्हें टिकट भी दिया जा सकता है। हालांकि कांग्रेस के फैसले ने सबको हैरान कर दिया। वाड्रा ने कहा था कि, वह जनता के बीच रहते हैं इसलिए राजनीति में आ सकते हैं। वहीं भाजपा ने भी अमेठी और रायबरेली का किटट फाइनल होने के बाद तंज कसते हुए कहा था कि, वाड्रा परिवार को किनारे कर दिया गया है।

गौरतलब है कि अमेठी की सीट पर प्रियंका गांधी को भी टिकट मिलने की चर्चा है कि लेकिन कांग्रेस ने उनको भी दरकिनार कर दिया है। अमेठी के कांग्रेस कार्यकर्ता प्रियंका गांधी को उम्मीदवार बनाने की लंबे समय से मांग कर रहे थे।

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय:-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908